GS

प्राचीन एवं मध्यकालीन

क्लास नोट्स

प्राचीन इतिहास

इतिहास :- वर्तमान के प्रकाश में अतीत का अध्ययन।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

प्राचीन इतिहास के निर्माण का स्रोत

- साहित्यिक स्रोत
  - धार्मिक साहित्य
    - ब्राह्मण साहित्य
      - वेद, पुराण
      - रामायण
    - बौद्ध
      - त्रिपिटिक
      - दीपवंश, महावंश
    - जैन
      - महावीर चरित
      - कल्पसूत्र
  - धर्म निरपेक्ष साहित्य
    - कौटिल्य का अर्थशास्त्र
    - विशाखादत्त का मुद्राराक्षस
    - कल्हण की राजतरंगिणी
- पुरातात्विक स्रोत
  - अभिलेख
    - प्रमाणिक होते हैं।
    - फेरबदल की गुंजाइश नहीं है।
  - सिक्के
  - मूर्तियाँ
  - मृदभाण्ड (बर्तन)
- विदेशी विवरण
  - मेगस्थनीज
  - फाह्यान
  - ह्वेनसांग
  - अलबरूनी

साहित्यिक स्रोत की सीमाएँ :-

→ तथ्यों को बढ़ा चढ़ाकर प्रस्तुत करने की संभावना होती है।

→ धार्मिक दृष्टि से लिखे गये गए ग्रंथ अपने धर्म के प्रचार पर बल देते हैं। अतः प्रमाणिकता संदिग्ध होती है।

→ कुछ तथ्य छूट सकते हैं।

निष्कर्ष :→ साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोत इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उपयोगी होते हैं, किंतु पुरातात्विक स्रोत की महत्ता ज्यादा है।
प्रमाणिकता

बाणभट्ट → हर्षवर्धन
ह्वेनसांग ↗ के दरबार में।

~~मेगस्थ~~
मेगस्थनीज
↓
मौर्य काल में आया।

प्राचीन इतिहास

प्रागैतिहासिक काल (Pre-History)

↓ इस काल में लिपि एवं लेखन प्रणाली नहीं थी।

↓ सीमित जानकारी मिलती है।

आद्य इतिहास (Proto-History)

↳ आद्य इतिहास वह इतिहास है जहाँ लिपि तो है किन्तु पढ़ी नहीं गयी---
→ **हड़प्पा काल**

↳ लिपि का विकास नहीं था किंतु आर्यों ने अपने जीवन का प्रदर्शन इस तरह से किया कि पश्चवर्ती काल के लोगों को उनके आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक विश्वासों का पता चला → **वैदिक काल**

↳ जब कृषि उत्पादन अर्थव्यवस्था का विकास हुआ
↓
स्थायी बस्तियाँ → **ताम्रपाषाण काल**

ऐतिहासिक काल

↓ 600 BC

लेखन/लिपि है और पढ़ी गयी।

↓ **महाजनपदकाल** ((बुद्ध काल))

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

प्रागैतिहासिक काल

पुरापाषाणकाल
(Paleo Lithic Age)
(आरंभ से 10,000 ई.पू.)

- पूर्व पुरा पाषाण काल
- मध्य पुरा पाषाण काल
- उच्च पुरा पाषाण काल
  - ⇒ आधुनिक मानव का विकास
  - ↳ चित्रकला का विकास

⇒ मानव शिकारी था
⇒ मानव पाषाण उपकरणों / हथियारों का निर्माण (बेडौल)
⇒ क्रोड उपकरणों की प्रधानता
(बड़े पत्थरों को तोड़कर उपकरण का निर्माण किया)

मध्यपाषाण काल
(Meso Lithic Age)
(10,000 से 6000 ई.पू.)

↳ मानव छोटे पशुओं का/पक्षियों का शिकार करने लगा एवं मछली पकड़ने लगा
↓
⇒ छोटे पाषाण उपकरण बनाने लगा
↓
⇒ प्रक्षेपास्त्र तकनीक का विकास
⇒ पशुपालन करने लगा (प्रथम साक्ष्य → बागोर (राज.) से मिलता है।)
↓
मानवीय आक्रमण/युद्ध का साक्ष्य (सरायनाहर राय (उ.प्र.) से मिलता है।

नवपाषाणकाल
(New Lithic Age)
(6000 से 3000 ई.पू.)

↳ कृषि का विकास (प्रथम साक्ष्य मेहरगढ़ बलूचिस्तान से मिलता है)
↳ स्थायी ग्राम बनने लगे
↳ मृद्भाण्ड निर्माण
↳ पहली बार मानव ने धातु का प्रयोग किया (तांबा)

मानव विकास क्रम: आस्ट्रेलोपिथेक्स → पिथिकेन्थ्रोपस → नियण्डर थाल → क्रोमेगनन → होमो सेपियन्स (आधुनिक मानव)

नियण्डर थाल ↓ अक्षर बद्ध भाषा का विकास

नवपाषाण काल

- धातु पूर्व युग
- धातु युग
  - तांबा
    - ताम्रपाषाण काल
      (तांबे का बहुतायात प्रयोग)

तांबा + टिन
↓
कांसा

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

ताम्रपाषाण काल :→

ताम्रपाषाण काल में तांबे और पत्थर के उपकरण मिलते हैं। स्थान विशेष के नाम पर इस कालखंड की प्रमुख संस्कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

1. अहार संस्कृति / बनास संस्कृति :-
   ↳ प्रमुख स्थल → अहार, गिलुंद, बालाथल

→ अहार को ताम्रवती कहा जाता था क्योंकि यहाँ बड़ी मात्रा में तांबा मिलता था।

→ गिलुंद में पकी हुई ईंटों के साक्ष्य मिलते हैं।

2. मालवा संस्कृति
   ↳ प्रमुख स्थल → एरण, कायथा, नावदाटोली

→ नावदाटोली से अनाज के साक्ष्य मिले हैं।

→ मालवा मृद्भांड अपने उत्कृष्टता के लिए जाने जाते हैं।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

3. जोर्वे संस्कृति :-

↳ प्रमुख स्थल → जोर्वे, नेवासा, इनामगांव, दैमाबाद

→ दैमाबाद से गेंडा, हाथी, भैंस एवं रथ चलाते हुए मनुष्य की आकृति मिलती है।

→ जोर्वे की मुख्य विशेषता यह थी कि यहाँ वयस्क व्यक्ति के मृत्यु के उपरांत उसका पाँव काटकर दफनाया जाता था ताकि वह भूत न बन सके। यह उनके अंधविश्वास का प्रमाण है।

→ सभी ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियाँ ग्रामीण संस्कृति थी और यहाँ मातृ देवी की उपासना होती थी और बस्तियों में व्यापारिक गतिविधियाँ चलती थी तथा लिपि एवं लेखन प्रणाली का विकास नहीं था।

हड़प्पा सभ्यता

इस नाम

हड़प्पा नामक स्थान से पहली बार साक्ष्य मिले अत: इसे हड़प्पा सभ्यता कहना सर्वाधिक उपयुक्त है।

सर्वप्रमुख विशेषता

- कांस्य युगीन सभ्यता थी।
- नगरीकृत सभ्यता
- नगरों का बटवारा
  - पश्चिमी भाग
    - दुर्ग / किलाबंद
      - प्राचीर से बंद था।
    - विशिष्ट लोगों का निवास
  - पूर्वी भाग
    - निचला शहर
    - सामान्य जन के लिए

Note एकमात्र धौलावीरा नगर तीन भागों में बटा हुआ था।
(दक्षिणी विन्यास भाग)

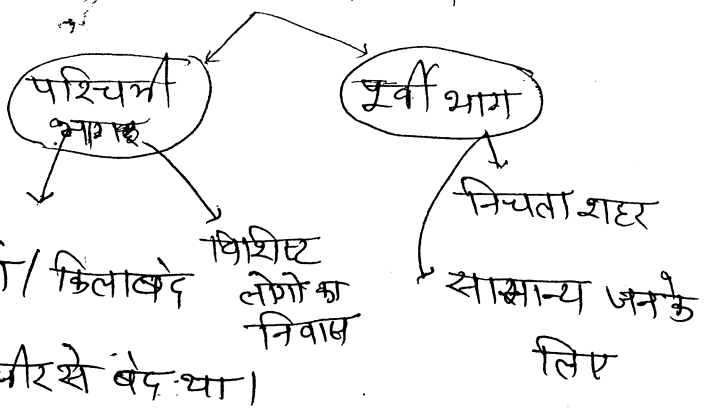

कांसा = तांबा + टिन

Que: हड़प्पा सभ्यता में सर्वाधिक प्रयुक्त धातु थी?

(a) कांसा (b) ✓ तांबा (c) टिन (d) लोहा

Que:- हड़प्पा सभ्यता में सर्वाधिक संख्या में थे।

(a) गांव (b) नगर (c) कस्बा (d) महानगर

हड़प्पा सभ्यता

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

विशेषताएँ :-

नगर निर्माण योजना :-

→ हड़प्पा सभ्यता में नगरों का विभाजन पूर्वी एवं पश्चिमी भाग में होता था। पश्चिमी भाग में शासक वर्ग रहते थे जबकि पूर्वी भाग में सामान्य जन। किन्तु धौलावीरा नगर में यह विभाजन तीन भागों में था।

→ सड़कें प्रायः कच्ची बनाई जाती थी, किन्तु पक्की सड़क का साक्ष्य मोहनजोदड़ो से मिलता है।

→ जल निकास की उत्तम व्यवस्था थी और नालियाँ ढकी होती थी। साथ ही ढ़ाल दार स्थान पर / ढलान पर नालियों को सीढ़ीदार बनाया जाता था जिससे पानी की गति को कम किया जा सके।

→ हड़प्पा निवासी जल संरक्षण पर विशेष बल देते थे। विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ वर्षा की कमी और भूमिगत जलस्रोतों की कमी थी। जल संरक्षण के लिए विभिन्न जलाशयों का निर्माण किया गया। जिससे कि वर्षा के समय इन्हें भरकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संरक्षित किया जा सके। ये जलाशय एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। जल संरक्षण और जल निकास की यह योजना आज भी प्रासंगिक है।

→ मकान पक्की ईंटों से बनाये जाते थे किन्तु कालीबंगा से कच्ची ईंटों के निर्माण के साक्ष्य मिले हैं। मकान में ईंट को चूने-गारे से जोड़ा जाता था। हड़प्पा निवासी भवन निर्माण में उपयोगिता पर विशेष बल देते थे, अलंकरण पर नहीं। किन्तु कालीबंगा से अलंकृत ईंटों के साक्ष्य भी मिले हैं।

→ नगरों में पेय जल स्रोतों को नालियों से सुरक्षा जाता था जो निवासियों के स्वच्छता पर बल देने का परिचायक है। इसी तरह मकानों का दरवाजा मुख्य सड़क पर नहीं खुलता था, ताकि धूल, गंदगी एवं

दुर्घटना से बचा जा सके। किन्तु लोथल (गुजरात) में दरवाजे मुख्य सड़क पर खुलते थे।

भौगोलिक विस्तार

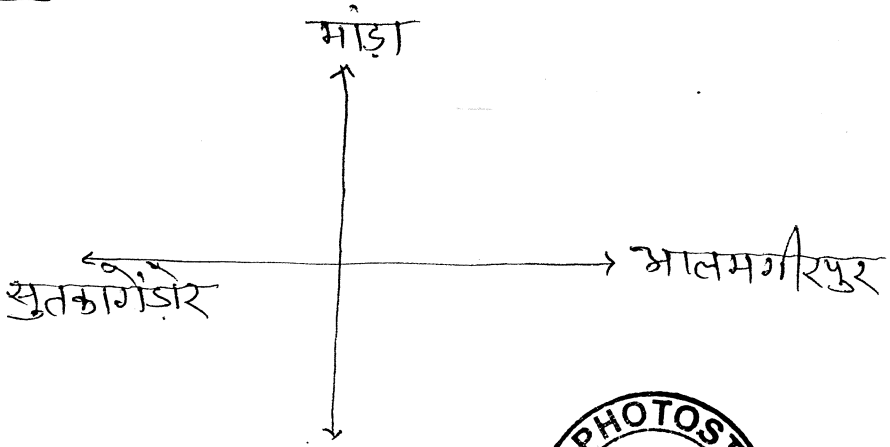

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268099159

अफगानिस्तान → शौर्तुघई

पंजाब → पश्चिमी → हड़प्पा
पूर्वी → रोपड़, बारा, संघोल

राजस्थान → कालीबंगा

सिंध → मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो, आमरी, कोटदीजी

हरियाणा → बणावाली, मित्ताथल

गुजरात → कच्छ → देसलपुर, सुरकोटड़ा, धौलावीरा
काठियावाड़ → लोथल, रंगपुर

उत्तरप्रदेश → आलमगीरपुर, हुलास

[वणिकवर्ग → व्यावसायिक वर्ग]

राजनीतिक संरचना :→ → केन्द्रीकृत राजनीतिक संरचना रही होगी।
→ वणिकवर्ग के हाथों में सत्ता रही होगी।

आर्थिक संरचना :–

1. कृषि
   - → निर्वाहमूलक
   - → अधिशेष
   - → फसलें
   - → सिंचाई
     - → वर्षाधीन
     - → कृत्रिम साधन → नहर, तालाब

2. पशुपालन
   - → कृषि क्षेत्र के लिए
   - → भोजन / खाद्य
   - → यातायात / परिवहन के साधन
   - → निर्माण / उद्योग के लिए → ऊनी वस्त्र
   - → मनोरंजन के लिए

3. शिल्प / उद्योग / गैर कृषि कर्म
   - → ईंट निर्माण उद्योग
   - → मृदभाण्ड निर्माण
   - → वस्त्र उद्योग
   - → धातु उद्योग
   - → हाथीदांत सामग्री निर्माण
   - → आभूषण निर्माण

④. व्यापार - वाणिज्य

- आयात - निर्यात
  - देशीय
  - अन्तर्देशीय
- परिवहन के साधन
  - स्थल
    - बैलगाड़ी
    - इक्कागाड़ी
  - जल
    - नाव / जहाज
- माप - तौल की पद्धति
- विनिमय के साधन
  - वस्तु विनिमय
  - मुद्रा विनिमय

⑤. शहरीकरण

- उत्पादन के केन्द्र
- बंदरगाही
- राजधानी
- धार्मिक केन्द्र
- सैन्य छावनी

हड़प्पा सभ्यता में संगठित कृषि और अधिशेष उत्पादन मौजूद था। विभिन्न फसलें जैसे गेहूँ, जौ, सरसों, चना, कपास की खेती की जाती थी। चावल या

धान की खेती प्रचलित नहीं थी किन्तु रंगपुर एवं लोथल से चावल या धान की भूसी के साक्ष्य मिले हैं। नदी घाटी क्षेत्र से युक्त होने के कारण सिंचाई के साधन मौजूद थे। अत: उत्पादन अधिशेष की स्थिति थी। मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा से मिले अन्नागार इस अधिशेष कृषि को प्रमाणित करते हैं।

हड़प्पावासी विभिन्न पशुओं का पालन करते थे ऊँट, बैल, बकरी प्रमुख पशु थे। इन पशुओं का प्रयोग कृषि कार्यों के साथ-साथ भोजन एवं यातायात परिवहन एवं तथा वस्त्रों के निर्माण में किया जाता था। किन्तु हड़प्पा-वासी घोड़े के प्रयोग से युक्त नहीं थे (सुरकोटडा से घोड़े की हड्डियाँ मिली हैं।)।

इस कृषि अधिशेष ने गैर कृषि कर्म को प्रोत्साहित किया। इसी क्रम में शिल्प और उद्योगों का विकास हुआ। ईंट उद्योग, सूती वस्त्र उद्योग, हाथीदांत सामग्री निर्माण उद्योग विकसित अवस्था में थे। हड़प्पावासी ईंटों को आग में पकाते थे।

हड़प्पा सभ्यता में व्यापार-वाणिज्य विकसित अवस्था में था। अतः आयात और निर्यात देशीय एवं अंतर्देशीय स्तर पर मौजूद था। हड़प्पावासी सोना, चांदी, टिन एवं बहुमूल्य पत्थरों का आयात करते थे, तो हाथीदांत से निर्मित सामग्री, वस्त्र एवं लकड़ी के सामान का निर्यात करते थे।

बैलगाड़ी यातायात का मुख्य साधन था, तो समुद्री ~~यातायात~~ यातायात के लिए नाव एवं जहाजों का प्रयोग होता था। इस संदर्भ में लोथल एक प्रमुख बंदरगाह था। लोथल से गोदीबाड़ा ——— का साक्ष्य मिला है।

हड़प्पा सभ्यता में वस्तु-विनिमय प्रणाली प्रचलित थी। वस्तुतः जो मुद्रा मिली हैं उनका प्रयोग लेन-देन में नहीं बल्कि सामग्रियों के ऊपर छाप या पहचान अंकित करने के लिए होता था।

हड़प्पावासी माप-तौल में एक रूपता रखते थे। लोथल से हाथीदांत की स्केल प्राप्त हुई है तो साथ ही मोहनजोदड़ो से एक तराजू का साक्ष्य मिला है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

हड़प्पा सभ्यता के विकसित व्यापार का अभिलेखीय प्रमाण भी है। वस्तुत: मेसोपोटामिया के सम्राट सारगोन के अभिलेख से हड़प्पावासियों का व्यापारिक संबंध प्रमाणित होता है। जिसमें कहा गया कि दिलमन, माकन एवं मेलुहा के व्यापारी हमारे यहाँ जहाज लाते हैं और इस व्यापार में बहरीन बिचौलियों की भूमिका निभाता था।

(दिलमन → बहरीन; माकन → मकरान की खाड़ी; मेलुहा → हड़प्पा सभ्यता)

इस व्यापारिक विकास ने नगरों के उदय को प्रोत्साहित किया और ये नगर प्रशासनिक केन्द्र राजधानी के रूप में नजर आते हैं। जैसे हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो सभ्यता के दो प्रमुख प्रशासनिक केन्द्र थे। इसी तरह लोथल एक बंदरगाही नगर के रूप में दिखाई पड़ता है।

सामाजिक विशेषता :→

① वर्णव्यवस्था
- → चतु: वर्ण व्यवस्था → ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र → उत्तर भारत में
- → द्विवर्ण व्यवस्था → ब्राह्मण – गैर ब्राह्मण → दक्षिण भारत में
- → निर्धारण < रंग / कर्म, जन्म

(हड़प्पा सभ्यता में वर्णव्यवस्था के साक्ष्य नहीं मिलते। कोई भी साक्ष्य मिलता है।)

② दास प्रथा
- → घरेलु कार्यों में
- → आर्थिक गतिविधियों में
- → वर्गीय संरचना
  - → स्त्री
  - → पुरूष
- → दास होने का कारण
  - → दासीपुत्र
  - → युद्ध में बंदी
  - → खरीदा गया
  - → कर्ज न चुकाने के कारण

हड़प्पा सभ्यता में
वर्ग विभाजन मौजूद था
~~मोक्ष~~ - विद्वान, योद्धा, व्यापारी, श्रमिक
→ विभिन्न जनजाति थी।
→ वर्ण व्यवस्था नहीं थी।

③ महिलाओं की दशा :-

आधार
- → शिक्षा
- → विवाह
  - → बाल विवाह
  - → बहु विवाह
  - → विधवा पुनर्विवाह नहीं
  - → जीवन साथी चुनने का अधिकार नहीं

  } → कमजोर स्थिति
- → परम्पराएँ / प्रथाएँ
  - → सती प्रथा (गुप्त काल से प्रमाण)
  - → विधवा प्रथा
  - → देवदासी
  - → पर्दा प्रथा

  } → कमजोर स्थिति
- → महिलाओं का वर्ग
  - → उच्च वर्ग
  - → निम्न वर्ग

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

④ खान-पान / रहन-सहन / वेश-भूषा
- → श्रृंगार पर बल

⑤. मनोरंजन → अन्तः → पांसा खेलना, नृत्य-संगीत
बाह्य → मछली पकड़ना
पशुओं की लड़ाई
नौका विहार
बच्चों के लिए खिलौने
→ फसल कटाई → जन सामान्य से जुड़े
→ काव्य लेखन

⑥. अन्त्येष्टि → समाधिकरण → पूर्ण
आंशिक
→ अग्नि / दाह संस्कार

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

हड़प्पाई समाज

हड़प्पा समाज में वर्ण विभाजन नहीं था किन्तु वर्गीय विभाजन मौजूद था जैसे विद्वान, योद्धा, व्यापारी एवं श्रमिक। आवासों की संरचना और समाधि से मिली वस्तुएँ सामाजिक विषमता को दर्शाती है। मातृ देवी की मूर्तियों के अत्यधिक मिलने से समाज मातृसत्तात्मक स्वरूप से युक्त दिखाई पड़ता है। हड़प्पा सभ्यता में मिले नर कंकालों के माध्यम पर विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति प्रमाणित होती है।-

① भूमध्य सागरीय प्रजाति → सर्वाधिक संख्या में थे।
② मंगोलॉयड
③ प्रोटो ऑस्ट्रेलॉयड
④ अल्पाइन

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

→ समाज शांतिप्रिय था और आक्रामक हथियारों की प्राप्ति प्रायः नहीं हुई है।

→ हड़प्पाई समाज में साज-सज्जा पर विशेष बल दिया जाता था। स्त्री और पुरुष दोनों आभूषण धारण करते थे। हड़प्पा से एक प्रसाधन बॉक्स (vanity Box) मिला है तो चन्हुदड़ो से लिपस्टिक के प्रमाण मिले हैं। स्त्रियाँ शृंगार पर विशेष बल देती थी। हाथीदांत से बनी कंघी के साक्ष्य मिले हैं तो साथ ही ताँबे का दर्पण मिला है।

→ हड़प्पा निवासी सूती वस्त्रों का प्रयोग करते थे। वस्तुतः उन्हें कपास उत्पादन की जानकारी थी।

→ हड़प्पा सभ्यता में मनोरंजन के लिए लोग पासा खेलते थे। लोथल से एक पासा बोर्ड प्राप्त हुआ है। लोथल से ही

मिले युग्मित शवाधान से सतीप्रथा के साक्ष्य का संकेत मिलता है।

→ हड़प्पा सभ्यता में पूर्ण समाधिकरण सर्वाधिक प्रचलित था जबकि आंशिक समाधिकरण एवं दाहकर्म भी होता था। हड़प्पा से एक R-37 क्रब्रिस्तान मिला है।

अन्य

लिपि :→ हड़प्पा सभ्यता में मोहर मुद्रा, ताम्रपत्र, मृद्भांडों पर लिपि के साक्ष्य मिले हैं। लिपि चित्राक्षर थी जिनमें सर्वाधिक प्रचलित चिह्न 'U' आकार का मिला है। जबकि जीव के चिह्नों में मछली का चिह्न अंकित है। धौलावीरा से एक द्वार के शीर्ष पर अंकित बोर्ड पर लिपि के साक्ष्य मिले हैं।

मुद्रें :-

मुद्रें सेलखड़ी एवं तांबे की बनी होती थी और आयताकार एवं वर्गाकार होती थी। वर्गाकार मुद्रा सर्वाधिक प्रचलित थी। वर्गाकार मुद्रा पर लिपि के साथ-साथ पशु चित्र प्रमुख अंकित थे, जबकि आयताकार मुद्रा पर केवल लिपि का अंकन है। मोहन जोदड़ो से एक

पशुपति शिव की आकृति वाली मुहर मिली है। जिसमें शिव के दांयी ओर हाथी ओर बाघ तथा बांयी ओर भैंसा और गेंड़ा का चित्र है तो नीचे पांव के पास हिरन का अंकन मिलता है।

धातु कला :- ~~मोहनजोदड़ो~~ से एक कांस्य निर्मित नर्तकी की मूर्ति मिली है जो 'द्रवी मोम विधि' से बनायी गई है।

मृण्य मूर्तियाँ :-

हड़प्पा सभ्यता में उपलब्ध शिल्पों में सर्वाधिक संख्या में मृण्य मूर्तियाँ मिली है। इनका उपयोग खिलौने एवं धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता था। पशु आकृतियों में सर्वाधिक कूबड़ वाले सांड़ की आकृति मिलती है जिसे पवित्र माना जाता है तो वहीं मानव आकृतियों में स्त्रियों की संख्या सर्वाधिक मिलती है। मुहर पर अंकित पशु आकृतियों में सर्वाधिक संख्या एक शृंगी पशु की मिलती है।

मनके (Beads)

मनके (माला) बनाने का कारखाना चन्हुदड़ो में था। हड़प्पा वासी बहुमूल्य पत्थरों और चूने-पत्थर से मनकों का निर्माण करते थे।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

वैज्ञानिक ज्ञान :-

हड़प्पावासी गणित, धातु विज्ञान, मापतौल प्रणाली मौसम विज्ञान और गृह ~~श~~ शिल्प की जानकारी रखते थे। वस्तुत: उनके फसलों के बोने और काटने का समय निश्चित था जो मौसम विज्ञान की जानकारी को सूचित करता है तो इसी तरह कांस्य मूर्ति का निर्माण धातु विज्ञान को एवं माप-तौल प्रणाली और नगर में सड़कों का समकोण पर काटना/बने होना गणित के ~~ज्ञ~~ ज्ञान को सूचित करता है. तो साथ ही जल संरक्षण और जल निकास प्रणाली एवं लोथल में बंदरगाह ~~की~~ की मौजूदगी उनके वैज्ञानिक ज्ञान की पुष्टि करती है।

धार्मिक विश्वास :-

हड़प्पा सभ्यता में मूर्ति पूजा प्रचलित थी किन्तु मंदिर नहीं थे। मातृ देवी की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थी तो

साथ ही पशुपति शिव, नाग, जल एवं अग्नि पूजा भी प्रचलित थी। कालीबंगा से अग्निकुंड के मिले साक्ष्य अग्निपूजा को प्रमाणित करते हैं। इसी तरह चन्हुदड़ो से मिली एक मो मुहर से बलि प्रथा के साक्ष्य मिले हैं जो समाज में जादू-टोने और अंधविश्वास की उपस्थिति को सूचित करती है

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

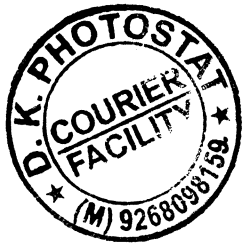

हड़प्पा सभ्यता का पतन :→
↳ नागरिक चरण का अंत

हड़प्पा सभ्यता के पतन का ~~तात्पर्य~~ तात्पर्य नागरिक चरण का पतन है। सभ्यता पुनः अपने ग्रामीण चरण में प्रवेश कर गई। सभ्यता के पतन में आर्य आक्रमण का सिद्धांत दिया जाता है जो प्रमाणित नहीं है, क्योंकि इसके पक्ष में पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध नहीं है पतन के संदर्भ में पारिस्थितिकीय असंतुलन सर्वाधिक प्रमुख कारण है। वस्तुतः प्राकृतिक संसाधनों के असीमित दोहन के कारण बाढ़, भूकम्प एवं नदियों के मार्ग में परिवर्तन आया, जिससे कृषि अधिशेष में कमी आयी, व्यापार बाधित हुआ और नगरों का पतन हुआ। तथा सभ्यता ग्रामीण

स्वरूप से लुप्त हो गई। जिसे परवर्ती हड़प्पा संस्कृति के नाम से जाना जाता है। इसके पतन की बात इसलिए भी प्रमाणिक नहीं है क्योंकि परवर्ती काल की अनेक धार्मिक एवं सामाजिक-आर्थिक विशेषताएँ हड़प्पा सभ्यता जैसी दिखाई देती हैं।

[ऋग्वैदिक को आर्य संस्कृति भी कहते हैं।]

वैदिक काल (1500 – 600 BC)

- ऋग्वैदिक काल (1500 BC. 1000 BC)
- उत्तर वैदिक काल (1000 BC – 600 BC)

ऋग्वैदिक भूगोल

⇒ सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों से परिचित थे–

1. वितस्ता → झेलम
2. अस्कनी → चिनाब
3. परुष्णी → रावी
4. शतुद्री → सतलज
5. विपास → व्यास

सदानीरा → गंडक

वितस्ताझेलम
अस्कनी चिनाब

⇒ हिमालय पर्वत से परिचित थे।
↓
'हिमवंत' चोटी से परिचित थे।
↓
'सोम' नामक पौधे की प्राप्ति करते थे।
↓
'सोमरस' बनाया जाता था।

मुजवंत पर्वमाला नाम से भी जाना जाता था।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

⇒ मरुस्थल (धन्व) से परिचित थे।

→ आर्यों → दक्षिणी सीमा अरावली पर्वतमाला थी।

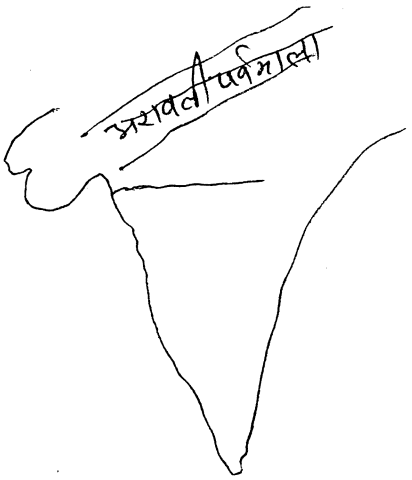

ऋग्वैदिक अर्थव्यवस्था

1. कृषि → आर्यों का द्वितीयक पेशा था।
   → केवल एक अनाज "यव" (जौ) की खेती से परिचित था

2. पशुपालन :→ प्राथमिक ~~पेशा~~ कार्य ~~कार्य~~ है।
   ↓
   अतः भूमि स्वामित्व की अवधारणा नहीं थी।

भूमिस्वामित्व की अवधारणा → उत्तरवैदिक काल से शुरू

2. शिल्प / उद्योग :→ कम विकसित
   → मृदभांड निर्माण
   → रथ निर्माण
   → अस्त्र-शस्त्र निर्माण ↓ तांबे / कांसे
   → लौह धातु की जानकारी नहीं थी।

④. व्यापार- वाणिज्य → सीमित
→ वस्तु विनिमय प्रणाली
→ 'पाणि' नामक अनार्य समूह व्यापारिक गतिविधियों से जुड़ा था।
↓
अर्थात 'पाणि' नामक समूह पशुओं की चोरी करता था।

स्वरूप :
→ कबीलाई अर्थव्यवस्था
→ ग्रामीण अर्थव्यवस्था
→ समतामूलक ✓
→ निर्वाह मूलक

उत्तर वैदिक काल

→ परिवर्तनकारी बिन्दु
→ आर्यों को सर्वप्रथम लौहे की जानकारी हुयी
↓
लौहे के प्रथम प्रयोग युद्धास्त्रों के निर्माण में
→ सर्वप्रथम "भूमि स्वामित्व" की अवधारणा सामने आई।

① कृषि → आर्यों का प्रधान पेशा हो गया
↓
यव (जौ) + गेहूँ + धान / चावल (व्रीहि)

② पशुपालन → निरंतरता रही।

③ शिल्प / उद्योग → और विकास हुआ → विविधता आयी।

↳ सोना धातु निर्माण, वस्त्र निर्माण

↳ बरथ निर्माण, मृदभांड निर्माण

↳ हाथीदांत सामग्री निर्माण।

④ व्यापार → व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि

↓

✓ किन्तु अभी भी वस्तु विनिमय प्रणाली जारी।

स्वरूप : → ग्रामीण अर्थव्यवस्था

↳ कबीलाई अर्थव्यवस्था में दरार।

ऋग्वैदिक कालीन राजनीतिक संरचना

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 98159

① राजा → ↳ कबीले का मुखिया

↳ राजा को 'जनस्य गोप' कहा जाता था।

↓

अर्थात् राजा की पहचान कबीले से होती थी।

↓

राजा की शक्ति सीमित थी।

↳ युद्ध का नेतृत्व करता था एवं पशुओं एवं कबीले की सुरक्षा करता था।

शासन प्रणाली :→ राजतंत्रात्मक

↓

वंशानुगत शासन था किन्तु राजा का निर्वाचन भी होता था।

नौकरशाही :→
- ✓रक्त संबंधों से जुड़ी थी।
- पुरोहित / सेनानी / विशपति
- स्पश (गुप्तचर)

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098158

राजनीतिक संस्थाएँ / जनप्रतिनिधि संस्थाएँ :-

(i) सभा →
- न्यायिक कार्यों से जुड़ी थी।
- कबीले के वरिष्ठ लोग सदस्य होते थे।
- ✓महिलाएँ भी इसमें शामिल होती थी।
- राज्य सभा के समान।

(ii) समिति →
- यहाँ महत्वपूर्ण वाद-विवाद होता था।
- ✓ वर्तमान लोकसभा के समान।
- राजा का निर्वाचन
- ✓ महिलाएँ भाग लेती थी।

→ अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया।

→ सभा एवं समिति, राजा पर अंकुश लगाती थी।

↓

अतः राजा निरंकुश नहीं था।

अतिथि को → गोहंता कहते थे क्योंकि सबसे प्रिय चीज अतिथि के लिए हाजिर करते थे।

(iii). विदथ : → आर्यों की प्राचीनतम संस्था

→ यह सैनिक एवं असैनिक मामलों से जुड़ी थी।

(iv) गण : एक और संस्था थी जिसका विवरण मौजूद नहीं।

⇒ राजनीतिक इकाई → परिवार → विश → (जन) → कबीला

(जन — सर्वोच्च इकाई)

→ राजस्व प्राप्ति → 'बलि' (कर) स्वेच्छा से देने वाला कर था।

→ दण्ड विधान → मृत्युदंड दिया जाता था।

उत्तरवैदिक काल

(1). राजा → भूमि क्षेत्र / राज्य का प्रमुख हो गया।

→ 'जन' एवं 'जन' मिलकर 'जनपद' बन गया।

↓

राजा की शक्ति बढ़ी

→ क्योंकि युद्धास्त्रों में लोहे का प्रयोग।

→ भूमि की अवधारणा के आने से भूमि 'स्वामित्व' की अवधारणा का विकास।

→ राजपद का महत्व बढ़ा।

↓

राजत्व का दैवीय सिद्धांत सामने आया (ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ)

↓

↓

राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है।

↓

अतः राजपद के साथ यज्ञ जुड गये।

↓

राजसूय यज्ञ, वाजपेय यज्ञ, अश्वमेध यज्ञ।

→ शासन प्रणाली :- राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली

→ जनप्रतिनिधि संस्थाएँ :

↳ विदथ एवं गण समाप्त

↳ सभा / समिति का महत्व कम हो गया।

राजस्व → 'बलि' बलपूर्वक वसूलने लगे।

↳ राजस्व की राशि 1/16 थी।

→ राजनीतिक इकाई

↳ ग्राम → विश → (जनपद)

↳ सर्वोच्च इकाई

ऋग्वैदिक कालीन समाज

1. वर्ण व्यवस्था → आधार
- रंग → आर्य, अनार्य
- कर्म → ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, ~~शूद्र~~, (शूद्र)

शूद्र → पहली बार इसका उल्लेख ऋग्वेद के पुरुष सुक्त के 10वें मंडल में मिलता है।

अतः एक ही परिवार में अलग-2 वर्ण के लोग रहते थे।
↓
अतः सामाजिक गतिशीलता बाधित नहीं थी।
↓
✓ अस्पृश्यता / छुआछूत की अवधारणा नहीं थी।

सामाजिक विषमता ×
अस्पृश्यता ×

2. दास प्रथा
- घरेलू कार्यों में प्रयोग किया जाता था।
- आर्य एवं अनार्य दोनों दास बनाये ~~जाते थे~~ जा सकते थे।

दशराज युद्ध
- भरत → आर्य → विजयी रहा।
- ~~आध~~ आर्य एवं अनार्य कबीला → पराजित हुआ। → अतः युद्ध बंदी हुए → अतः दास बनाये गये।

महिलाओं की दशा :→ अच्छी थी।

- बाल विवाह नहीं
- पर्दा प्रथा नहीं
- सती प्रथा नहीं
- बहु विवाह नहीं
- लैंगिक भेद नहीं
- महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था।

सार्वजनिक जीवन में भाग लेती थी।
(सभा - समिति)

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159.

उत्तर वैदिक काल

वर्णव्यवस्था → जटिल हो गई / जन्मगत
↓
सामाजिक गतिशीलता बाधित

→ द्विज की अवधारणा आयी
↓
(ब्राह्मण / क्षत्रिय / वैश्य)
↓
इन्हें विशेष अधिकार मिले

अस्पृश्यता ✗

→ ✓ समाज में 16 संस्कार प्रचलित हुए।

→ आश्रम व्यवस्था सामने आयी

↓

पहली बार चारों आश्रम की चर्चा जाबालोपनिषद् में मिलती है।

① ब्रह्मचर्य

② गृहस्थ → सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। (∵ इसमें 16 संस्कार शामिल हैं, जीवन के)

③ वानप्रस्थ

④ संन्यास

→ चार पुरुषार्थ की अवधारणा

↳ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

↳ समाज में भौतिकता एवं आध्यात्मिकता के बीच ~~संतुलित~~ संतुलन स्थापित करती है।

→ ऋण की अवधारणा

- देव ऋण → देवताओं के प्रति धन्यवाद देना
- ऋषि ऋण → गुरुओं के प्रति
- पितृ ऋण → सृष्टि संचालन के लिए

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

⇒ ✓ गोत्र बहिर्गमन विवाह की अवधारणा
↓
सामाजिक राजनीतिक अव विस्तार की अवधारणा से प्रेरित था।

ऋग्वैदिक धार्मिक विशेषता :→

उत्तरवैदिक काल

① उपासना का उद्देश्य → भौतिक सुखों की प्राप्ति
→ युद्ध में विजय/पशुओं की प्राप्ति
→ पुत्र की प्राप्ति (यह नस्ल भेद नहीं है क्योंकि पुत्रि पुत्री की प्राप्ति होने पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता था।)

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159.

② उपासना की पद्धति : → प्रार्थना → सर्व प्रमुख
→ यज्ञ यज्ञ → कर्मकांड रहित

③ देवकुल → प्रकृति पूजक थे।
→ इन्द्र सर्वप्रमुख देवता → वर्षा एवं युद्ध का देवता

→ अग्नि → ईश्वर एवं मानव के बीच मध्यस्थ का कार्य

→ वरुण → ऋत (नैतिकता) के देवता
→ अतः इन्हें 'ऋतस्यगोप' कहा गया।

~~उत्तर वैदिक काल~~

→ देवियों की चर्चा :
- → अदिती ।
- → अरण्यनी (जंगल की देवी)

उत्तरवैदिक काल

① उपासना का उद्देश्य → भौतिक सुखों की प्राप्ति

↓

महिला के प्रति भेदभाव शुरू।

↓

पुत्री का जन्म ~~[illegible]~~ दुःख का कारण बना।

② उपासना की पद्धति
- → यज्ञ → प्राथमिक
- → प्रार्थना → कर्मकांड से युक्त

③ देवकुल :- देवताओं का पदानुक्रम स्थापित हुआ।

↓

ब्रह्मा

↓

विष्णु

↓

महेश

पूषण

→ पूषण :- शूद्रों के देवता

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

महाजनपद काल (ऐतिहासिक काल)

(छठी सदी ई.पू. का काल / बुद्ध काल, द्वितीय नगरीकरण का काल)

जन →	जनपद →	महाजनपद
↓	↓	↓
उत्तर वैदिक काल	उत्तर वैदिक काल	600 BC.
↓	↓	↓
पशुपालन मुख्य पेशा	कृषि मुख्य पेशा	कृषि अधिशेष
↓	↓	↓
लोहे का ज्ञान नहीं	लोहे का प्रयोग शुरू	लोहे की क्रांतिकारी भूमिका
↓	↓	↓
समतामूलक समाज	विषमता प्रारंभ हुई	नगरीकृत समाज
↓		↓
धार्मिक जटिलता नहीं	धार्मिक कर्मकांड	विषमता अत्यधिक
		↓
		धार्मिक कर्मकांड के विरुद्ध नवीन धर्मों का उदय → बौद्ध/जैन

महाजनपदकाल पहली बार ① भूमि की माप ② मुद्रा विनिमय प्रणाली

(1)

⇒ आर्थिक संरचना / विशेषताएँ :→

↓

लोहे का कृषि के क्षेत्र में अत्यधिक प्रयोग

↓

कृषि क्षेत्र का प्रसार हुआ (वनों को लौह उपकरण से काटना आसान हुआ)

↓

भूमि की जुताई लोहे के हल से करने पर गहरी जुताई संभव हुई। अतः भूमि की उर्वरता बढ़ी।

↓

सम्मिलित परिणाम ⇒ उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि

↓

व्यापक अधिशेष

↓

अतः गैर कृषि कर्म को बढ़ावा मिल

(उद्योग / शिल्प का विकास)

↓

श्रम का विभाजन एवं विशेषीकरण हुआ।

↓

व्यापार – वाणिज्य का अत्यधिक विकास

↓

यातायात एवं परिवहन के साधनों का विकास

↓

मुद्रा अर्थव्यवस्था का प्रारम्भ

↓

द्वितीय नगरीकरण

↓

6 महानगर अस्तित्व में आये

↓

शिल्प संगठन

↓

(श्रेणियों का विकास)

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

Que. लौह की भूमिका से कौन जुड़ा नहीं है।

① कृषि क्षेत्र का विस्तार

② भूमि उर्वरता में वृद्धि

③ नगरीकरण का विकास

④ 1, 2, 3 , ⑤ 1, 2

⑥ केवल 2 ⑦ उपरोक्त में से कोई नहीं।

प्रथम नगरीकरण एवं द्वितीय नगरीकरण में अंतर :→

हड़प्पा सभ्यता	महाजनपद काल का है
1. सिंधु नदी घाटी ~~का~~ प्रमुख केन्द्र	1. गंगा नदी घाटी केन्द्र
2. कांस्य युगीन	2. लौह युगीन
3. वस्तु विनिमय प्रणाली	3. मुद्रा अर्थव्यवस्था

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098153

② महाजनपद काल की राजनीतिक संरचना / विशेषता :→

② ~~राजनीतिक क्षेत्र में~~ :-

↳ लौह के प्रयोग से → युद्धास्त्रों का निर्माण हुआ
↓
अतः राजा की शक्ति बढ़ी
↳ बल

कृषि का विस्तार → उत्पादन बढ़ा
↓
अ राजस्व प्राप्ति हुई
↓
'कर' की प्राप्ति → धन
↓
राजकोष समृद्ध हुआ।
↓
विशाल सेना एवं नौकरशाही का गठन
(पहली बार स्थायी सेना का गठन)
↓
अतः राजा निरंकुश हो गया।

↓

मंत्रि परिषद की नियुक्ति किया।

↓

सभा और सभा/समिति की समाप्ति हो गयी।

सामाजिक संरचना :→

↳ लोहे के प्रयोग से

↓

सामाजिक तनाव बढ़ा

↓

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

- क्षत्रिय ↓ लोहे के प्रयोग से उसकी शक्ति (राजा) बढ़ी ↓ निरंकुश
- वैश्य ↓ लोहे के प्रयोग से कृषि, व्यापार का विकास
- वैश्य → लेन देन / कर्ज - ब्याज करता था उसे ब्राह्मण धर्म / परंपरा सम्मानित कार्य नहीं मानते थे।
- शूद्र → अस्पृश्यता बढ़ी

→ वर्णों में संघर्ष की स्थिति

↓

नवीन धर्मों का उदय (बौद्ध, जैन)

↓

जिन्होंने वर्णव्यवस्था पर चोट की।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159.

Que. बौद्ध धर्म के उदय का सर्वप्रमुख कारण था —

(a) ~~बौद्ध~~ बुद्ध का जन्म

(b) ब्राह्मण - क्षेत्रिय संघर्ष

(c) वैश्यों की ~~समृद्धि~~ कृषि से सम्पन्न होती आर्थिक स्थिति

(d) लोहे का प्रयोग

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

~~महाजनपद~~

महाजनपद काल की प्रमुख विशेषताएँ :-

→ पहली बार बुद्ध काल में भूमि की माप शुरू हुई और भूमि माप के लिए 'निवर्तन' इकाई थी और भूराजस्व की राशि 1/6 निर्धारित की गई।

→ महाजनपद काल में पहली बार स्थायी सेना का निर्माण हुआ और रक्त संबंध से पृथक नौकरशाही का विकास हुआ।

→ पहली बार राजकीय मोहर का विकास हुआ और धान रोपाई पद्धति आरंभ हुई।

→ इस काल में पहली विदेशी आक्रमण सर्वप्रथम ईरानियों का और तत्पश्चात् यूनानियों का हुआ।

→ महाजनपद काल में
इस काल में पहली बार दासों को आर्थिक गतिविधियों में लगाया गया।

→ लोहे के प्रयोग ने नवीन धर्मों के उदय को प्रोत्साहित किया।

→ महाजनपद काल में
इस काल में पहली बार मुद्रा प्रणाली अस्तित्व में आई। जो चांदी से निर्मित होती थी। इन्हें 'आहत' मुद्राएँ कहा गया।

→ महाजनपद काल में
इस काल में 'श्रेणियों' का अत्यधिक विकास हुआ ये श्रेणियाँ शिल्पियों के संगठन के रूप में थी जहाँ शिल्पी अपने उत्पादों को इनके माध्यम से बेचते थे। श्रेणियों को मुद्रा जारी करने तथा कानून बनाने का अधिकार था। साथ ही ये अपने सदस्य के पारिवारिक मामलों में न्यायिक निर्णय में भूमिका निभाती थी और शिक्षा प्रदान करने में भी इनकी भूमिका थी।

D.K. COURIER FACILITY (M) 9268098159

→ इस काल में 16 महाजनपदों की जानकारी बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय एवं जैन ग्रंथ भगवती सूत्र से मिलती है। इन 16 महा जनपदों में 'वज्जि एवं मल्ल' में गणतंत्रात्मक शासन प्रणाली थी तो शेष में राजतंत्रात्मक व्यवस्था थी।

→ इस काल में 6 महानगरों की सूचना मिलती है- चम्पा, राजगृह, श्रावस्ती; साकेत, काशी और कौशाम्बी।

→ भारत पर पहला विदेशी आक्रमण ईरान के हखमनी वंश के डेरियस I द्वारा किया गया, जबकि दूसरा विदेशी हमला यूनानी शासक सिकन्दर द्वारा किया गया। सिकन्दर ने जब उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में अश्वक राज्य (राजधानी-मसग) पर हमला किया तो उसे पुरुषों की मृत्यु के पश्चात स्त्रियों से युद्ध करना पड़ा और उसने कत्ले आम किया। प्लूटार्क नामक यूनानी ने इसे सिकंदर की ~~जीती~~ कीर्ति पर एक धब्बा माना।

मगध साम्राज्य के उद्भव का कारण

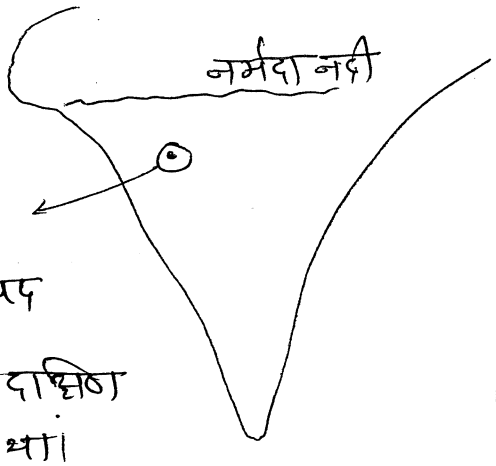

अस्मक

महाजनपद

अकेला
नर्मदा नदी के दक्षिण
में था।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

1. अनुकूल भौगोलिक स्थिति
   - → भूमि उपजाऊ → कृषि अधिशेष
   - → खनिज संसाधन → लौह धातु
   - → वन सम्पदा → हाथी प्राप्ति → सेना की शक्ति
     - → निर्माण के लिए सामग्री
   - → नदियाँ मौजूद → जल परिवहन
     - → प्राकृतिक सुरक्षा
   - → पहाड़ियाँ → प्राकृतिक सुरक्षा
   - → धान उत्पादन क्षेत्र
     - ↓ जनसंख्या वृद्धि
     - ↓ श्रम की उपलब्धता → सेना, कृषि, शिल्प

2. शासकों की भूमिका :-

→ बिम्बसार
→ अजातशत्रु] हर्यकवंश

→ शिशु नाग → शिशुनागवंश

→ नंद वंश → महापद्मनंद / घनानंद → नंद
→ मौर्य शासक → चन्द्रगुप्त मौर्य → मौर्य वंश

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159.

बोद्ध धर्म

प्रथम गुरू → अलारकलाम

महाभिनिष्क्रमण → गृह त्याग

निर्वाण → ज्ञान प्राप्त करना → बोधि गया

धर्म चक्र पर्वर्तन → प्रथम उपदेश → सारनाथ

महापरिनिर्वाण → मृत्यु → कुशीनगर

बोद्ध धर्म को ग्रहण करनेवाली प्रथम महिला प्रजापति गोतमी थी।

शासक द्वारा बुद्ध को अवान्ति बुलाये जाने पर भी नहीं पहुँचे क्योंकि वे अस्वस्थ थे।

बोद्ध धर्म की विशेषताएँ :→

1. चार आर्य सत्य → ① दुःख है
② दुःख का कारण
③ दुःख निवारण
④ दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा (दुःख दूर करने के उपाय हैं)
(अष्टांगिक मार्ग)

सम्यक्
=
उचित

दुःख का मूल कारण → अविद्या

↓

तृष्णा पैदा होती है।

↓

इच्छाएँ

② . अष्टांगिक मार्ग → प्रज्ञा → ज्ञान

→ शील → आचरण (नैतिकता) → सर्वाधिक बल

→ समाधि → एकाग्रता

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

③ . ~~प्रति~~ प्रतीत्यसमुत्पाद → इसके होने से ऐसा होता है।

↓

कारण - कार्य परम्परा

↓

चार आर्य सत्य में यह दिखाई पड़ता है।

④ . अनीश्वरवादी → ईश्वर नहीं है।

⑤ . अनात्मवादी → आत्मा नहीं है।

⑥ . पुनर्जन्म की मान्यता है। → चेतना/गुणों का पुनर्जन्म

⑦ . सृष्टि → नश्वर है / क्षणिक है।

⑧. वेद की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। इस दृष्टि से यह नास्तिक दर्शन है।

⑨. मध्यम मार्ग में विश्वास

⑩. निर्वाण : → ज्ञान की प्राप्ति
→ इसी जीवन में प्राप्त की जा सकती है।
→ दीपक का बुझ जाना (अर्थ)
↓
तृष्णा का अंत

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

⑪. बौद्ध धर्म के त्रिरत्न
↳ बुद्ध – धम्म – संघ → सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
↓
सिद्धांत

बौद्ध संघ की कार्य प्रणाली

1. बुद्ध के समय ही बौद्ध संघ की स्थापना हो गई थी। बुद्ध ने शिष्य आनंद के अनुरोध पर वैशाली में स्त्रियों को संघ में प्रवेश की अनुमति दी। यद्यपि आरंभ में वे इसके पक्ष में नहीं थी। स्त्रियों का संघ पुरुष संघ से अलग होता था किन्तु स्त्री संघ का संचालन पुरुष करता था।

2. बौद्ध संघ का स्वरूप लोकतांत्रिक था। प्रधान भिक्षु की नियुक्ति न तो बाहर से होती थी और न ही पूर्व प्रधान के मनोनयन से, बल्कि समस्त भिक्षुओं के मत द्वारा प्रधान का चुनाव होता था। संघ के सदस्यों के प्रवेश का अधिकार प्रधान को नहीं था बल्कि वृद्ध भिक्षुओं की एक समिति इस मामले को देखती थी।

3. प्रत्येक 15वें दिन पूर्णिमा / अमावस्या को सांय 'उपोसथ' नामक सभा होती थी जिसमें पातिमोक्ख का पाठ किया जाता था। (पातिमोक्ख विनयपिटक नामक ~~ग्रंथ~~ की मठ (संघ) संबंधी एक सूची है जिसमें 226 प्रकार के पाप कर्म और उनके प्रायश्चित करने के तरीकों का विवरण है।) इस सभा में प्रत्येक ~~सदस्य~~ सदस्य इस पाठ के माध्यम से स्वयं नियमों के उल्लंघन को स्वीकार करता था और उसके पाप कर्म या अपराध पर वयस्कों (वृद्ध) की एक समिति विचार करती थी। यही समिति सदस्य को प्रायश्चित करने या संघ से निकालने की आज्ञा देती थी।

4. भिक्षु वर्षा को छोड़कर अन्य समय धर्म का उपदेश देते हुए भ्रमण करते थे। भिक्षुओं को तीन महिने तक वर्षा के दिनों में एक ही स्थान पर रहना पड़ता था। जिसे 'वस्स या वास' कहा गया है। वस्स (वर्षा काल) की समाप्ति पर 'पवारना' (कहे जाते समय) के समय भरी सभा में भिक्षुओं से यह पूछा जाता था कि उसने कोई ~~गलि~~ गलती तो नहीं की है।

5. संघ में बच्चे, चोर, ऋणी व्यक्ति, रोगी और दासों को प्रवेश नहीं मिलता था।

6. संघ में प्रवेश के लिए पिता की आज्ञा जरूरी थी और न रहने पर माता की अनुमति ली जाती थी। स्त्री अविवाहित है तो पिता की और विवाहित है तो पति की अनुमति जरूरी थी। यह बौद्ध संघ कार्य प्रणाली के पुरूष प्रधान समाज की मनोवृति को दर्शाता है।

→

⇒ वैशाख / बुद्ध पूर्णिमा का महत्व :-

1. बुद्ध का जन्म
2. बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति (निर्वाण)
3. महापरिनिर्वाण

⇒ अष्ट महास्थान :→

1. लुम्बनी :- जन्म हुआ
2. बोधिगया :- ज्ञान प्राप्ति
3. सारनाथ :- प्रथम उपदेश
4. कुशीनगर :- महापरिनिर्वाण
5. कौशल (श्रावस्ती) :- संन्यासी जीवन के सर्वाधिक 24 वर्ष बिताये
6. राजगृह :- बौद्ध केन्द्र
7. वैशाली :- मृत्यु से पूर्व बुद्ध का अंतिम वस्स
8. संकिसा :- बुद्ध का यात्रा स्थल

D.K. PHOTO COURIER FACILITY (M) 9268098159

9. बुद्ध का अंतिम संस्कार मल्ल गणराज्य ने किया। उनके शरीर के अवशेषों को 8 विभिन्न राजाओं को दिया गया। जिनमें प्रमुख थे- वैशाली के लिच्छवि मगध का अजात शत्रु कपिलवस्तु के शाक्य और कुशीनगर के मल्ल।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

10. बुद्ध ने अपने ज्ञान और उपदेश के क्रम में विभिन्न स्थानों की यात्रा की। इसी क्रम में उन्होंने श्रावस्ती (कोसल राज्य) में अंगुलिमाल नामक डाकू को भी दीक्षित किया।

11. अवन्ति उज्जैन के शासक चण्डप्रद्योत ने बुद्ध को आमंत्रित किया परंतु वृद्धावस्था के कारण वे अवन्ति नहीं जा सके और अपने शिष्य महाकच्चायन को उपदेश देने के लिए भेजा।

⇒ **बौद्ध संगीतियाँ / बैठक :-**

	स्थान	शासक	अध्यक्ष	कार्य
प्रथम बैठक	राजगृह	अजातशत्रु	महाकस्यप	सुत्तपिटक एवं विनयपिटक का संकलन (सुत्तपिटक → आनंद ने संकलन किया। विनयपिटक → शिष्य उपालि ने इसका संकलन कि)
द्वितीय बैठक	वैशाली	कालाशोक	स्थविरयश / सबकामीर	स्थविरवादी एवं महासांघिक गुट में (स्थविरवादी → घूम-घूम कर धर्म प्रचार पर बल देते थे। महासांघिक → एक ही स्थान पर रहकर धर्म प्रचार पर बल।)
तृतीय बैठक	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	① अभिधम्म पिटक का संकलन 'तिस्स' ने किया। ② अशोक के अभिलेखों में इस बैठक की चर्चा नहीं है। अत: इसकी प्रमाणिकता संदिग्ध है।
चतुर्थ बैठक	कश्मीर (कुण्डलवन)	कनिष्क (कुषाण वंश का शासक)	अध्यक्ष → वसुमित्र; उपाध्यक्ष → अश्वघोष	हीनयान एवं महायान में बौद्ध धर्म का विभाजन होगया।

D. K. PHOTOSTAT ★ COURIER FACILITY ★ (M) 9268098159

हीनयान (बंदर)	महायान (बिल्ली) (उत्तरवादी शाखा)
1. बुद्ध को महापुरुष माना।	1. बुद्ध को देवता के रूप में माना गया।
2. बुद्ध को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया। ↓ निर्वाण के लिए स्वयं के प्रयत्नों पर बल	2. मूर्तिपूजा ↓ अवतारवाद ↓ 'बोधिसत्व' की परिकल्पना ↓ गुणों के स्थानांतरण पर बल

⇒ बौद्ध धर्म के सम्प्रदाय :-

1. बौद्ध धर्म में समय-समय पर कई संप्रदाय अस्तित्व में आये। इसी क्रम में चतुर्थ बौद्ध संगीति में हीनयान एवं महायान संप्रदाय का विकास हुआ। हीनयान में बुद्ध को महापुरुष के रूप में माने गये और उन्हें प्रतीकों के माध्यम से दर्शाया गया जबकि महायान में बुद्ध को देवता माना और उनकी मूर्ति पूजा प्रारंभ हुई।

2. इसी तरह हीनयान स्वयं के प्रयत्नों पर बल देता है जबकि महायान गुणों के स्थानांतरण पर। इसी क्रम में

महायान में बोधिसत्व की अवधारणा आई। जिसमें बुद्ध के अवतार की कल्पना की गई। ये बोधिसत्व हैं:-

1. अवलोकितेश्वर :→ इसका विशेष गुण दया है इसे पद्मपाणि भी कहा गया है। यह वहाँ भी जा सकता था जहाँ देवता नहीं जा सकते।

2. मंजुश्री :- इसका मुख्य कार्य बुद्धी बुद्धि को प्रखर ~~करना है~~ करना है। इसके एक हाथ में तलवार है, जो भ्रम एवं भ्रम का नाश करता है तो दूसरे हाथ में पुस्तक है जिसमें बौद्ध सिद्धांत लिखे गये हैं। इस बोधिसत्व को आगे चलकर लक्ष्मी के साथ जोड़ दिया गया।

3. वज्रपाणि
4. क्षितिगर्भ
5. मैत्रेय → भावी बुद्ध

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

3. हीनयानियों का साहित्य पालि भाषा में है जबकि महायानियों का साहित्य संस्कृत भाषा में है।

4. महायान से संबंधित उप संप्रदाय है-

माध्यमिक/ शून्यवाद → जिसके प्रवर्तक नागार्जुन है तथा विज्ञानवाद एवं योगाचार संप्रदाय का प्रवर्तक असंग एवं मैत्रेयनाथ को माना जाता है।

5. बौद्ध धर्म में वज्रयान संप्रदाय का विकास हुआ। इसका विकास नवीं सदी में हुआ। कश्मीर में सर्वज्ञमित्र ने इसका विकास किया। इसमें तंत्र-मंत्र पर बल दिया जाता है तथा देवियों का संबंध भी बुद्ध के साथ जोड़ा गया। देवी तारा को बुद्ध के साथ जोड़ दिया गया।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9...3159.

6. बंगाल में वज्रयान से संबंधित एक सहजयान संप्रदाय का विकास हुआ।

⇒ बौद्ध साहित्य :→

त्रिपिटक :-

1. सुत्तपिटक :- इसमें बौद्ध धर्म के सिद्धांत अर्थात् बुद्ध के उपदेश संकलित हैं। इसका संकलन प्रथम बौद्ध संगीति में आनंद ने किया।

→ इससे संबंधित खुद्दक निकाय में थेरगाथा एवं थेरीगाथा (भिक्षु एवं भिक्षुणी) द्वारा रचित कविताएँ हैं। इसी सुत्तपिटक से जुड़ी हुई जातक कथाएँ भी हैं, जिसमें बुद्ध के पूर्व जन्म की कहानियों का उल्लेख मिलता है।

→ सुत्तपिटक से ही संबंधित 'दीर्घ निकाय' है। जिसमें बुद्ध के पुनर्जन्म सिद्धांत की चर्चा मिलती है और इससे जुड़े हुए ग्रंथ महापरिनिर्वाण सूत्र में बुद्ध के निधन और अंत्येष्टि का वर्णन मिलता है।

2. विनयपिटक :- इसमें संघ संबंधी नियम है। इसका संकलन उपालि ने किया था।

3. अभिधम्मपिटक :- इसमें बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांतों की विवेचना मिलती है। इसकी रचना मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की थी।

4. वैपुल्य सूत्र :- महायान संप्रदाय से संबंधित साहित्य को वैपुल्य सूत्र कहा जाता है। इसमें 'ललितविस्तार' नामक ग्रंथ उल्लेखनीय है जिसे बुद्ध की जीवनी माना जाता है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY 9268098159

मिलिन्दपण्हो :- पालि भाषा में लिखा गया बौद्ध ग्रंथ है, इसमें इंडो ग्रीक शासक मिनान्डर (मिलिन्द) तथा बौद्ध आचार्य नागसेन के मध्य बौद्धिक वाद-विवाद का उल्लेख है।

बुद्धचरित :- अश्वघोष ने इसकी रचना की।

→ बौद्ध धर्म की लोकप्रियता के कारण :→

1. जटिल दार्शनिक वाद-विवाद का न होना अर्थात् पारलौकिक जीवन से संबंधित मुद्दों पर चर्चा न किया जाना।

2. लोकभाषा पालि में उपदेश दिया जाना।

3. मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया जाना।

4. राजकीय संरक्षण मिलना।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9263098159

⇒ बौद्ध धर्म के पतन के कारण :-

1. ब्राह्मणवादी धार्मिक क्रियाकलापों का समावेश हो जाना। फलत: इसकी विशिष्ट पहचान लुप्त हो गई।

2. संघ एवं मठ का जीवन अनैतिकता से युक्त होना। फलत: लोगों के बीच इसके नैतिक आदर्श वाले रूप का आकर्षण कम हो गया।

3. बौद्ध मठों में अत्यधिक धन संचय हुआ। फलत: यह आक्रमणकारियों का शिकार बना।

4. - शैव धर्म से इसकी टकराहट हुई। शैव संप्रदाय के शासक बंगाल के शशांक ने दमनात्मक कार्यवाही करते हुए बोधिवृक्ष को कटवा दिया।

जैन धर्म

(24) तीर्थंकर

1. ऋषभदेव → संस्थापक → ऋग्वेद में उल्लेख
19. मल्लिनाथ → श्वेताम्बर इन्हें स्त्री मानते थे।
दिगम्बर इन्हें पुरुष मानते थे।
22. अरिष्टनेमि → ऋग्वेद में उल्लेख मिलता है।
23. पार्श्वनाथ → प्रथम ऐतिहासिक ति तीर्थंकर
'सर्प' प्रतीक चिन्ह है।
↓
सप्त सर्पफण से युक्त
24. महावीर स्वामी → वास्तविक संस्थापक

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

⇒ जैन धर्म की शिक्षाएं :-

(1) पांच महाव्रत :-
1. सत्य
2. अहिंसा
3. अस्तेय
4. अपरिग्रह
→ पार्श्वनाथ के समय से।
5. ब्रह्मचर्य → महावीर स्वामी ने जोड़ा।

जैन शिक्षाओं / सिद्धान्त

- महाव्रत → जैन भिक्षु कठोरता से 5 सिद्धांतों का पालन करेगा।
- अणुव्रत → गृहस्थों के लिये 5 सिद्धांत, जो उदार तरीके से चलते थे।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

②. अनीश्वरवादी → ईश्वर नहीं है।

③. आत्मा की स्वीकृति है → आत्मवादी → अनेकात्मवादी

④ पुनर्जन्म की मान्यता है।

⑤. सृष्टि शाश्वत है। (स्थायी)।

⑥. कैवल्य → सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्ति
↓
इसको पाने वाला 'केवलिन' कहलाता था।
↓
इसी जीवन मे प्राप्त होता है।

⑦. स्यादवाद / सप्तभंगीनय / अनेकांतवाद
↓
ज्ञान के सापेक्षिकता का सिद्धांत

8. तीन शब्दावलियाँ

1. आस्रव :- जीव सांसारिक कर्म की ओर आकर्षित रहता है।

2. संवर :- जीव का कर्म से विच्छेद होना / अलग होना।

3. निर्जरा :- जीव में पहले से मौजूद कर्म को निकालना।

निर्जरा
↓
✓ संथारा / संल्लेखना
↓
✓ उपवास / शारीरिक त्याग

9. त्रिरत्न की मान्यता
→ सम्यक ज्ञान
→ सम्यक दर्शन
→ सम्यक आचरण

D. K. PHOTOSTAT ★ COURIER FACILITY ★ (M) 9268098159

⇒ जैन संघ :-

महावीर स्वामी से पहले ही जैन धर्म में संघ का निर्माण हो चुका था। स्त्री एवं पुरुष के संघ होते थे। पार्श्वनाथ के समय स्त्री संघ की अध्यक्ष पुष्पचूला थी। जैन संघ को 'बसदि' कहा जाता था।

महावीर के 2 पश्चात 'इन्द्रभूति' 'सुधर्मण' केवलिन हुए।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

⇒ जैन धर्म में विभाजन :—

1. जैन आचार्य भद्रबाहु के समय मगध में अकाल पड़ा। फलतः जैन भिक्षु भद्रबाहु के नेतृत्व में दक्षिण भारत चले गये। उनके साथ चन्द्रगुप्त मौर्य भी गया। यह शाखा 'दिगम्बर' के नाम से जानी गई।

2. इसी तरफ स्थूलभद्र के नेतृत्व में रह रहे मगध के भिक्षुओं ने श्वेत वस्त्र धारण करना शुरू किया और यह गुट श्वेताम्बर कहलाया। (वस्तुतः भद्रबाहु अपने शिष्यों के साथ कर्नाटक के श्रवणबेलगोला नामक स्थान पर चला गया था और जब दक्षिण भारत के ये भिक्षु लौटकर मगध आये तो उन्होंने मगध के भिक्षुओं को श्वेत वस्त्र धारण करते हुए पाया और इसका विरोध किया। इसी क्रम में जैन धर्म में विभाजन हुआ।)

जैन सभाएँ :-

- प्रथम सभा :→ पाटलिपुत्र
  - ↳ नेतृत्वकर्ता → स्थूलभद्र
  - ↳ कार्य → 12 अंगों का संकलन (जैन धर्म के साहित्य)

- द्वितीय सभा :→ वल्लभि
  - ↳ नेतृत्वकर्ता → देवार्धि क्षमाश्रमण
  - ↳ कार्य → जैन धर्म ग्रंथों का अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा में संकलन हुआ।

⇒ जैन साहित्य :→

1. जैन साहित्य 'आगम' के नाम से भी जाना जाता है। जैन धर्म का प्राचीनतम ग्रंथ 'पूर्व' के नाम से जाना जाता था जिनकी संख्या 14 थी। इसमें महावीर के उपदेश मौजूद थे और इसकी जानकारी केवल भद्रबाहु को थी। इसके दक्षिण भारत चले जाने के बाद मगध मगध में जैन ग्रंथों का संकलन हुआ, जिनकी संख्या 46 थी।

2. जैन ग्रंथों में 'आचरांगसूत्र' उल्लेखनीय है। इसमें जैन भिक्षुओं द्वारा पालन किये जाने वाले नियमों का उल्लेख मिलता है। साथ ही महावीर द्वारा किये गये कठोर तप का वर्णन है। इसमें कहा गया है 42वें वर्ष की उम्र में उन्हें केवल्य की प्राप्ति हुई और वे केवलिन कहलाए। अपनी समस्त इन्द्रियों को जीतने के कारण 'जिन' कहलाए और ज्ञान प्राप्ति के लिए पराक्रम दिखाने के कारण 'महावीर' कहलाए। साथ ही 'निर्ग्रन्थ' भी कहलाए अर्थात् बंधन रहित कहलाए। महावीर को 'अरिहंत' भी कहा गया।

3. बौद्ध ग्रंथों में महावीर के लिए 'निगण्ठनाथपुत्त' शब्द का प्रयोग किया गया है।

4. जैन धर्म ग्रंथ 'भगवतीसूत्र' को महावीर की जीवनी माना जाता है। इसमें मक्खलिगोशाल का उल्लेख हुआ है जो आजीवक सम्प्रदाय का संस्थापक था। आजीवक सम्प्रदाय ~~नियतिवादी~~ नियतिवादी था और कठोर तप पर बल देता था।

Que.

कथन (A) → आजीवक कठोर तप पर बल देते थे।

कारण (R) → वे नियतिवादी थे।

(a) A ✓ R ✓ $R = A$

(b) A ✓ R ✓ $R \neq A$

(c) A ✓ R ✗

(d) A ✗ R ✓

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

5. जैन साहित्य पर लिखी गई टीकाओं को 'निर्युक्ति' कहा जाता है।

6. जैन लेखकों में हेमचन्द्र का नाम प्रसिद्ध है जिसने परिशिष्ट पर्व तथा त्रिषष्टिशलाका-चरित की रचना की। यह चालुक्य शासक कुमारपाल के दरबार में रहता था।

7. जैन धर्म का महत्वपूर्ण योगदान प्राकृत, अपभ्रंश एवं कन्नड़ भाषा के विकास में है। जैनों ने 'ताड़पत्र' पर चित्रकला के विकास में योगदान दिया।

मौर्य काल

जानकारी का स्रोत

→ चाणक्य / कौटिल्य → अर्थशास्त्र → राजनीतिक विषय → केन्द्र में

विदेश नीति → मंडल सिद्धांत → एक राज्य का पड़ोसी उसका स्वाभाविक शत्रु होता है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

⇒ कौटिल्य का अर्थशास्त्र :-

1. कौटिल्य मौर्यकालीन शासक चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधानमंत्री था। इसने राजनीतिक विषय को केन्द्र में रखकर 'अर्थशास्त्र' नामक पुस्तक लिखी। जिसमें चक्रवर्ती राज्य एवं राजा की अवधारणा का उल्लेख है। इसमें व्यापक कर प्रणाली, गुप्तचर प्रणाली तथा आर्थिक सामाजिक विषय पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है।

2. कौटिल्य ने कहा कि प्रजा के सुख में ही राजा का सुख है। इस तरह लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा प्रस्तुत की। ~~उसकी~~ उसने सेना में सभीवर्गों

के लोगों को शामिल करने की बात कही।

3. कौटिल्य ने अपने मंडल सिद्धांत के आधार पर विदेश नीति की चर्चा की। जिसके तहत बताया कि "राज्य का पड़ोसी स्वभाविक रूप से उसका शत्रु होता है।" इस तरह कौटिल्य ने यथार्थवादी राजनीतिक और शक्ति संतुलन की अवधारणा प्रतिपादित की। आज भी अंतर्राष्ट्रीय सच्च राजनीति में राज्यों की विदेश नीति में मंडल सिद्धांत का समावेश दिखाई पड़ता है।

4. कौटिल्य ने राज्य के 7 अंगों की चर्चा की। जिसमें राजा को केन्द्र में रखा। उसने राज्य के सर्वोच्च अधिकारियों के रूप में 18 तीर्थ तथा 26 अध्यक्षों का उल्लेख किया है।

5. अर्थशास्त्र में किसी मौर्य शासक का नाम नहीं मिलता। इसी तरह इसमें पाटलिपुत्र नगर, प्रशासन, परिषद् एवं सैनिक परिषद् का उल्लेख नहीं मिलता।

⇒ मेगस्थनीज का विवरण

1. मेगस्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस का राजदूत था जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया। मेगस्थनीज ने भारत की भौगोलिक स्थिति नगर प्रशासन एवं सैनिक ~~परिषद~~ प्रशासन परिषद का उल्लेख किया। पाटलिपुत्र नगर का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया। मेगस्थनीज ने उत्तरापथ मार्ग का वर्णन किया जो ताम्रलिप्ति से तक्षशिला तक जाता था। यह व्यापार का प्रमुख मार्ग था।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159.

2. मेगस्थनीज ने लिखा कि 'भारतीय हेराक्लीज (विष्णु) और डियोनिसस (शिव) की पूजा करते थे।'

2. मेगस्थनीज ने लिखा कि भारत में दास प्रथा नहीं थी अकाल नहीं पड़ता था, भारतीय लेखन प्रणाली से परिचित नहीं थे। ~~अंतरजा~~ अंतर्जातीय विवाह नहीं होते थे तथा भारतीय समाज सात जातियों में विभाजित था - दार्शनिक, किसान (सर्वाधिक संख्या में), पशुपालक, शिल्पी, सैनिक, निरीक्षक समासद। मेगस्थनीज का यह सामाजिक वर्णन

भ्रामक है। वस्तुतः चन्द्रगुप्त मौर्य के सोहगौरा एवं महास्थान अभिलेख से पता चलता है कि अकाल के दौरान राज्य की ओर सहायता दी जाती थी।

4. मेगस्थनीज की इंडिका अपने मूलरूप में प्राप्त नहीं हुई बल्कि परवर्ती काल के लेखकों प्लूटार्क, एरियन के विवरण पर आधारित है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

⇒ मौर्य कार्य के ~~ऐतिहासि~~ पुरातात्विक स्रोत :→

अभिलेखों का महत्व :-

1. लिखि गई गयी बातें।
2. अभिलेखों की भाषा → शिक्षा का पता चलता है।
3. ✓ साम्राज्य विस्तार।
4. ✓ काल का निर्धारण।
5. ✓ इतिहास के पुनर्निर्माण में उपयोगी।

⇒ अशोक के अभिलेख

⇒ अशोक के अभिलेख

- 14. वृहत शिलालेख → राजकीय घोषणाएँ
  - 1. 2. 3. … 13. → कलिंग युद्ध, 14. बातें
- लघु शिलालेख → अशोक के जीवन की व्यक्तिगत आस्थाओं का पता
- गुफा अभिलेख → बाराबर गुफा अभिलेख → आजीवक संप्रदाय के लोगों को दान देने का उल्लेख करता है। → अर्थात् अशोक की धार्मिक उदारता का पता चलता है।

स्वामी ← राजा — प्रजा → सेवक

राजा → पिता

प्रजा → पुत्र

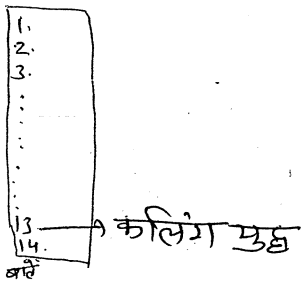

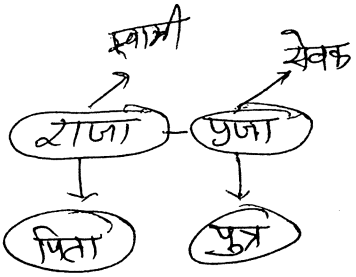

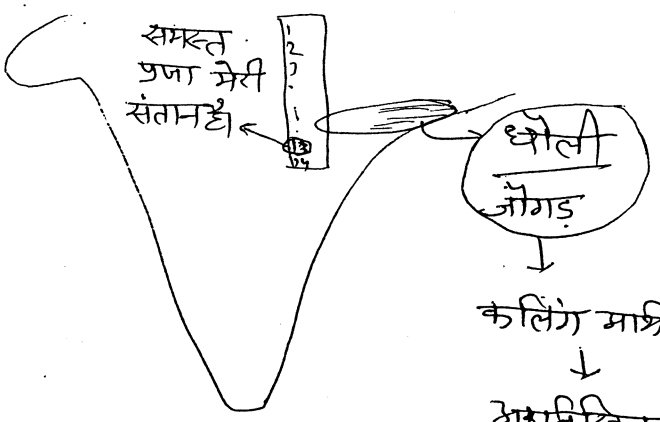

समस्त प्रजा मेरी संतान है ← 13 (1, 2, … 13, 14)

धौली, जौगड़ → कलिंग अभिलेख → अतिरिक्त कलिंग अभिलेख

कर

'बलि' → स्वैच्छिक

'भाग' → भू-राजस्व → 1/6 → 1/8 बाद में

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

⇒ अशोक के अभिलेख :-

1. अशोक के अभिलेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक एवं अरमाइक लिपियों में मिलते हैं। सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के अभिलेखों को पढ़ा और उसमें अंकित 'देवानांप्रिय' उपाधि की पहचान से की गई।

2. निम्नलिखित स्थानों पर लिखे अभिलेख में उसका नाम अशोक मिलता है-

(i) मास्की (iii) नेट्टूर और (iv) उडेगोलम

(ii) गुर्जरा

2. अशोक के अलावा मौर्य शासक दशरथ ने भी देवानांप्रिय की उपाधि ली थी तो साथ ही श्रीलंका के शासक तिस्स ने भी देवानांप्रिय की उपाधि धारण की थी।

⇒ अशोक के 14 वृहद शिलालेख :-

→ अशोक ने पत्थरों पर लेख लिखवाने की परम्परा ईरानी शासक डेरियस I (दारा) से प्राप्त की। अशोक के ये अभिलेख राज्यादेश के रूप में मिलते हैं। इसमें-

राजकीय घोषणाएँ शामिल हैं।

① → प्रथम वृहद शिलालेख में पशुबलि की निंदा की गई है।

② → द्वितीय शिलालेख में मनुष्य एवं पशुओं दोनों के लिए चिकित्सालय की स्थापना का उल्लेख है। इसी में अशोक ने अपने दक्षिण के सीमावर्ती राज्यो चोल, पाण्ड्य सतियपुत्त, केरलपुत्त और ताम्रपर्णी (श्रीलंका) का उल्लेख किया है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

③ → तृतीय शिलालेख में युक्त ~~एवं~~ रज्जुक एवं प्रादेशिक नामक अधिकारियों की नियुक्ति की चर्चा की।

④ → चतुर्थ शिलालेख में ब्राह्मणों एवं श्रवणों (साधु-संन्यासी) के सम्मान की बात कही गई।

⑤ → पांचवें शिलालेख में 'धम्म महामात्र' नामक अधिकारियों की नियुक्ति की चर्चा है।

(6)→ छठे शिलालेख में सर्व लोक हित मेरा ~~कर्त~~ कर्त्तव्य है। प्रत्येक समय चाहे मैं भोजन करता रहूँ, शयन ~~कक्ष~~ कक्ष में रहूँ या उद्यान में रहूँ मेरे प्रतिवेदक मुझसे प्रजा के ~~संबं०~~ संबंध में सूचना दे सकते हैं।

(7)→ सातवें और बारहवें ~~अभिलेख~~ शिलालेख में धार्मिक उदारता
(12)
का उल्लेख मिलता है। जहाँ कहा गया कि सभी धर्मों के प्रति समानता का भाव रखें और सभी के मतों को सुने।

(8)→ आठवें शिलालेख में अशोक ने लिखा कि उसने शिकार करना छोड़ दिया है और अब वह धम्म यात्रा करता है।

(9)→ नौवें शिलालेख में जन्म, विवाह जैसे सामाजिक समारोह पर होने वाले अपव्यय की निंदा की गई।

(10)→ दसवें ~~अभि~~ शिलालेख में यश और कीर्ति की परवाह कीये बेगर कार्य करने पर बल दिया गया। ~~है~~

(12)→ बारहवें में ~~अ~~ इतझिक महामात (स्त्री अध्यक्ष महामात्र) नामक अधिकारी की नियुक्ति का उल्लेख मिलता है।

→ तेरहवाँ शिलालेख सर्वाधिक लंबा है और इसमें कलिंग युद्ध का वर्णन है। इसमें पांच विदेशी राज्य और उनके शासकों का नाम वर्णित है तो साथ ही चोल एवं पांड्य राज्य का भी उल्लेख है। इसमें आटविक जानत जातियों को अनुशासन में रहने की बात कही गई और ऐसा न करने पर उन्हें दण्डित करने ~~कर~~ की चेतावनी दी गई। इसी में अशोक के ह हृदय परिवर्तन की बात कही गई।

✓ अतिरिक्त कलिंग शिलालेख (धौली / जौगड़ अभिलेख)

इसमें लिखा है कि "समस्त प्रजा मेरी संतान है।"

⇒ लघु शिलालेख

इसमें अशोक के व्यक्तिगत जीवन से जुड़ी बातों का पता ~~चत~~ चलता है। ये निम्न लिखित हैं -

① रुम्मिनदेई अभिलेख (लुम्बनी) :- अशोक बुद्ध के जन्म स्थल लुम्बनी गया और उसने वहाँ धार्मिक कर (बलि) को माफ कर दिया और भू-राजस्व को घटाकर 1/6 से 1/8 कर दिया। रुम्मिनदेई अभिलेख को प्राचीन

अभिलेख भी कहा जाता है क्योंकि इससे मौर्य कालीन कराधान प्रणाली पर प्रकाश पड़ता है।

→ निगाली सागर अभिलेख :-

यह नेपाल की तराई में स्थित है। इससे पता चलता है कि अशोक ने अपने राज्याभिषेक के कुछ समय बाद यहाँ की यात्रा की और यहाँ कनकमुनि के स्तूप का आकार दुगुना करवाया।

→ भब्रू शिलालेख :- इसमें अशोक ने लिखा कि "मैं बुद्ध/ धम्म/ संघ में आस्था रखता हूँ। अर्थात् इस अभिलेख से पता चलता है कि अशोक का व्यक्तिगत धर्म बौद्ध था।

→ कोशाम्बी का अभिलेख (रानी का अभिलेख)

इसमें अशोक ने बौद्ध संघ में फूट डालने वालों को कड़ी चेतावनी दी। इसी में अशोक की रानी करुवाकी एवं पुत्र तीवर का उल्लेख मिलता है।

→ बारबर पहाड़ी गुफा अभिलेख :-

इस गुफा पहाड़ी ~~अभिलेख में~~ पर अशोक ने खुदाया एवं कर्ण चौपर गुफाओं का निर्माण करवाया और इसे आजीवक संप्रदाय के लोगों को दान में दिया।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

अशोक का धम्म

[अशोक
अकबर
गांधी]

धर्म → संस्कृत भाषा में

धम्म → प्राकृत भाषा

[धम्म → मानवीय गुणों का पालन करना]

अपासिनेव बहुकयाने दया दाने सचे सोचये मादवे - साधवे - च।

- अपासिनेव → पाप रहित
- बहुकयाने → बहुत से कल्याणकारी कार्य करना
- सचे → सत्य बोलना
- सोचये → शुचिता → पवित्रता
- मादवे → मृदुता
- साधवे → साधुता

क्रोध, प्रचंडता, घमंड, निष्ठुरता, ईर्ष्या → त्याग करना चाहिए

साम्राज्य पर नियंत्रण

- बल/तलवार से
- सृजनात्मक नीति से → 'धम्म' के माध्यम से

⇒ धम्म का उद्देश्य :-

एक विशाल साम्राज्य के अंतर्गत रहने वाली बहुभाषा-भाषी धर्म-जाति की जनसंख्या को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए अशोक ने धम्म का प्रतिपादन किया। इस तरह धम्म शासकीय आवश्यकताओं से प्रेरित था।

⇒ धम्म के मूल तत्व :-

1. अपासिनेव बहुकयाने दया....

2. बड़ों का सम्मान करना।

3. जीवों के प्रति अहिंसा का भाव रखना।

4. क्रोध, घमंड, ईर्ष्या, निष्ठुरता, उच्चंडता का त्याग करना।

5. सहनशीलता, उदारता, मितव्ययता पर बल देना।

⇒ धम्म का स्वरूप :-

अशोक का धम्म कोई धर्म नहीं है। वस्तुतः उसकी कोई पवित्र पुस्तक, पवित्र स्थान, देवता एवं पुरोहित वर्ग नहीं था। यह तो विभिन्न धर्मों में कही गई बातों का सारतत्व है। यह सामाजिक आचार संहिता है। यह बौद्ध धर्म का

प्रतिरूप नहीं है। क्योंकि इसमें बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांत जैसे चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग एवं निर्वाण का उल्लेख नहीं है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

→ धम्म का प्रसार :-

अशोक ने धम्म के प्रचार-प्रसार हेतु धम्म महामात्र नामक अधिकारियों की नियुक्ति की। अशोक ने विभिन्न क्षेत्रों में धम्म-दूत भेजे। इसी क्रम में उसने अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा तो साथ ही धर्म लिपि के तहत अभिलेखों पर अपने लेख अंकित करवाये।

मौर्य युगीन विशेषताएँ :- गुप्तचर प्रणाली ✓

1. मौर्य शासन लोक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा पर आधारित है। मौर्य शासकों ने ~~दैविय~~ दैवीय पद का दावा नहीं किया।

2. कौटिल्य ने कहा कि जिस तरह रथ एक पहिये से नहीं चल सकता, उसी तरह राज्य केवल राजा से नहीं

चल सकता। राज्य को चलाने के लिए एक बड़ी मंत्रिपरिषद् होनी चाहिए और महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए एक छोटी मंत्रिपरिषद् होनी चाहिए। जिसे वर्तमान में हम कैबिनेट के नाम से जानते हैं।

3. मौर्य शासन में उच्च अधिकारी 'तीर्थ' कहलाते थे। इनमें प्रमुख थे -

समाहर्ता — राजस्व / वित्त मंत्री
सन्निधाता — कोषाध्यक्ष
कर्मान्तिक — उद्योग मंत्री

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY 9268098159

विभिन्न अध्यक्ष :-

- सीताध्यक्ष → कृषि विभाग का अध्यक्ष
- पण्याध्यक्ष → व्यापार- वाणिज्य का अध्यक्ष
- पौतवाध्यक्ष → माप-तौल विभाग का अध्यक्ष
- आकराध्यक्ष → खानों का अध्यक्ष
- लक्षणाध्यक्ष → मुद्रा विभाग (टकसाल)

4. मौर्य शासन में दिवानी अदालत धर्म स्तरीय तथा फौजदारी अदालत कंटकशोधन कहलाती थी। न्याय व्यवस्था में मृत्युदण्ड प्रचलित था किन्तु सजा पाये व्यक्ति को पुनः अपील का अधिकार था। 'रज्जुक' नामक अधिकारी न्यायिक कार्यों से जुड़ा था।

5. गुप्तचर विभाग का प्रमुख 'महामात्यासर्प' कहलाता था। मौर्य काल में गुप्तचर प्रणाली अत्यंत विकसित थी। गुप्तचरों को 'गूढ़ पुरुष' कहा जाता था। एक ही स्थान पर रहते हुए गुप्तचर का कार्य करने वाले 'संस्था' कहलाते थे जबकि घूम-घूम कर कार्य करने वाले गुप्तचर 'संचरा' कहलाते थे।

6. मौर्य काल में राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था थी। राज्य सिंचाई पर विशेष बल देता था। कृत्रिम साधनों से सिंचित भूमि 'अदेवमात्रक' कहलाती थी जबकि वर्षाधीन कृषि भूमि 'देवमात्रक' कहलाती थी। अदेवमात्रक भूमि को सर्वोत्तम माना जाता था।

7. चंद्रगुप्त मौर्य के समय सौराष्ट्र प्रांत (गुजरात) का प्रांतपति (राज्यपाल) पुष्यगुप्त वैश्य था। जिसने सुदर्शन झील का निर्माण करवाया। जिससे सिंचाई की जाती थी।

8. मौर्य काल में राजकीय भूमि 'सीता' कहलाती थी।

9. मौर्यकाल में सोने के सिक्के निष्क / सुवर्ण कहलाते थे तो चाँदी के सिक्के पण / कर्षापण कहलाते थे तथा तांबे के सिक्के माषक कहलाते थे।

10. मौर्य कालीन समाज में महिलाओं को प्रशासन में शामिल किया जाता था। स्त्री और पुरुष दोनों को मोक्ष (तलाक) का अधिकार था। विधवा विवाह की अनुमति थी और 'प्रवहण' एक सामाजिक समारोह था।

11. आग को राष्ट्रीय संकट माना जाता था। क्योंकि राजधानी में काष्ठ निर्मित भवन थे। अतः नगर प्रशासक का मुख्य कार्य नगरों को आग से बचाना था।

12. मेगस्थनीज ने शहर के प्रमुख अधिकारी के रूप में एस्टिनोमोई का उल्लेख किया। तो सड़क निर्माण एवं सिंचाई कार्यों के लिए एग्रेनोमोई का उल्लेख किया।

13. अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ था जिसकी हत्या मौर्य सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने करके 185 ई०पू० में शुंग वंश की स्थापना की।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

मौर्योत्तर काल (200 BC – 300 AD)

- विशेषताएँ
- विदेशी राज्य
  - → इण्डोग्रीक
  - → शक
  - → पार्थियन
  - → कुषाण
- देशी राज्य
  - → शुंगवंश
  - → कण्व वंश
  - → सातवाहन वंश
  - → खारवेल (उड़ीसा)
  - → संगम राज्य

ब्राह्मण - क्षत्रिय - वैश्य - शूद्र

क्षत्रिय → उच्च, निम्न

निम्न → व्रात्य क्षत्रिय ([इसमें विदेशी शासकों को शामिल किया गया]

मौर्योत्तर काल

⇒ **अभिलक्षण** :-

1. छोटी- छोटी अनेक राजनीतिक इकाईयों का निर्माण हुआ।

2. भारत का रोम एवं दक्षिण पूर्व एशिया के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित हुआ।

2. मौद्रिक अर्थव्यवस्था का अत्यंत विकास हुआ और मानसूनी हवाओं की खोज के कारण समुद्री यातायात आसान हुई।

4. imp भूमि दान की परम्परा की शुरूआत हुई। जो आगे सामंती संरचना के विकास का आधार बना।

5. मूर्तिपूजा समाज में भक्ति एवं मूर्ति पूजा की अवधारणा सामने आयी और समाज में विदेशियों का बड़ी संख्या में आगमन हुआ और उनका आत्मसातीकरण किया गया।

⇒ ~~आर्थिक~~ आर्थिक विशेषताएँ :-

(1) मौर्योत्तर काल में रोम के साथ भारत का व्यापार अत्यधिक विकसित हुआ। भारत से रेशम एव मसालों का अत्यधिक निर्यात रोम किया जाता था। बदले में भारत को सोने -चाँदी के रूप में बहुमूल्य धातु प्राप्त होती थी।

वस्तुत: व्यापार संतुलन भारत के पक्ष में था। इसी संदर्भ में प्लिनी नामक यात्री ने दु:ख व्यक्त करते हुए कहा कि विलासिता की वस्तु के बदले रोम की सम्पत्ति भारत जा रही है। यह भारतीय मलमल (शिल्प) रोम की नैतिकता के लिए खतरा बन गया है। इसी क्रम में रोमन सम्राट टीबीरियस ने भारत से वस्तुओं के आयात को कम करने का प्रस्ताव सदन में रखा।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

→(2) वस्तुत: प्लिनी द्वारा यह कहना कि रोम से भारत को धन की निकासी हो रही है, आधुनिक काल के धन की निकासी की अवधारणा से एकदम भिन्न है। वस्तुत: औपनिवेशिक शासन के दौरान भारत से इंग्लैण्ड को हो रही धन की निकासी का तात्पर्य यह है कि भारतीय धन के बदले भारतीयों को कोई भौतिक लाभ नहीं मिला, क्योंकि यह व्यापार औपनिवेशिक स्वरूप से युक्त था। जबकि भारत-रोम व्यापार समानता मूलक व्यापार का उदाहरण है और रोमन व्यापारी अपनी आवश्यकता की पूर्ति के

लिए भारतीय वस्तुओं को खरीदकर ले जा रहे थे। इस तरह प्राचीन काल के भारत-रोम व्यापार के संदर्भ में धन की निकासी कहना तार्किक नहीं है।

→③ रोमन मसाला आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारतीयों ने दक्षिण-पूर्व एशिया से व्यापारिक संबंध बनाया और वहाँ से वस्तुओं को लाकर रोम निर्यात् किया गया। इस क्रम में भारत के पूर्वी एवं पश्चिमी तटों पर बंदरगाहों का अत्यधिक विकास हुआ।

⇒ श्रेणियां / शिल्प संगठन (गिल्ड) :→

ये श्रेणियां शिल्प संगठन थी और विविध शिल्पों से जुड़ी हुई थी। ये श्रेणियाँ वस्तुओं के मूल्य का निर्धारण एवं बैंकिंग का कार्य करती थी साथ ही अपने सदस्यों के बीच के पारीवारि पारिवारिक विवादों में भी हस्तक्षेप कर न्यायिक भूमिका निभाती थी। इनके द्वारा निर्मित कानूनों को राज्य मान्यता प्रदान करता था। ये श्रेणियां शिक्षण संस्थाओं की स्थापना

करती थी और सदस्यों को व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा भी देती थी। इस तरह मौर्योत्तर काल में श्रेणियों को स्वायत्ता प्राप्त थी जबकि मौर्य काल में राज्य नियंत्रित अर्थव्यवस्था होने के कारण श्रेणियां राज्य के अधीन थी। अतः उनका महत्व नहीं था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

⇒ सामाजिक विशेषताएँ :-

① मौर्योत्तर कालीन समाज में बड़ी संख्या में विदेशियों का आक्रमण हुआ और समाज में इन्हें आत्मसात किया गया। इसी क्रम में विदेशियों को व्रात्य क्षत्रिय (निम्न स्तरीय) का दर्जा दिया गया।

② विभिन्न धर्मों ने ~~दीक्षा~~ दीक्षा रूप अपनाते हुए विदेशियों को शामिल करने पर बल दिया।

③ इस काल में शूद्रों की कृषि क्षेत्र में भागीदारी से स्थिति में सुधार हुआ तो इसरी तरफ शासक वर्ग के रूप में विदेशियों के भारी आगमन से उन्हें वर्णव्यवस्था के प्रति असंतोष व्यक्त करने का अवसर भी मिला। अतः वैश्य और

शूद्र अपने कर दायित्वों से विमुख होने लगे।
इसी क्रम में कल युग की अवधारणा सामने आई।

④. इस काल में मनु स्मृति की रचना हुई जो सामाजिक विधान की पुस्तक है। साथ ही इस काल में भक्ति की अवधारणा भी सामने आई।

⑤. शैव धर्म के अंतर्गत 'पाशुपत' संप्रदाय का उदय हुआ जिसके प्रवर्तक लकुलिश थे।

⑥ भागवत धर्म का भी विकास हुआ। वस्तुतः कृष्ण के उपासक भागवत कहलाते थे। इस तरह भागवत धर्म विष्णु पूजा से जुड़ गया। (क्योंकि विष्णु के अवतार के रूप में कृष्ण को माना गया)।

शुंग वंश

जानकारी के स्रोत :-

① महाभाष्य :- → लेखक पतंजलि थे। ये पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित थे।

→ मालविकाग्निमित्रम → कालिदास ने की
↳ अग्निमित्र एवं मालविका के प्रणय संबंधो की चर्चा है।
↳ इस ग्रंथ से यवनों के आक्रमणों की सूचना भी मिलती है। (यवन = इंडो = ग्रीक)

② धनदेव का अयोध्या अभिलेख :-
इससे पता चलता है कि पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ किया था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

③ हेलियोडोरस का गरुड़ स्तंभ :-
हेलियोडोरस एक यवन राजदूत था। जो शुंग शासक भागभद्र के विदिशा दरबार में आया और उसने भागवत धर्म के सम्मान में गरुड़ स्तंभ की स्थापना की।

पुष्यमित्र शुंग :- यह शुंग वंश का संस्थापक था। इसके समय में भारत में पहला इण्डो ग्रीक या यवन आक्रमण हुआ। जिसे इसे इसके पौत्र वसुमित्र ने विफल कर दिया। इस विजय के उपलक्ष्य में पुष्यमित्र शुंग ने अश्वमेध यज्ञ किया।

कण्व वंश

संस्थापक → वसुदेव

चेदिवंश (खारवेल)

→ खारवेल ने हाथी गुफा अभिलेख का निर्माण कराया। इस अभिलेख से पता चलता है कि खारवेल ने कलिंग में निर्मित नहर से अपने राज्य में सिंचाई सुविधाओं का विकास किया। इस नहर का निर्माण मगध के नंद वंश के शासक महापद्मनंद ने कराया था।

→ खारवेल जैन धर्म का अनुयायी था और इसने उदयगिरी, खण्डगिरी पहाड़ी पर जैनों के लिए विहार (रानीगुम्फा) का निर्माण करवाया।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

सातवाहन वंश

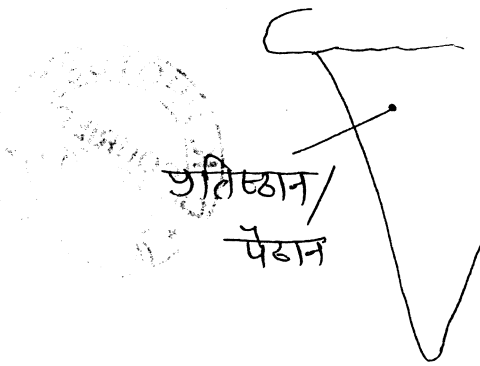

- संस्थापक → सिमुक
- राजधानी → प्रतिष्ठान/पैठान
- राजकीय भाषा → प्राकृत

शातकर्णी प्रथम :- शातकर्णी प्रथम ने दो अश्वमेध यज्ञ और एक राजसूय यज्ञ किया। इसके सिक्कों पर 'श्रीसात' लिखा है जो शातकर्णी प्रथम का सूचक है।

गौतमीपुत्र शातकर्णी (106 ई.–130 ई.) :→ इसे अद्वितीय ब्राह्मण, क्षत्रिय दर्पमान मर्दन, दूसरा परशुराम कहा गया।

गौतमी पुत्र शातकर्णी

इसके घोड़े तीन समुद्रों का पानी पीते थे अर्थात् दक्षिण के विशाल क्षेत्र पर इसका नियंत्रण था। इसे "प्रजा के सुख में सुखी और दुःख में दुखी होने वाला सम्राट" कहा गया।

⇒ वशिष्ठीपुत्र पुलमावि :-

इसे दक्षिणापथपथेश्वर कहा गया। इसने अमरावती स्तूप की मरम्मत करायी।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

⇒ सातवाहन संस्कृति :-

① सातवाहन शासक दैवीय सिद्धांत में विश्वास रखते थे। समाज मातृ सत्तात्मक था। शासक ब्राह्मण धर्मानुयायी होते हुए भी अन्य धर्मों के प्रति उदार थे।

② सातवाह शासक हाल ने प्राकृत भाषा में गाथासप्तशती नामक ग्रंथ की रचना की। इसके काल में गुणाढ्य नामक विद्वान ने बृहद कथा की रचना की।

③ सातवाहन शासन में पहली बार भूमिदान की परम्परा की शुरूआत हुई जिससे आगे चलकर सामंती संरचना का विकास हुआ।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268094159

संगम कालीन राज्य

शासक वर्ग को → अरसर
व्यापारी वर्ग को → वेनिगर

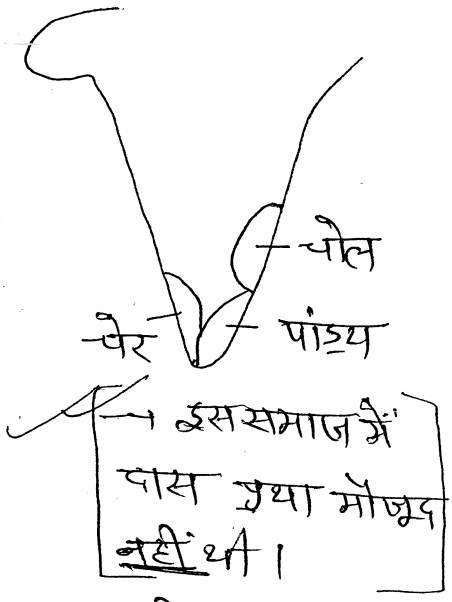

→ इस समाज में दास प्रथा मौजूद नहीं थी।

→ इस काल में कौवे को सबसे शुभ पक्षी मानते थे।

① संगम कालीन समाज की जानकारी के प्रमुख स्रोत संगम साहित्य एवं मद्यपाषाण स्थल (समाधिस्थल) है। समाज में चतुर्वर्ण व्यवस्था नहीं थी समाज ब्राह्मण और गैर- ब्राह्मण में बंटा हुआ था। उत्तर भारत से

दक्षिण आने वाले ब्राह्मण 'वदियार' कहलाते थे। बड़ी संख्या में आने वाले ऐसे ब्राह्मणों के कारण समाज में इसे 'बड़वा प्रथा' के नाम से जाना गया और यह सामाजिक तनाव का कारण बना।

② शासक वर्ग 'अरसर' कहलाता था और किसान के लिए 'वेल्लाल' शब्द का प्रयोग किया गया। धनी किसानों का भूमि पर नियंत्रण था और इनकी नियुक्ति सैनिक एवं असैनिक पदों पर होती थी और शासक वर्ग के साथ वैवाहिक संबंध भी स्थापित होते थे। इन धनी किसानों के आवास पक्के बने होते थे और निम्न किसानों को इन की भूमि पर खेती करना पड़ता था। इन छोटे किसानों के आवास घास-फूस के होते थे। इस तरह समाज में तीव्र सामाजिक आर्थिक विषमता संगम काल में व्याप्त थी।

③ व्यापारिक वर्ग को 'वेनिगर' कहा जाता था।

④ समाज में अस्पृश्यता व्याप्त थी कि दास प्रथा नहीं थी। समाज मातृसतात्मक था और यहाँ उत्तर भारत

के समान ही आठ प्रकार के विवाहों का प्रचलन था। महिलायें शिक्षा एवं काव्य लेखन में संलग्न थीं और उन्हें 'प्रणय' संबंधों की अनुमति थी।

(5) कौआ शुभ पक्षी माना जाता था क्योंकि यह अतिथि आगमन की सूचना देता था।

(6) मृतक संस्कार पद्धति में समाधिकरण एवं अग्निदाह प्रचलित था किन्तु मुख्यत: समाधिकरण का प्रचलन था। इस काल में समाधिस्थल को बड़े-बड़े पत्थरों से ढका जाता था। अत: ये स्थल महापाषाण कहलाये। इस तरह महापाषाण संस्कृति का संबंध दक्षिण भारत से है और यह संस्कृति अनिवार्यत: लौह धातु से जुड़ी हुई है।

स्थल ये पाषाण से हुए बनाये जाते थे

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

(7). संगम कालीन समाज में 'मुरुगन' की उपासना सबसे प्राचीन थी और इस उपासना में विशेष किस्म के नृत्यगान का आयोजन किया जाता था। तैत्तिरीय भी विष्णु की उपासना में तुलसी पत्र का प्रयोग किया जाता था।

माना जाता है कि अगस्त ऋषि ने संगम राज्य में यहाँ वैदिक धर्म का प्रसार किया था।

⇒ संगम कालीन अर्थव्यवस्था :-

① संगम काल में आय का सर्वप्रथम स्रोत भू-राजस्व था। जिसे 'कदमई' कहते हैं। यह 'कर' भूमि की माप कर निर्धारित किया जाता था। भूमि माप की इकाई (महाजनपदकाल) मा, वेलि एवं निवर्तन थी।

② कावेरी नदी से जुड़ा हुआ क्षेत्र इतना उपजाऊ था कि यह कहा गया कि जितनी भूमि पर हाथी बैठता है, उतनी भूमि से एक परिवार के लिए वर्ष भर का उत्पादन होता था। इस तरह उत्पादन अधिशेष मात्रा में था। जिसमें विविध उद्योगों के विकास को प्रेरित किया। फलतः आंतरिक एवं बाह्य व्यापार विकसित हुआ। इसी क्रम में रोम के साथ व्यापार बढ़ा। रोमन सम्राट आगस्टस के सिक्के संगम राज्य में मिलते हैं तो साथ ही अरिकामेडू नामक स्थान से रोमन बस्ती के साक्ष्य मिले हैं।

⑤. चोल राज्य में स्थित पुहार (कावेरी पट्टनम) प्रमुख बंदरगाह था जो पूर्वी तट पर था। इसके अतिरिक्त पश्चिमी तट पर नोरा, तुंडी, मुजरिश नामक बंदरगाह थे।

⑥. मसाले, रत्न एवं हाथी दांत की सामग्री निर्यात की प्रमुख वस्तु थी। कासु, कनम, पोण सोने के सिक्के थे और सीमा शुल्क को 'कस्काश' कहा जाता था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268998159

विदेशी शासक

1. इण्डोग्रीक शासक :-

→ मौर्योत्तर काल में सर्वप्रथम आने वाले विदेशी इण्डोग्रीक थे। सिक्कों के माध्यम से इनके इतिहास की जानकारी मिलती है। इण्डोग्रीक प्रथम शासक थे जिन्होंने सिक्कों पर शासकों का नाम, चित्र और उपाधियाँ तिथियाँ लिखवायी। प्रमुख इण्डोग्रीक शासक मिनान्डर था।

→ बौद्ध साहित्य में मिनान्डर को 'मिलिन्द' कहा गया है। यह बौद्ध मतानुयायी था। मिलिन्द पण्हो नामक ग्रंथ में मिनान्डर एवं बौद्ध आचार्य नागसेन के बीच वाद-विवाद का उल्लेख मिलता है।

→ मिनान्डर के सिक्कों पर धर्मचक्र अंकित है जो इसके बौद्ध मतानुयायी होने का प्रमाण है। मिनान्डर प्रथम इण्डोग्रीक शासक है जिसने सोने ~~की~~ के सिक्के चलाये, सिक्कों के लिए 'द्रम' शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है।

② शक शासक :-

मध्य एशिया से आये शकों ने भारत में अनेक शाखाओं की स्थापना की। वस्तुत: इन्होंने इण्डोग्रीक शासकों को पराजित करते हुए विभिन्न क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। तक्षशिला, मथुरा, उज्जैन, नासिक इनकी सत्ता के केन्द्र थे।

→ नासिक में शकों का 'क्षहरात वंश' का शासन था। इसी से जुड़ा हुआ एक शासक नहपान था जिसको सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी ने पराजित किया था।

→ उज्जैन में शकों का चाष्टण वंश स्थापित था। इस वंश से जुड़ा शासक रुद्रदामन था। जिसने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण कराया और इसके लिए प्रजा पर कोई अतिरिक्त कर आरोपित नहीं किया और न ही प्रजा से किसी प्रकार का बेगार कराया।

निर्माण → पुष्यगुप्त वैश्य ने (चन्द्रगुप्त मौर्य के समय)

रुद्रदामन ने संस्कृत भाषा में अभिलेख की रचना की। जिसे जूनागढ़ अभिलेख कहा जाता है। इसी में सुदर्शन झील का उल्लेख मिलता है। यह पहला विदेशी शासक था जिसने सिंचाई कार्य के विस्तार में रुचि ली।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

कुषाण वंश :-

कुषाण वंश का संस्थापक 'कुजुल कडफिसस' था। इसने तांबे के सिक्के चलाये। जिस पर 'धर्मथिद' शब्द

भक्ति मिलता है। जो इसके बौद्ध मतानुयायी होने का संकेत है।

→ ✓ कुषाण शासक विम कडफिसस ने सोने के सिक्के चलाये और सिक्कों पर शिव, नन्दी और त्रिशूल का अंकन किया। जो इसके शैव मतानुयायी होने को सूचित करता है।

→ कुषाण शासक कनिष्क का राज्याभिषेक 78 ई. में हुआ। अतः इस उपलक्ष्य में कनिष्क ने शक संवत् चलाया।

→ कनिष्क के काल में सिल्क रूट (रेशम मार्ग) पर कुषाणों का नियंत्रण था। चीन से होकर रोम जाने वाले इस मार्ग पर व्यापार में भारत बिचौलिये की भूमिका निभाता था।

→ कनिष्क के समय कश्मीर के कुण्डलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ जहाँ बौद्ध धर्म की महायान शाखा का उदय हुआ। इस तरह कनिष्क महायान बौद्ध

धर्म का संरक्षक था। कनिष्क के दरबार में अश्वघोष जैसे विद्वान और चरक जैसे चिकित्सक रहते थे।

→ ~~कनिष्क~~ कुषाणों ने गांधार मूर्तिकला को संरक्षण दिया और राजा की मूर्ति पूजा का प्रचलन कराया। कुषाण 'देवपुत्र' की उपाधि लेते थे।

जय बजरंग बली
Date 02/01/2016

गुप्त काल (319 ई० – 550 ई०)

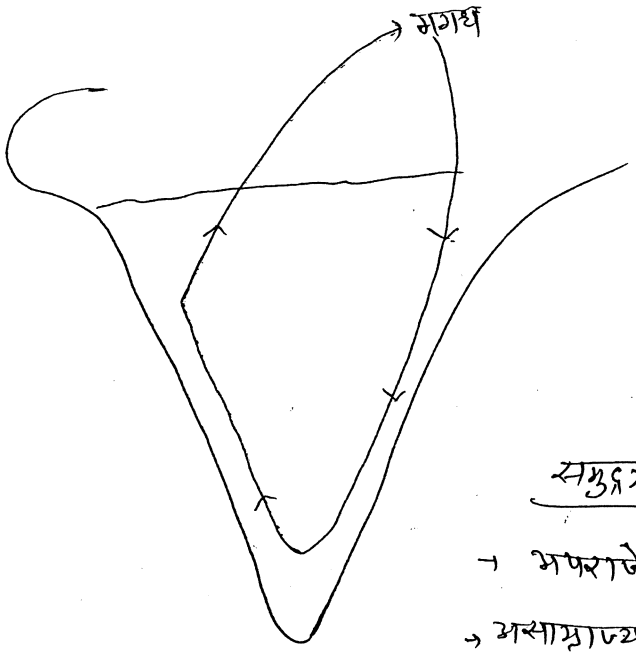

समुद्रगुप्त	नेपोलियन
→ अपराजेय	पराजेय
→ असाम्राज्यवादी	साम्राज्यवादी

चन्द्रगुप्त-II

→ फाह्यान → घुमा घूत के बताया।

→ नौ रत्न

गुप्त राजवंश

श्रीगुप्त :- श्रीगुप्त गुप्त वंश का संस्थापक था। गुप्त शासक कुषाणों के सामंत थे।

चन्द्रगुप्त प्रथम :- 319 ई० में चन्द्रगुप्त I ने अपने राज्याभिषेक के साथ ही गुप्त संवत की शुरुआत की। इसने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी के साथ विवाह किया। अत: इससे उत्पन्न पुत्र समुद्रगुप्त को लिच्छवि दौहित्र कहा गया।

चन्द्रगुप्त-I

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

समुद्रगुप्त :- समुद्रगुप्त एक यथार्थवादी शासक था। उसने निम्नलिखित उपाधियाँ धारण की—

अश्वमेध पराक्रम, समरशत, सर्वराज्योच्छेत्ता, काच।

इसके विभिन्न सैन्य अभियान और नीतियाँ :-

समुद्रगुप्त के सैन्य अभियानों की जानकारी 'हरिषेण' द्वारा लिखे गये 'प्रयाग प्रशस्ति' से मिलती है। संस्कृत

भाषा में लिखे गये इस अभिलेख में समुद्रगुप्त के अश्वमेध यज्ञ करने का उल्लेख नहीं है तो साथ ही मृत्यु का भी वर्णन नहीं है।

(i) राज्यप्रसभोद्धरण की नीति (सभ्यों को मिलाने की नीति)

समुद्र गुप्त ने आर्यावर्त का अभियान कर मगध के आसपास के राज्यों को पराजित कर उन्हें अपने राज्य में मिलाया।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY 98159

(ii) सर्वकरदानाज्ञकरण की नीति :-

सीमांत क्षेत्रों को में राज्यों को पराजित कर यह नीति अपनाई गई। जिसके तहत उनसे कर प्राप्त किया गया।

(iii) परिचारिकीकृत नीति (-दास / सेवक बनाने की नीति) :-

आटविक जातियों को पराजित कर उन्हें दास बनाने की नीति अपनाई।

(iv) ग्रहणमोक्षानुग्रह की नीति :-

दक्षिणी राज्यों के 12 राजाओं के संघ को पराजित कर उनके राज्य पुनः उनको सौंप दिये गये और इन राज्यों ने गुप्तों की अधीनता स्वीकार कर उन्हें प्रचुर धनराशि दिया। यही नीति आगे चलकर दक्षिणी राज्यों के संबंध में अलाउद्दीन खिलजी ने अपनाई और उसकी यह नीति भी सफल रही।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268096159

(v) कन्योपायन की नीति :→

विदेशियों को पराजित कर उनकी कन्याओं का विवाह गुप्त वंश में करना और गुप्त शासकों की 'गरुड़' मुहर का प्रयोग करने की उन्हें अनुमति देना शामिल था।

→ समुद्रगुप्त को उसके सिक्कों पर वीणा बजाते हुये दर्शाया गया है, जो उसके संगीत प्रेमी होने के दृष्टिकोण का सूचक है। समुद्रगुप्त को 'कविराज' भी कहा गया है, जो उसकी साहित्यिक अभिरुचि का प्रमाण है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय

अन्य नाम → देवश्री
→ देवराज
→ देवगुप्त

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

① चन्द्रगुप्त II ने नागवंश की राजकुमारी कुबेरनाग से विवाह किया। तो वाकाटकवंश में अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह किया और कदम्बवंश में अपने पुत्र कुमारगुप्त का विवाह किया। इन वैवाहिक संबंधों से गुप्त राज्य के विस्तार में सहायता मिली।

② चन्द्रगुप्त II ने पश्चिमी भारत में वाकाटकवंश के सहयोग से शकों को पराजित किया और इस विजय के उपलक्ष्य में चांदी का सिक्का जारी किया।

③ चन्द्रगुप्त II ने मेहरौली में लौह स्तंभ का निर्माण किया। इसके दरबार में 'नवरत्न' रहते थे। जिनमें प्रमुख हैं — कालिदास, वराहमिहिर, अमरसिंह, धनवंतरि आदि। इसके दरबार में चीनी यात्री फाह्यान आया और लगभग 399 से 414 ई० तक रहा।

फाह्यान :- 1. फाह्यान का बचपन का नाम कुंकु था। इसका उद्देश्य भारत में बौद्ध धर्म से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन करना था। फाह्यान ने कहा कि मध्य देश के लोग सुखी थे। मकानों का पंजीकरण नहीं होता था। दण्ड विधान मृदु थे। मृत्युदण्ड की सजा नहीं दी जाती थी। मांस, मदिरा, प्याज, लहसुन का प्रयोग नहीं होता था।

2. फाह्यान ने चण्डालों का विस्तृत विवरण देते हुए कहा कि जब वे नगर में प्रवेश करते थे तो उन्हें डण्डे से आवाज करते हुए चलना पड़ता था ताकि लोग मार्ग से हट जायें और अपवित्र होने से बच जाएं। इस तरह समाज में मौजूद अस्पृश्यता का पता चलता है।

3. फाह्यान ने कहा कि लेन-देन में लोग 'कौड़ियों' का प्रयोग करते थे तथा अखिल कपिलवस्तु, कुशीनगर एवं श्रावस्ती नगर उजड़ गये थे।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

4. फाह्यान ने चीन पहुँचकर अपनी पुस्तक फो-क्यो-कि नाम से लिखा। इस पुस्तक में किसी गुप्त शासक का नाम नहीं मिलता है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

कुमारगुप्त प्रथम :-

↳ उपाधि :- महेन्द्रादित्य

1. कुमारगुप्त ने भी अश्वमेध यज्ञ किया था। यह 'कार्तिकेय' का उपासक था और इसने मयूर शैली के सिक्के चलाये।

2. कुमारगुप्त ने नालंदा महाविहार की स्थापना की, जिसे नालंदा विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।

3. कुमार गुप्त के समय मंदसौर अभिलेख की रचना इसके दरबारी लेखक वत्सभट्टी ने की। जिसमें यह उल्लेख है कि रेशम बुनकरों की श्रेणी ने अपने व्यवसाय को छोड़ दिया और धनुष बाण बनाने लगे। अर्थात इस विषय से भारत-रोम व्यापार में गिरावट का पता चलता है क्योंकि रोम इस रेशम का प्रमुख खरीदार था।

मंदसौर अभिलेख

स्कन्दगुप्त :→

1. स्कन्दगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि इसने 'हूण' नामक विदेशी जाति को पराजित किया था। इसी अभिलेख में जूनागढ़ के गवर्नर पर्णदत्त और उसके पुत्र चक्रपालित (गिरनार का प्रशासक) का उल्लेख है जिसने सुदर्शन झील की मरम्मत कराई।

2. स्कन्दगुप्त के एक भीतरी स्तम्भ लेख में स्कन्दगुप्त एवं हूणों के बीच भयंकर युद्ध का वर्णन है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

नरसिंहगुप्त बालादित्य :-

यह बौद्ध मतानुयायी था। इसने हूण शासक मिहिरकुल को पराजित किया जो शैव मतानुयायी था।

भानुगुप्त :- मध्य प्रदेश में स्थित 'ऐरण अभिलेख' भानुगुप्त का है जिसमें पहली बार सतीप्रथा का उल्लेख मिलता है। इस तरह भारत में सतीप्रथा की जानकारी का यह प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य है।

गुप्त प्रशासन

गुप्त प्रशासन का स्वरूप केन्द्रीकृत नहीं था। अधिकारियो का वेतन नकद एवं भू-राजस्व दोनों में दिया जाता था।

कुमारामात्य :- सर्वोच्च प्रशासनिक वर्ग

संधिविग्रहक :- युद्ध एवं शांति का मंत्री (विदेश मंत्री)

दण्डपासिक :- पुलिस अधिकारी

ध्रुवाधिकरण :- राजस्व अधिकारी

प्रांत :- भुक्ति

प्रांतपति :- उपरिक

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY

※ गुप्त कालीन नगर प्रशासन में स्थानीय परिषद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। जिसमें व्यावसायिक समूह की भागीदारी थी। नगर परिषद में शामिल थे-

(i) नगरश्रेष्ठि :- नगर श्रेणी का प्रधान

(ii) सार्थवाह :- व्यापारिक काफिले का प्रधान
↓
नेतृत्वकर्ता

प्रथम कुलिक :- प्रधान शिल्पी

प्रथम कायस्थ :- प्रधान लेखक

→ गुप्तकाल में पहली बार दिवानी और फौजदारी कानूनों की विस्तृत व्याख्या की गई और प्रथम विधि ~~निर्मि~~ निर्माता बृहस्पति को माना गया।

गुप्तकालीन समाज

ब्राह्मण – क्षत्रिय – वैश्य – शूद्र

दिव्यपरीक्षा

ब्राह्मण ↓ तुला

क्षत्रिय ↓ अग्नि

वैश्य ↓ जल

शूद्र ↓ विष

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

कायस्थ
↓
करणिक (लेखक)
↓
भूमि दान से इनकी महत्ता बढ़ी

टकराव (ब्राह्मण ↔ वैश्य) → कायस्थ

ब्राह्मण – क्षत्रिय – वैश्य – शूद्र
(द्विज: ब्राह्मण – क्षत्रिय – वैश्य)

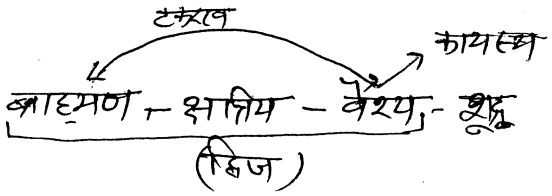

1. गुप्तकालीन समाज में चतु:वर्ण व्यवस्था मौजूद थी और अनेक उपजातियों का विकास भी हुआ। इसी क्रम में ब्राह्मणों की उपजातियाँ भी सामने आयी। गुजरात में नागर ब्राह्मण, राजस्थान में श्रीमाली ब्राह्मण।

2. वर्ण व्यवस्था के आधार पर न्याय किया जाता था और दण्ड में वर्ण भेद कायम था। जहाँ चोरी करने पर ब्राह्मण को सर्वाधिक दण्ड और शूद्र को सबसे कम दण्ड दिया जाता था जबकि हत्या के आरोपी शूद्र को कठोर दण्ड और ब्राह्मण को न्यूनतम दण्ड मिलता था और इसके लिए दिव्य परीक्षा भी ली जाती थी जो क्रमश: तुला, अग्नि, जल और विष के साथ क्रमश: चारों वर्णों के लिए रखी जाती थी।

3. इस काल में भूमि दान के कारण कायस्थ जाति का उद्‌भव हुआ। वस्तुत: पहले इन्हें करणिक कहा जाता था और ये लेखन कार्य से जुड़े हुए थे। भूमि की प्रवृत्ति बढ़ने से उससे संबंधित कर आकड़ों को सुरक्षित रखने

के क्रम में करणिक का महत्व बढ़ा और वे कायस्थ जाति के रूप में सामने आये। कायस्थ जाति के उदय से ब्राह्मणों को चुनौति मिली। अत: दोनों के बीच तनाव बढ़ा।

4. गुप्त काल में महतो (महत्तर) जाति का उदय हुआ। ये पहले गांव के मुखिया के रूप में कार्य करते थे और गांव के संबंध में विभिन्न मुद्दों पर इनकी सलाह ली जाती थी।

5. गुप्तकाल में दास प्रथा मौजूद थी किन्तु दूसरी ओर इस काल के स्मृतिकार नारद ने दासत्व मुक्ति का उपाय भी प्रस्तुत किया जो इस काल में दासप्रथा के कमजोर होने का संकेत करता है। वस्तुत: भूमिदान के कारण भूमि का विखण्डन होने से दासों की उपयोगिता कम होने लगी।

6. गुप्त काल में महिलाओं की दशा में गिरावट आयी। सतीप्रथा आरम्भ हुई तो साथ ही बाल विवाह, देवदासी प्रथा भी प्रचलित थी। कालिदास के ग्रंथ मेघदूत में

उज्जैन के महाकाल मंदिर में देवदासी रखे जाने का उल्लेख मिलता है। इसी तरह समाज में पर्दाप्रथा भी प्रचलित थी। कालिदास के ग्रंथ अभिज्ञानशाकुंतलम् में प्रयुक्त 'अवगुण्ठन' शब्द पर्दाप्रथा को सूचित करता है। इस तरह समाज की कुछ कुरीतियों के कारण इस काल को स्वर्णकाल कहना तार्किक नहीं है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

गुप्तकाल की आर्थिक दशा

रोमन साम्राज्य
↓
आरंभ → 5वीं सदी — बाद में सामंतवाद
↓तक
केन्द्रीकृत

→ गुप्तकाल में विदेशी व्यापार में गिरावट आई। क्योंकि एक तरफ केन्द्रीकृत रोमन साम्राज्य का विघटन हुआ और सामंती संस्थान का विकास हुआ तो दूसरी तरफ रोमन लोगों ने चीनियों से रेशम निर्माण कला का ज्ञान प्राप्त किया। फलतः भारतीय वस्त्रों के निर्यात में कमी आयी

और गुप्तकालीन सामंती संस्थान के विकास के कारण व्यापारिक गतिशीलता बाधित हुई। यहांतक व्यापार अवरुद्ध हुआ और उत्पादन की स्थानीय इकाईयों का उदय हुआ।

→ गुप्तकाल में किसानों पर लगने वाला कर "उद्रंग" कहलाता था। नारद ने भूमि का वर्गीकरण करते हुए उसके तीन प्रकार बताये —

1. अहोखिल भूमि :- जहाँ 1 वर्ष तक खेती न होती हो।
2. खिल भूमि :- 3 वर्ष तक खेती न होती हो।
3. वन भूमि :- 5 वर्ष ,, ,,

→ अमरसिंह द्वारा लिखित 'अमरकोष' में भूमि स्वामित्व के लिए नीवी धर्म शब्द का उल्लेख हुआ है। इसका तात्पर्य दानग्रहिता को सदा के लिए भूमि देना है (कुषणों ने इसी संदर्भ में अक्षय नीवी धर्म शब्द का प्रयोग किया)।

गुप्तकालीन संस्कृति

1. गुप्तकाल में नारद, परासर, बृहस्पति, कात्यायन ने स्मृति साहित्य की रचना की। (प्राचीनतम स्मृति मौर्योत्तर काल में लिखि गई मनु स्मृति है। ये सामाजिक विधान की पुस्तक मानी जाती है।)

2. गुप्त काल में भास नामक कवि ने "स्वप्नवासवदत्त" नामक ग्रंथ की रचना की।

3. कालिदास ने महाकाव्य के रूप में "रघुवंश एवं कुमार संभव" नामक ग्रंथ लिखा तो खंड काव्य के रूप में मेघदूत एवं ऋतुसंहार लिखा और नाटक के रूप में मालविकाग्निमित्र, विक्रमोवर्शीयम एवं अभिज्ञानशाकुंतलम् की रचना की।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

4. इस काल में आर्यभट्ट जैसे गणितज्ञ मौजूद थे। इन्होंने गणित को ज्योतिष से अलग कर एक स्वतंत्र विषय बनाया तथा चंद्रग्रहण एवं सूर्य ग्रहण के बारे

में सिद्धांत दिया। इनकी पुस्तक का नाम आर्यभटीयम है।

5. ब्रह्मगुप्त ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत ~~ने इन्हे~~ दिया इन्होंने ब्रह्मसिद्धांत एवं खण्डखाद्य नामक ग्रंथ लिखा।

6. वराहमिहिर प्रमुख ज्योतिषविद और खगोल विज्ञान के जानकार थे। इन्होंने वृहत संहिता, वृहत जातक, योगमाया नामक पुस्तक की रचना की, तो धनवंतरी प्रमुख चिकित्सक थे और शल्य चिकित्या के क्षेत्र में विशेष कार्य किया। इसी तरह नागार्जुन ने पारे की खोज की।

7. शालिहोत्रा ने अश्वशास्त्र नामक ग्रंथ लिखा। जो घोड़ो की चिकित्सा से संबंधित था तो पालक्राय ने "हस्तायुर्वेद" की रचना की जो हाथी की चिकित्सा से संबंधित थी।

गुप्तकाल की शिक्षा व्यवस्था

1. गुप्तकाल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमारगुप्त प्रथम ने की। यहाँ अध्ययन के लिए (उच्च शिक्षा) जावा, चीन, श्रीलंका, कोरिया आदि के छात्र अध्ययन के लिए आते थे। यहाँ के शिक्षक अपने ज्ञान के लिए प्रसिद्ध थे। छात्रों के लिए कठोर नियम था। जिसका पालन करना अनिवार्य था। प्रवेश परीक्षा होती थी और उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिलता था। यहाँ से स्नातक करने वाले विद्यार्थी को देश-विदेश में सम्मान प्राप्त था। यहाँ के प्रसिद्ध अध्यापक शीलभद्र, धर्मशास्त्री, गुणमति, दिग्नाग, वसुबंधु, असंग आदि थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहाँ अध्ययन किया था। इस विद्यालय में निःशुल्क शिक्षा, आवास, भोजन की व्यवस्था थी। शासकों और व्यापारियों के दान दिये गये धन से विश्वविद्यालय का खर्च चलता था। तीन बड़े पुस्तकालय रत्नोदधि, रत्नसागर, रत्नरंजक मौजूद थे।

2. नालंदा के विद्यार्थियों के द्वारा भारतीय संस्कृति और संस्कृति का वैश्विक प्रचार हुआ। तिब्बत राजा के आमंत्रण पर शांतिरक्षित एवं पद्मसंभव तिब्बत गये।

3. तक्षशिला विश्व विद्यालय से यह इस रूप में अलग है कि यहाँ निर्धारित पाठ्यक्रम, प्रवेश परीक्षा और डिग्री प्राप्त होती थी और संस्थान का कुलपति होता था जबकि तक्षशिला अनेक शिक्षण संस्थाओं का केन्द्र था और उनका कोई एक समान पाठ्यक्रम और प्रबंधन तंत्र नहीं था।

षड्दर्शन :- गुप्त काल में षड्दर्शन मौजूद थे-

1. सांख्य दर्शन :- इसके प्रतिपादक कपिल मुनि थे। यह द्वैतवादी अर्थात् प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से सृष्टि का विकास मानता है। जैन दर्शन से इसकी समानता दिखती है क्योंकि इसमें भी अनेकात्मवाद की अवधारणा मिलती है।

D. K. P[illegible] STAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

2. योग :- इसके प्रतिपादक पतंजलि थे।

3. न्याय दर्शन :- इसके प्रतिपादक अक्षपाद गौतम थे। यह तर्क पर आधारित है। इसमें मोक्ष के लिए 'अपवर्ग' शब्द का प्रयोग किया गया है। जिसका अर्थ है शरीर एवं इंद्रियों के बंधन से आत्मा का मुक्त होना। इसलिए यहाँ मोक्ष का तात्पर्य दु:ख के पूर्ण निषेध की अवस्था है।

4. वैशेषिक :- इसके प्रतिपादक उलूक कणाद है और इसे परमाणु दर्शन भी कहते हैं।

5. पूर्व मीमांसा :- इसके प्रतिपादक जैमिनी हैं। इसमें वेदों के आनुष्ठानिक कार्यों पर विशेष बल दिया गया है। इसके प्रमुख भाष्य आचार्य शबर स्वामी हैं।

6. उत्तर मीमांसा :- इसमें ज्ञान पर विशेष बल दिया गया है। इससे संबंधित बादरायण है जिन्होंने ब्रह्मसूत्र की रचना की। यह वेदों की ज्ञानमयी शाखा उपनिषद से संबंधित है। अत:

इसे 'वेदांत' भी कहते हैं।

गुप्तोत्तर काल (550 – 750 ई०)

↓

पुष्यभूति वंश (थानेश्वर राजधानी) (~~वर्धन वंश~~)

↓

वर्धन वंश

↓

प्रभाकर वर्धन

- ↓ पुत्र राज्यवर्धन
- ↓ पुत्र हर्षवर्धन (606 – 647 ई०)
  - ↳ राज्य की राजधानी ↳ कन्नौज बनायी
- ↓ पुत्री राजश्री
  - ↓ कन्नौज के मौखरी वंश में विवाह

अशोक + समुद्रगुप्त = हर्षवर्धन

- अशोक ↓ बौद्ध मतानुयायी, सांस्कृतिक कार्य (शैवमतानुयायी ↘)
- समुद्रगुप्त ↓ सैन्य अभियान

हर्षवर्धन :-

→ हर्षवर्धन ने अपने राज्य की राजधानी कन्नौज बनायी

→ हर्षवर्धन ने पुष्यभूति वंश की प्रतिष्ठा पुनः स्थापित करना और बेगाल के शासक शशांक से अपने भाई की हत्या का बदला लेना लक्ष्य बनाया।

→ हर्षवर्धन का चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के साथ लगभग 630 ई० में युद्ध हुआ। ह्वेनसांग के विवरण एवं रविकीर्ति के "ऐहोल अभिलेख" से पता चलता है कि इस युद्ध में हर्षवर्धन पराजित हुआ।

→ हर्ष ने 635-36 ई. में कश्मीर का अभियान किया और वहाँ से बुद्ध का दांत उठाकर अपने राज्य में लाया।

→ हर्ष आरंभ में शैव मतानुयायी था किन्तु आगे चलकर वह बौद्ध मतानुयायी बना। वह बौद्ध धर्म की महायान शाखा से जुड़ा हुआ था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268

→ हर्षवर्धन प्रयाग में प्रत्येक पांचवे ~~एक~~ वर्ष एक सभा का आयोजन करता था, जिसे महामोक्ष परिषद् कहा गया। इस सभा में बुद्ध, सूर्य एवं शिव की पूजा होती थी। इस सभा के उपरांत हर्षवर्धन बड़ी मात्रा में दान देता था। प्रयाग में हुई यह सभा उसके समय की छठी सभा थी।

→ हर्षवर्धन के दरबार में बाणभट्ट रहता था जिसने हर्षचरित, कादम्बरी एवं चण्डीशतक की रचना की, तो मयूर नामक विद्वान ने सूर्यशतक की रचना की। इसी तरह जयसेन नामक विद्वान ~~समय~~ स्वयं को भास एवं ~~भाली~~ कालिदास के समान बताता था।

→ हर्षवर्धन ने स्वयं प्रियदर्शिका, रत्नावली एवं नागानन्द की रचना की। (इन ग्रंथों को कुछ विद्वान कश्मीर के कवि धावक को लिखने का श्रेय देते है।)

→ ✓ हर्षवर्धन ने नालंदा विश्वविद्यालय को 100 गांवों का राजस्व दान दिया। इसके समय शीलभद्र यहाँ के कुलपति थे।

ह्वेनसांग का विवरण :-

→ हर्षवर्धन के समय चीनी यात्री ह्वेनसांग आया और इसने अपना विवरण "सी-यू-की" नाम से लिखा। ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार एवं वर्तमान शाक्यमुनी कहा गया। इसने थानेश्वर के जयगुप्त नामक विद्वान से बौद्ध शिक्षा प्राप्त की।

→ ह्वेनसांग ने कहा कि भारतीय समाज चार वर्णों में विभक्त था। जिसमें ब्राह्मण सर्वोच्च थे। समाज में सतीप्रथा प्रचलित थी। विधवा विवाह नहीं होता था और भारतीय सफेद वस्त्र धारण करते थे।

→ ह्वेनसांग ने लिखा कि पाटलिपुत्र, श्रावस्ती और कपिलवस्तु नगर नष्ट हो गये थे। कन्नौज एक समृद्ध नगर के रूप में मौजूद था। (बाणभट्ट ने कन्नौज के लिए "महोदय श्री" नाम का प्रयोग किया।)

→ ह्वेनसांग के अनुसार भारतीय दांतों पर काला, लाल निशान लगाते थे। कानों में कुण्डल धारण करते थे।

प्रयाग में प्रतिवर्ष डूबकर मरने के लिए जाते थे जो पवित्र माना जाता था।

→ ह्वेनसांग ने कहा कि दण्ड के लिए दिव्य परि-परीक्षा ली जाती थी। अपराधियों को विशेष अवसर पर क्षमा किया जाता था। सड़के सुरक्षित नहीं थी, उसने स्वयं को दो बार लूटे जाने का उल्लेख किया। व्यापारियों को चुंगी देनी पड़ती थी और शासन के व्यय को चार भागों में विभाजित किया जाता था।

→ सामान्यतः शिक्षा 9 से 30 वर्ष उम्र तक दी जाती थी, किन्तु कुछ लोग उसमें सारा जीवन लगा देते थे।

→ ✓ ह्वेनसांग ने कृषकों को शूद्र कहा है।

D.K. TOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

कश्मीर (8वीं सदी)

कार्कोट वंश

↳ संस्थापक → दुर्लभवर्धन

→ इसवंश के शासक ललितादित्य ने मार्तण्ड सूर्य मंदिर का निर्माण कराया।

उत्पल वंश :-

इसका संस्थापक अवन्तिवर्मन था। इसके मंत्री सूय्य ने सिंचाई साधनों का अत्यधिक विकास किया। यशस्कर नामक शासक को जनता द्वारा निर्वासित किया गया।

पर्वगुप्त वंश :- इसका संस्थापक पर्वगुप्त था। शासिका रानी दिद्दा (980–1003) थी, जो लोहार वंश की पुत्री थी, ने कश्मीर में प्रशासनिक सुधार करते हुए 'कर' की दरों में कमी की।

लोहार वंश :- लोहार वंश के शासक हर्ष के दरबार में 'कल्हण' नामक विद्वान रहता था किन्तु कल्हण ने शासक जयसिंह के काल में 'राजतरंगनी' नामक पुस्तक की रचना की। जिसे पहली प्रामाणिक ऐतिहासिक पुस्तक माना जाता है।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

जैनुल आबदीन (1420-70)

↳ बड़शाह (महान शासक)

जैनुलआबदीन को कश्मीर का अकबर और

अलाउद्दीन खिलजी कहते हैं। इसने अपने राज्य में भूमि की माप करवायी और वस्तुओं के मूल्य को निर्धारित किया। उद्योगों के विकास के लिए विदेशों से कारीगर मंगवाये और चावल की खेती पर बल दिया।

→ जैनुल आबदीन धार्मिक दृष्टि से एक उदार शासक था। इसने 'जजिया' कर की समाप्ति की और ऐसा करने वाला यह भारत का पहला शासक था। इसने हिन्दुओं की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें सतीप्रथा की अनुमति थी। इसके काल में जोनराज ने "द्वितीय राजतरंगनी" की रचना की।

पूर्व माध्यकाल (750 – 1200 ई०)

सामंतवाद

- अर्थ → भू-स्वामी वर्ग
- विकास
- विशेषताएं
- परिणाम
  - नकारात्मक
  - सकारात्मक

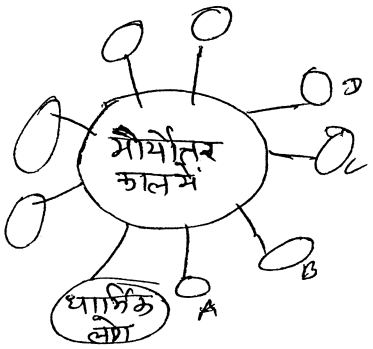

⇒ छोटी-2 इकाईयों का अस्तित्व ~~को~~ होना सामंतवाद है।

⇒ समाज में ऐसी अवधारणा का विकास होना जो प्रजा के शोषण को औचित्य प्रदान कर सके।

⇒ भूमिदान से सामंतवाद का विकास हुआ।

मौर्योत्तर काल → दानग्रहिता को राजस्व का अधिकार

गुप्तकाल → दानग्रहिता को राजस्व अधिकार + प्रशासनिक अधिकार + भू-संपदा के दोहन का अधिकार

गुप्तोत्तरकाल → " " " + प्रजा/निवासियों पर भी अधिकार

↳ उपसामंतीकरण

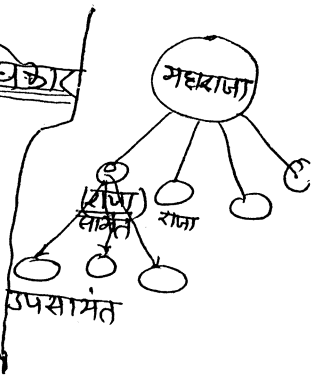

सामंतवाद
- ऊपर से सामंतवाद → राजा द्वारा दिया गया भूमिदान
- नीचे से सामंतवाद → सामंतों द्वारा दिया गया भूमिदान
  ↓
  उपसामंतीकरण

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

सामंतवाद

→ पूर्व मध्यकालीन समाज में सामंतवाद की प्रवृत्ति सर्वप्रमुख थी। सामंतवाद राजनैतिक व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक आर्थिक व्यवस्था को भी सूचित करता है। राजनैतिक क्षेत्र में अनेक छोटी-छोटी इकाईयों का जन्म हुआ तो आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन की आत्मनिर्भर स्थानीय इकाईयाँ सामने आई और व्यापारिक गतिविधियाँ सीमित हुई। मुद्रा अर्थ व्यवस्था का पतन हुआ। इस तरह बंद अर्थव्यवस्था सामने आई, तो सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र में शोषण को औचित्य प्रदान करने वाली अवधारणा विकसित हुई। इस तरह पूर्व मध्यकालीन समाज में एक नवीन वर्ग का उदय हुआ, जिसे सामंत के नाम से जाना गया। इन सामंतों के

हित भूमि से जुड़े हुए थे।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

सामंतवाद का विकास :-

→ सामंतवाद का विकास भूमि दान परम्परा से माना जाता है जिसकी शुरुआत मौर्योत्तर काल (कुषाण / सातवाहन वंश) से हुई। इस काल में भूमिदान मुख्यतः धार्मिक दृष्टिकोण से दिये जाते थे और दानग्राही को केवल राजस्व अधिकार दिया गया। यह भूमिदान राज्य के दूरवर्ती जनजातीय क्षेत्रों में दिया गया।

→ गुप्त काल में दानग्रहिता को संबंधित क्षेत्र के राजस्व के साथ-साथ वहाँ कि भू-गर्भिय संपदा के उपयोग तथा प्रशासनिक प्रशासनिक अधिकार भी दिये गये। अब इस क्षेत्र में राजा के सैनिक हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे और दानग्रहिता को न्याय एवं दण्ड का अधिकार भी दिया गया। वस्तुतः समुद्रगुप्त के सैन्य अभियान के तहत अपनाई गई नीतियों से भी सामंतवाद को बढ़ावा मिला।

→ गुप्तोत्तर काल में नौकरशाही का भी सामंतीकरण हो गया। अब दान ग्रहिता को किसानों एवं कारीगरों पर भी पूर्ण अधिकार दिया गया। इस तरह 10वीं सदी तक सामंतवाद का स्वरूप अखिल भारतीय हो गया। (पंजाब को छोड़कर)। इसी काल में उपसामंतीकरण की प्रक्रिया भी विकसित हुई। अब सामंत स्वयं भूमिदान देने लगा, जिसे नीचे से सामंतवाद के नाम से जाना जाता है।

→ सामंतवाद की विशेषताएं या अभिलक्षण :-

1. सामंत एक भू-स्वामी वर्ग है जो किसानों से राजस्व वसूली करता है और किसान उसे राजस्व देने के लिए बाध्य होता है।

2. ✓ दानग्रहिता को भूमि सदैव के लिए दी जाती थी।

3. सामंत अपने अधिकारों का पालन करवाने के लिए धार्मिक एवं कानूनी विधानों का सहारा लेते थे। जब यह अपर्याप्त

होता था, तब बल का प्रयोग करते थे।

4. सामंत अपने स्वामी का नाम अभिलेखों में अंकित करते थे और अपने परिवार की कन्या / पुत्री का विवाह भी स्वामी के यहाँ करते थे यद्यपि यह अनिवार्य नहीं था।

5. युद्ध के समय सामंत अपने स्वामी की सैनिक सहायता भी करते थे।

6. सामंतों को सेना रखने, छत्र धारण करने, मुद्रा जारी करने का भी अधिकार था और सामंत समय-समय पर राजा को उपहार भी देते थे।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

नकारात्मक परिणाम :→

→ सामंती व्यवस्था ने केन्द्रीय प्रशासन को सीमित कर दिया। राजा और प्रजा के बीच प्रत्यक्ष संबंध समाप्त हो गये। फलतः प्रजा ने अपनी निष्ठा सामंतों को स्थानांतरण कर दी। अतः सामंतों की शक्ति बढ़ी।

→ राज्यों के आपसी संबंध तनावपूर्ण हुए। वस्तुत: सामंतवाद ने युद्ध मानसिकता को जन्म दिया और सामंत आपस में संघर्ष रत हुए। अत: विदेशी आक्रमण के सम्मुख ये एक जुट होकर विरोध नहीं कर सके और पराजित हुए।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

→ सामंतों की सेना बहुरंगी या विविध संरचना से युक्त थी। अत: एक समान सैन्य रणनीति से संचालित नहीं हो सकी। फलत: आक्रमण के दौरान यह सामंती सैन्य संगठन सैनिक कमजोरी का कारण बना।

→ आर्थिक क्षेत्र में व्यापारिक गतिशीलता बाधित हुई, मौद्रिक अर्थव्यवस्था का पतन हुआ तथा नगरों का पतन हुआ। इस तरह बंद अर्थव्यवस्था का विकास हुआ।

→ सकारात्मक परिणाम :-

→ भूमिदान ने आरंभिक दौर में जनजातीय क्षेत्रों में कृषि भूमि का विस्तार किया।

→ दूरस्थ क्षेत्रों में शांति व्यवस्था बनाए रखने मे मदद मिली। क्योंकि सामंत प्रशासनिक अधिकारों से युक्त थे।

→ क्षेत्रीय भाषा, संस्कृति, नृत्य संगीत, निर्माण कार्य को प्रोत्साहन मिला। इस तरह सांस्कृतिक विकास को प्रेरणा मिली।

चोल साम्राज्य (10वीं – 12वीं सदी)

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

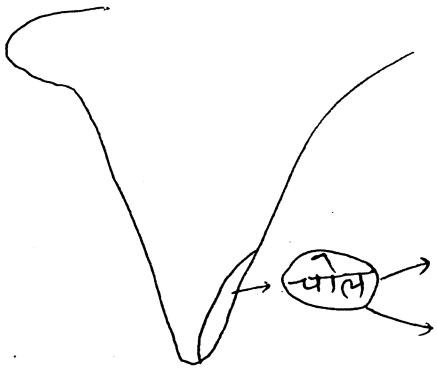

पल्लवों के सामंत थे

संस्थापक → विजयालय

चोल प्रशासन
- ऊपर के स्तर पर केन्द्रीकरण → राजा निरंकुश
- निचले / ग्राम स्वायत्तता

⇒ जानकारी के स्रोत :→

① कलिंगत्तुपर्णि → जयगोंदर ने लिखा।
इसमें शासक कुलोत्तुंग I के बारे में उल्लेख मिलता है।

② पेरियपुराणम → रचना शेक्किलार ने की थी।

③ तमिलनारायण → कबंन ने

④ उत्तरमेरूर अभिलेख → शासक परांतक I का अभिलेख है।
इसमें चोल कालीन स्थानीय स्वायत्त शासन के बारे में उल्लेख मिलता है।

→ धवलेश्वरम से चोल कालीन सोने के सिक्कों के ढेर मिले हैं। जो चोलों के बारे में आर्थिक स्थिति को सूचित करते हैं।

विजयालय :- यह चोल वंश का संस्थापक था। चोल पल्लवों के सामंत थे और इन्हें पराजित कर चोल राजवंश की स्थापना की।

→ अरमोलिवर्मन (राजराज-I) (-985-1014ई॰)

→ राजराज-I ने श्रीलंका पर हमला कर उसके उत्तरी क्षेत्र पर अधिकार किया और उसकी राजधानी अनुराधापुर ~~पर~~ को नष्ट कर दिया तथा एक नई राजधानी बनाया और क्षेत्र को मुम्माडिचोलपुरम नाम दिया।

→ राजराज ने मालदीव की विजय की और अपने साम्राज्य ~~अपने साम्रा~~ में भूमि की माप करवायी।

⇒ राजेन्द्र-I :-

→ राजेन्द्र I ने <u>संपूर्ण</u> श्रीलंका को जीता और दक्षिण-पूर्व एशिया में सैन्य अभियान कर वहाँ शैलेन्द्र वंश के शासक संग्रामविजय तुंग वर्मन को पराजित किया।

→ ✓ राजेन्द्र ने बंगाल की खाड़ी को चोल झील में परिवर्तित कर दिया अर्थात् इस क्षेत्र में एक शक्तिशाली नौ सेना गठित की।

D.K. PHOTOST
COUR
FACIL
(M) 92680

→ ✓ राजेन्द्र I ने उत्तर भारत में बंगाल का अभियान कर विजय अर्जित की। इस विजय (गंगा अभियान) के उपलक्ष्य में उसने "गंगईकोण्डचोल" की उपाधि ली और एक नई राजधानी गंगईकोण्डचोलपुरम् की स्थापना की।

→ ✓ राजेन्द्र ने चीन में दो बार दूतमण्डल भेजे।

⇒ अधिराजेन्द्र (1070ई.) :- यह जन विद्रोह में मारा गया।

⇒ कुलोत्तुंग I (1070-1120ई.)

उसने राज्य में भूमि की माप करवायी और इसलिए उसने अपने पैरों के पैरों की छाप को ईकाई बनाया तथा एक ~~दूत~~ दूत मंडल चीन भेजा।

चोल प्रशासन

→ चोल साम्राज्य में वंशानुगत राजतंत्र मौजूद था। राजाओं की मूर्तियाँ मंदिरों में स्थापित की जाती थी। (राजाओं की प्रतिमा पूजा कुषाणों ने शुरू की थी)

→ युवराज का चयन राजा के जीवनकाल में ही हो जाता था। उच्च श्रेणी का अधिकारी पेरुन्दनम तथा निम्न श्रेणी का अधिकारी सिरुन्दनम कहलाता था।

प्रशासनिक इकाई :-

मंडलम → वलनाड / कोट्टम → नाडु → कुर्रम → उर

↓ ↓ ↓ ↓ ↓

पंत कमिश्नरी जिला गाँवोंका समूह ग्राम

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

स्थानीय स्वायत्त शासन :-

उर :- यह साधारण ग्रामीण संस्था थी जिसमें गांव गांव के लोग सदस्य होते थे। कभी-कभी एक गांव में दो 'उर' भी हो सकती थी। इसका प्रमुख कार्य सार्वजनिक हित के लिए तालाब बनवाना और भूमि का अधिग्रहण करना था।

सभा / महासभा :- यह मूलतः ब्राह्मण बस्तियों (अग्रहार/ ब्रह्मदेव) की संस्था थी। सभा को पेरुन्गुरि तथा सदस्यों को पेरुन्मकल कहते थे। सभा अपनी

समितियों (वारियम) के माध्यम से कार्य करती थी और वारियम के सदस्यों का निर्वाचन होता था। निर्वाचन के लिए निम्न लिखित योग्यताएँ रखी गई थी।

(i) गांव का स्थाई निवासी हो।
(ii) 35 से 70 वर्ष के बीच उम्र हो।
(iii) कम से कम 1.5 एकड़ की भूमि का मालिक हो और भूमि पर अपना मकान हो।
(iv) वैदिक मंत्रों का ज्ञाता हो।

अयोग्यता के प्रावधान

(i) आय-व्यय का हिसाब न दिया हो।
(ii) लगातार तीन वर्षों तक किसी समिति का सदस्य रहा हो
(iii) चोरी एवं पाप कर्मों का भागीदार हो।

⇒ निर्वाचन प्रक्रिया :-

योग्य व्यक्ति का नाम अलग-अलग लिखकर उसे किसी एक पात्र/बर्तन में रखा जाता था और फिर एक बच्चे द्वारा उनमें से एक नाम की ~~पर्ची~~ पर्ची निकाली जाती थी अर्थात् निर्वाचन की लॉटरी प्रणाली मौजूद थी। इस प्रकार कुल 30 व्यक्ति चुने जाते थे.

जिन्हें विभिन्न समितियों में रखा जाता था। जैसे-

(i) समवत्सर वारियम :- विद्वानों की समिति

(ii) तोट्टा वारियम :- उपवन समिति

(iii) एन वारियम :- सिंचाई समिति

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098156

सभा के कार्य :-

(i) गांव की समस्त सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत भूमि तथा जंगलों पर नियंत्रण रखना।

(ii) भूमि संबंधी विवादों का निपटारा करना।

(iii) ग्रामवासियों पर कर लगाना और वसूलना।

(iv) मंदिर तथा शिक्षण संस्थाओं का प्रबंधन करना।

(v) पेय जल तथा सिंचाई और विभिन्न मार्गों के निर्माण की व्यवस्था करना।

→ बैठक :- बैठक प्रायः गांव के मंदिर में या तालाब के किनारे या पेड़ के नीचे आयोजित होती थी। समय, तिथि एवं स्थान की सूचना ग्रामवासियों को ढोल पीटकर दी जाती थी। इस तरह चोल कालीन सभाएँ जनतांत्रिक स्वरूप लिये हुए थी।

शासन की सीमाएँ :-

(i) लॉटरी पद्धति से निर्वाचन करना जनतांत्रिक स्वरूप को सीमित करता है।

(ii) निर्वाचन के लिए भूमि का स्वामी होना भी कुलीन तंत्र को सूचित करता है।

निष्कर्ष :-

इन सीमाओं के बाद भी चोल स्थानीय स्वायत्त शासन प्रगतिशीलता से युक्त है। ग्राम सभाओं को शासन का अधिकार दिया जाना आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है।

नगरम् :- यह व्यापारियों से संबंधित संस्था थी जो ग्रामीण - नगर संबंध स्थापित करती थी।

मध्यकाल

- दिल्ली सल्तनत (1206 – 1526)
- मुगलकाल (1526 – 1857)

इस्लाम का प्रमुख → खलीफा

- धार्मिक प्रमुख → इस्लाम धर्म
- राजनीतिक प्रमुख → सैन्य अभियान → तलवार के बल से → जीते गये क्षेत्रों में गवर्नर की नियुक्ति → 'सुल्तान' कहलाते थे

शासक → मुस्लिम → सत्ता ← साध्य

साधन → धर्म का प्रयोग

प्रजा → मुस्लिम, गैर मुस्लिम → ज्यादा थी

'जजिया कर' इस्लाम धर्म के लिए सैन्य शुल्क के रूप में गैर मुस्लिमों से लिया जाता था।

खिलजी वंश (1290–1320) → तुगलक वंश (1320–1414) → सैय्यद वंश (1414–51) → लोदी वंश (1451–1526)

शासन (सुल्तान)

अमीर वर्ग → नौकरशाही

उलेमा → धार्मिक तत्व

→ रजिया सुल्तान ने दोनों को असंतुष्ट किया। (उलेमा एवं अमीर वर्ग को)

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY

1. जानकारी के स्रोत :-

1. चचनामा :- लेखक अज्ञात
   → इससे अरबों की सिंध विजय पर प्रकाश पड़ता है।

2. किताबुल हिन्द (तहकीक-ए-हिन्द) :- लेखक अलबरूनी है, जो महमूद गजनवी के साथ भारत आया।

3. किताब-उल-यामिनी : लेखक उत्बी (गजनवी का सचिव)

4. तारीख-ए-जहाँगुशा :- लेखक जुवैनी

5. सियासतनामा :- → लेखक निजामुल मुल्क तुसी
   ↳ इसमें इक्ता व्यवस्था के बारे में वर्णन है।

6. ताज-उल मासिर :- लेखक हसन निजामी
   → यह दिल्ली सल्तनत का पहला सरकारी सेक्युलर है।

7. तबकात-ए-नासिरी :- लेखक मिनहाज उस सिराज

अमीर खुसरो

- आशिका (देवल देवी – खिज्र खां)
- खजायन उलफुतूह → इसमें अलाउद्दीन खिलजी के दक्कन अभियान का वर्णन है।
- नूह सिपिहर : इसमें भारत की प्रकृति/जलवायु का वर्णन है।
- तुगलकनामा :- इसमें गयासुद्दीन तुगलक का वर्णन है।

बरनी

- फतवा-ए-जहाँदारी :- यह राजनीतिक सिद्धांत की पुस्तक है।
- तारीख-ए-फिरोजशाही

शम्स-ए सिराज अफीक → तारीख-ए-फिरोजशाही पुस्तक

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

दिल्ली सल्तनत

⇒ कुतबुद्दीन ऐबक (1206-10) :-

→ उदारता के कारण ऐबक को 'लाखबख्श' कहा जाता था। इसने लाहौर में अपनी राजधानी बनायी। इसने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की बल्कि 'सिपहसलार' की उपाधि ली। बहुत सुरीला गाने के कारण इसे 'कुरान खवां' कहा गया।

→ ✓ 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते हुए इसकी मृत्यु हो गई।

⇒ इल्तुतमिश (1211-36)

→ दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिश था। इसके समय में मंगोल चंगेज खां ने मध्य एशिया के शासक जलालुद्दीन मांगबर्नी का पीछा करते हुए सिंधु क्षेत्र तक आया। मांगबर्नी ने इल्तुतमिश से शरण मांगी जो नहीं दी गई। इस तरह इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत को मंगोल आक्रमण से बचाया।

(इसको समाप्त बलबन ने किया)

✓ इल्तुतमिश ने "तुर्क-ए-चहलगानी" (चालीसा दल) का गठन किया। यह ~~अ~~ उसके निष्ठावान अमीरों का दल था।

→ ✓ इल्तुतमिश ने शुद्ध चांदी का सिक्का 'टका' और तांबे का 'जीतल' नामक सिक्का चलाया तथा सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाने की परम्परा शुरू की। इसने दिल्ली को राजधानी बनाया और "इक्ता व्यवस्था" को सुदृढ़ रूप दिया।

→ ✓ यह दिल्ली सल्तनत का पहला वैधानिक सुल्तान था। इसने खलीफा से अपने पद की स्वीकृति प्राप्त की।

→ इल्तुतमिश ने अपने दरबार में ईरानी रीति रिवाजों को आरंभ किया, शिक्षा के लिए मदरसा बनवाया और कुतुब मिनार के निर्माण कार्य को पूरा किया। उसने सुल्तानगढ़ी में एक मकबरा बनवाया जो भारत में निर्मित पहला मकबरा था।

↓ इल्तुतमिश ने बनवाया

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

रजिया (1236-40)

→ इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। किन्तु इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद रुक्नुद्दीन फिरोज ने गद्दी पर नियंत्रण किया। अत: रजिया ने लाल वस्त्र धारण कर दिल्ली की जनता से न्याय मांगा और सत्ता प्राप्त की।

→ रजिया ने पर्दा प्रथा त्यागकर पुरुष वेश धारण कर दरबार लगाया। फलत: तुर्की अमीर और रजिया के बीच मतभेद बढ़े। वस्तुत: रजिया ने भी अपनी नौकरशाही में गैर तुर्की लोगों को भी नियुक्त किया। अत: अमीर असंतुष्ट हुए। ऐसे में अमीर और कुछ उलेमा दोनों ने विद्रोह को प्रोत्साहित किया। इसी क्रम में कैथल में रजिया मारी गई। मिनहाज ने लिखा कि "रजिया में एक शासक के सभी गुण मौजूद थे किन्तु महिला होना उसका अवगुण बन गया।"

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268

बहरामशाह (1240-42)

→ इसके समय में तेर बहादुर के नेतृत्व में पहला मंगोल आक्रमण दिल्ली सल्तनत पर हुआ।
(बहरामशाह के शासन काल में)

→ इसने नाइब-ए-ममलिकात का पद बनाया और इस पद पर सर्वप्रथम इख्तियार उद्दीन ऐतगीन को नियुक्त किया।

अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46)

नसीरुद्दीन महमूद (1246-66)

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

→ नसीरुद्दीन महमूद बलबन के सहयोग से गद्दी पर बैठा। अतः नाइब-ए-ममलिकात के पद पर बलबन को नियुक्त किया, किन्तु भारतीय मुसलमानों के एक दल ने रेहान के नेतृत्व में बलबन का विरोध किया गया।

→ इस्लाम धर्म के प्रति निष्ठा और सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करने के कारण मिनहाज-उस-सिराज ने नसीरुद्दीन महमूद को एक आदर्श सुल्तान कहा।

बलबन (1266-86)

→ तुर्क-ए-चहलगानी को समाप्त किया।
↳ प्रारंभ → इल्तुतमिश ने)

राजत्व सिद्धांत

↓

शासक नियाबत खुदाई
(अर्थात् भगवान की परछाई)

→ रक्त की शुद्धता का सिद्धांत दिया।

→ इसने अपने-आपको ईरान के अफरा सियाज का वंशज बताया।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268008159.

⇒ बलबन के समक्ष समस्याएं :→

→ तुर्क-ए-~~चा~~-चहलगानी या
~~चालिस~~ चालीसा दल अत्यधिक शक्तिशाली हो गया था जो दरबारी ~~गुज~~ गुटबंदी को बढ़ावा दे रहा था। इससे सुल्तान के पद की प्रतिष्ठा कम हो गई थी।

→ बंगाल के विद्रोह की समस्या थी।

→ दिल्ली के आस-पास मेवाती समूह कानून व्यवस्था की समस्या उत्पन्न कर रहा था तो साथ ही राजपूतों के विद्रोह की भी समस्या थी।

→ मंगोल आक्रमण की भी समस्या ~~भी~~ थी।

समाधान :-

→ बलबन ने तुर्क-ए-चहलगानी को समाप्त कर दिया।

→ बलबन दिल्ली का प्रथम सुल्तान था जिसने पहलीबार 'राजत्व सिद्धांत' की व्याख्या की। इसके तहत कहा कि सुल्तान का पद ईश्वर प्रदत्त है। अत: सुल्तान ईश्वर की छाया है। वह नियाबत-ए-खुदाई है, इसलिए सुल्तान की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता। इसी क्रम में बलबन ने 'जिल्लेइलाही' की उपाधि ली।

→ बलबन ने दरबार को ~~मासीम~~ ~~ग्रामिा~~ ~~श्रों~~ बनाने के लिए अमीरों को अनुशासित किया और ईरानी दरबार की परम्परा को अपने यहाँ लागू किया। इसी क्रम में सिजदा, पाबोस और कर्निस की परम्परा लागू की तथा 'नौरोज' त्योहार मनाया। बलबन ने रक्त की शुद्धता पर बल देकर स्वयं को ईरान के अफरासियाब का वंशज घोषित किया और निम्न कुल के व्यक्ति के लिए दरबार के दरवाजे बंद कर दिये। उसने कहा कि

"जब मैं निम्न कुल के किसी व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरी आंखें क्रोध से जलने लगती है और मेरा हाथ तलवार पर चला जाता है।" ← बलबन ने कहा था

→ बलबन ने बंगाल के तुगरिल खां के विद्रोह को दबाने के लिए स्वयं अभियान किया। यह दिल्ली के बहुत बाहर बलबन का पहला एवं अंतिम अभियान था और तुगरिल खां को मारकर उसने विद्रोह का दमन किया।

→ इसी तरह मेवातियों की समस्या को दूर करने के लिए बलबन ने जंगलों को काटकर साफ करवाया और वहाँ सैन्य छावनी का निर्माण कराया। वस्तुतः मेवाती दिल्ली के आस-पास लूट-पाट कर अव्यवस्था फैलाते थे।

→ इसी तरह मंगोल आक्रमण से बचने के लिए बलबन ने मंगोलों के यहाँ दूत मंडल भेजा, साथ ही अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमा लाहौर और मुल्तान की सुरक्षा के लिए अपने पुत्र शाहजादा मोहम्मद को नियुक्त किया, किन्तु 1285 में मंगोल नेता तमर के नेतृत्व में हुए आक्रमण में शाहजादा मारा गया।

→ बलबन ने दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग) की स्थापना की।

→ बलबन ने कहा कि जब तक अपना राज्य असुरक्षित है तब तक विदेशी भूमि पर आक्रमण करना उचित नहीं है। इस तरह उसने विस्तारवादी नीति नहीं अपनाई।

→ बरनी ने लिखा कि बलबन की मृत्यु से दुःखी अमीरों ने अपने वस्त्र फाड़ डाले और 40 दिन तक भूमि पर सोये।

→ बलबन का उत्तराधिकारी केकुबाद और तत्पश्चात् क्यूमर्स हुआ। क्यूमर्स का संरक्षक जलालुद्दीन खिलजी था जिसने क्यूमर्स की हत्या कर खिलजी वंश की नींव डाली।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

खिलजी वंश

अलाउद्दीन खिलजी
↓
भूमिमाप की पद्धति की शुरूआत की।
↓
50% भूराजस्व लागू की दिया

भू-राजस्व सुधार

उद्देश्य :–
- राजकीय आय में वृद्धि
- मध्यस्थों का अंत
- धन का संकेन्द्रण रोकना

→ अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार नियंत्रित पद्धति की शुरूआत की।

भू-राजस्व बढ़ाने पर भी विद्रोह न होने का कारण –

पहले थी

सुल्तान/राज्य
↑ 33%
जमींदार
↑ 33% + 50%
कृषक

बाद में मध्यस्थों (जमींदारों) को समाप्त कर दिया। और भू-राजस्व 50% कर दिया।

जलालुद्दीन खिलजी (1290-96)

→ जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की। उसने कहा कि 'शासन का आधार शासितों की इच्छा' है।

→ जलालुद्दीन खिलजी ने दीवान-ए-वकूफ (व्यय विभाग) की स्थापना की। इसकी हत्या कर अलाउद्दीन खिलजी ने सत्ता पर नियंत्रण किया।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316)

→ इसके बचपन का नाम अलीगुरशस्प था। इसने दिल्ली के लाल महल (बलबन ने बनवाया था) में अपना राज्याभिषेक किया और खलीफा से अपने पद की स्वीकृति ली। इसी क्रम में यामिन-उल-खिलाफत की उपाधि ली। अलाउद्दीन के पास चार प्रमुख ~~योद्धा~~ योद्धा थे जिनकी तुलना वह पैगम्बर के चार खलीफा से करता था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

→ अलाउद्दीन सिकन्दर के समान विश्व विजय का लक्ष्य रखा और सिकन्दर - ए - सानी (द्वितीय सिकन्दर) की उपाधि ली।

→ गुजरात अभियान कर शासक रायकर्ण बघेल को पराजित किया। इस अभियान में उसने 1000 ~~दिनार~~ दीनार में मलिक काफूर को खरीदा। अतः 'मलिक काफूर' को "हजार दीनारी" कहा गया।

→ अलाउद्दीन ने रणथम्भौर का अभियान किया। इस अभियान में अमीर खुसरो शामिल थे। खुसरो ने यहाँ राजपूत स्त्रियों द्वारा किये गये जौहर का वर्णन किया।

→ अलाउद्दीन ने 1303 ई० में चित्तौड़ का अभियान किया खुसरो भी इस अभियान में था। चित्तौड़ के गोरा-बादल नामक वीर योद्धा की कहानी भी जुड़ी है। चित्तौड़ को जीतकर अलाउद्दीन ने इसे अपने ~~अपने~~ पुत्र खिज्र खां को सौंप दिया और इसका नाम खिज्राबाद रखा।

→ ✓ अलाउद्दीन पहला दिल्ली सुल्तान था जिसने दक्षिण भारत का अभियान किया। यह अभियान मलिक काफूर के नेतृत्व में भेजा गया। दक्षिण के चार प्रमुख राज्यों देवगिरी, वारंगल, होयसल और पाण्ड्य राज्यों को पराजित कर उनसे धन प्राप्त कर उनके राज्यों को वापस कर दिया गया। यह नीति समुद्रगुप्त के नीति के समान दिखाई पड़ती है।

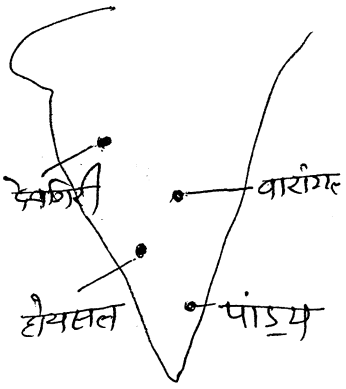

→ ✓ अलाउद्दीन के काल में सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। 1299 में कुतलग ख्वाजा के नेतृत्व में दिल्ली तक मंगोलों ने आक्रमण किया।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268099159

→ // अलाउद्दीन खिलजी पहला दिल्ली सुल्तान था जिसने राजनीति और धर्म का पृथक्करण किया। उसने कहा कि "मैं नहीं जानता कि शरियत में क्या लिखा है, मैं वही करता हूँ जो राज्य के हित में उचित समझता हूँ।" इसी क्रम में उसने जवाबित (धर्म निरपेक्ष कानून) बनाये।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

भू- राजस्व सुधार :-

उद्देश्य :→ (i) राजकीय आय में वृद्धि करना।

(ii) मध्यस्थों का अंत करना एवं धन का संकेन्द्रण रोकना।

गतिविधियाँ /कार्य :-

→ अलाउद्दीन पहला दिल्ली सुल्तान था जिसने भूमि की पैमाइश करायी और माप के लिए 'बिस्वा' को आधार बनाया। अलाउद्दीन की भूमि माप की यह पद्धति 'मसाहत' के नाम से जानी जाती है।

→ अलाउद्दीन ने खूत, मुक्कदम, चौधरी जैसे मध्यस्थों का अंत कर दिया और उनकी भूमि पर कर लगा दिया। उसने भू-राजस्व की राशि 50% निर्धारित की जो दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक थी। इसके अतिरिक्त उसने 'चरी कर' (चारागाह शुल्क) तथा 'घरी कर' (आवास शुल्क) भी प्राप्त किया।

1. गल्ला मंडी (अनाज का बाजार) :- इसका प्रमुख ~~शहना~~ शहना-ए-मंडी कहलाता था।

2. सराय अदल (वस्त्रों का बाजार)

D.K PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

3. मवेशी / पशु / दासों का बाजार

→ इस बाजार में वस्तुओं का मूल्य निर्धारित [अलाउद्दीन खिलजी ने] किया गया और पूरे बाजार व्यवस्था के लिए <u>दीवान-ए-रियासत</u> विभाग की स्थापना की गई। कालाबाजारी रोकने के लिये '<u>रायपरवाना</u>' पदाधिकारी नियुक्त किया गया जो परमिट जारी करता था जिससे कि लोग निर्धारित मात्रा में ही वस्तुएँ प्राप्त कर सकें।

→ यह बाजार नियंत्रण व्यवस्था दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में लागू थी। उसकी वस्तुओं के मूल्य निर्धारण पद्धति से व्यापारियों को हानि हुई।

→ अलाउद्दीन खिलजी ने बकाया भू-राजस्व वसूली के लिए दीवान-ए-मुस्तखराज की स्थापना की।

→ इसने धन के माध्यम से स्थायी सेना का निर्माण कर सैनिकों को नगद वेतन देना प्रारंभ किया और सैन्य व्यवस्था में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए दाग एवं हुलिया प्रथा की शुरूआत की।

दाग ↓ (घोड़े के पहचान के लिए)

हुलिया ↓ (सैनिकों की पहचान के लिए)

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 92[illegible]159

→ अलाउद्दीन ने युद्ध में लूट का भाग (खम्स) सैनिकों के लिए 1/5 और राज्य के लिए 4/5 निर्धारित किया।

बाजार नियंत्रण नीति

→ अलाउद्दीन खिलजी ने सैनिक हितों से परिचालित होकर बाजार नियंत्रण व्यवस्था लागू की।

→ इस व्यवस्था के तहत उसने विभिन्न बाजार बनाये +

मुबारक खिलजी (1316–20)

→ यह पहला दिल्ली सुल्तान था जिसने स्वयं को खलीफा कहा। इसने देवगिरी को दिल्ली सल्तनत में मिलाकर इसका नाम कुतुबाबाद रखा।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

तुगलक वंश

स्थापना → गयासुद्दीन तुगलक

गयासुद्दीन तुगलक (1320–25)

→ गयासुद्दीन तुगलक पहला सुल्तान था जिसने उत्पादन वृद्धि द्वारा (हासिल) राजकीय आय बढ़ने की बात की।

→ गयासुद्दीन प्रथम दिल्ली सुल्तान था जिसने सिंचाई व्यवस्था के लिए नहर निर्माण करवाया और डाक व्यवस्था को आरंभ किया। दिल्ली के पास तुगलकाबाद का किला बनवाया।

→ गयासुद्दीन तुगलक का सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के साथ विवाद हुआ। इसी क्रम में औलिया ने

कहा कि "हूनज देहली दूरस्त" (दिल्ली अभी दूर है)।

मोहम्मद बिन तुगलक (1325–51) (जौनाखां)

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

प्रशासनिक असफलता के कारण राजधानी को वापस दिल्ली बना दिया

- → राजधानी परिवर्तन
- → कृषि में कर की वृद्धि की (अकाल से – असफलता)
- → बंजर भूमि के विकास करने के लिए योजना बनाई (भ्रष्टाचार से विकास नहीं हुआ)
- → तांबे के सिक्के चलाये। (प्रबंधकीय असफलता)

→ मोहम्मद बिन तुगलक ने अपने प्रशासनिक सुधारों के तहत उलेमाओं को भी न्याय की परिधि में लाया और उन्हें सामान्य जनता के साथ खड़ा किया। फलत: उलेमा असंतुष्ट हुए।

→ मोहम्मद तुगलक एक बुद्धिवादी शासक था। विभिन्न धर्म के लोगों के साथ उसका संपर्क था। इसने जैन संत जिन प्रभासूरी को उपहार दिया। यह हिन्दुओं के त्योहार होली एवं दीपावली में शामिल होता था। फलत: इससे उलेमा वर्ग असंतुष्ट हुए और उन्होंने विद्रोह के लिए प्रोत्साहित किया।

मोहम्मद बिन तुगलक → हिन्दू त्योहारों में शामिल होता था।

→ मोहम्मद तुगलक ने अपने शासन का सामाजिक आधार व्यापक किया और नौकरशाही में तुर्कों के साथ-साथ हिन्दुओं को भी शामिल किया। साथ ही चीन, तुर्की, ईरान, सीरिया में अपने दूत भेजे और अपने सिक्कों पर खलीफा का नाम अंकित किया।

मोहम्मद बिन तुगलक ने

दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग) → बलबन
दीवान-ए-मुस्तखराज (व्यय विभाग) → जलालुद्दीन खिलजी
दीवान-ए-रियासत → अलाउद्दीन खिलजी
दीवान-ए-कोही (कृषि विभाग) → मोहम्मद बिन तुगलक

gmp.

⇒ यह प्रथम दिल्ली सुल्तान था जिसने कृषि में

मोहम्मद बिन तुगलक → 'फसल-चक्र प्रणाली' लागू किया और कृषि के विकास हेतु दीवान-ए-कोही (कृषि विभाग) विभाग की स्थापना की। उसने सर्वप्रथम कृषि योग्य भूमि के आकलन के लिए एक रजिस्टर तैयार कराया। अकाल संहिता का निर्माण किया और किसानों को सोंधर (ऋण) उपलब्ध कराया।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

⇒ मोहम्मद तुगलक की परियोजनाएँ

1. दो आब में कर वृद्धि :- राजकीय आय बढ़ाने के लिए कर वृद्धि की। किन्तु सूखा पड़ने के कारण किसानों ने विद्रोह किया। अतः कर वृद्धि रद्द करनी पड़ी।

2. राजधानी परिवर्तन :- प्रशासनिक सुविधा के लिए एक नई राजधानी दौलताबाद बनायी गई जिसे बाद में रद्द कर दिया गया।-

3. सांकेतिक मुद्रा का चलन :- राजकोष में चांदी को सुरक्षित रखने के लिए तांबे की सांकेतिक मुद्रा

चलाथी। किन्तु यह योजना असफल रही। क्योंकि वह नकली मुद्रा निर्माण पर नियंत्रण नहीं रख सका।

4. खुरासान एवं कराचिल अभियान :- मध्य एशिया की ~~आ~~ राजनीतिक अस्थिरता का लाभ लेने के लिए मोहम्मद तुगलक ने लाखों सैनिकों की भर्ती की और उन्हें 1 वर्ष का अग्रिम वेतन दिया। किन्तु मध्य एशिया की राजनीति में परिवर्तन के कारण उसे सैन्य अभियान रोकना पड़ा और सेना भंग कर दी गई। अतः सैनिक असंतुष्ट हुए और विद्रोह किया।

→ इसी तरह हिमालय की तराई में विद्रोही शरण लेते थे अतः खुसरो मलिक के नेतृत्व में सैन्य अभियान भेजा गया किन्तु वह बिना अनुमति के ही तिब्बत की ओर बढ़ गया। फलतः सेना पराजित हुई और अभियान असफल रहा।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

इन योजनाओं की असफलता के कारण

मोहम्मद तुगलक को एक पागल सुल्तान कहा जाता है। किन्तु उसकी योजनाएँ तार्किक थी। इसलिए परियोजनाओं की असफलता उसके पागलपन को नहीं प्रबंधकीय अकुशलता को दर्शाती है।

अन्य :-

→ ✓ दिल्ली सल्तनत में सर्वाधिक विस्तार मोहम्मद तुगलक के समय हुआ।

→ 1328-29 में तरमाशीरीन के नेतृत्व में मंगोलों का हमला हुआ। किन्तु मोहम्मद तुगलक ने इसे बहुमूल्य भेंट देकर वापस भेज दिया।

→ 1335 ई० में मदुरा – एहसानशाह ने विद्रोह किया

→ 1336 ई० में विजयनगर – हरिहर बुक्का ने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

→ 1338 ई० में बंगाल – फखरुद्दीन मुबारक शाह ने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

→ 1347 ई० में बहमनी – बहमन शाह (हसन गंगू) ने ।। स्वतंत्र राज्य की स्थापना की

→ मोहम्मद तुगलक के सोने के सिक्के दीनार तथा चांदी के सिक्के अदली कहलाते थे।

→ मोहम्मद तुगलक की मृत्यु पर बदायुनी ने कहा कि "इस तरह सुल्तान को प्रजा से और प्रजा को सुल्तान से मुक्ति मिल गई।"

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

~~मोह~~ फिरोज तुगलक (1351-88)

↳ दो बार राज्याभिषेक करवाया।

↳ यह हिन्दू माता से जन्मा था।

शरियत
↳ इस्लामिक कानून

↳ पहला सुल्तान जिसने ब्राह्मणों को भी जजिया के दायरे में लाया।

↳ इसके काल में एक भी विद्रोह नहीं हुआ।

↳ अशोक के अभिलेख (टोपरा से) को दिल्ली लाया।

↳ वृद्धावस्था पेंशन लागू की।

↳ सैनिकों का पद वंशानुगत बना दिया।

⇒ समक्ष समस्याऐं :-

1. मोहम्मद बिन तुगलक की नीतियों से असंतुष्ट उलेमा वर्ग।
2. असंतुष्ट कृषक।
3. इक्तादार / अमीर असंतुष्ट।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

→ फिरोज तुगलक ने उलेमा वर्ग को संतुष्ट करने के लिए राज्य को शरियत (इस्लामिक विधि) के अनुसार चलाने का प्रयास किया। इसी क्रम में उसने 23 प्रकार के अन्य करों (आबवाब) को समाप्त कर चार कर लगाए -

1. जजिया :- गैर मुसलमानों से लिया जाने वाला कर
2. जकात :- धनी मुसलमानों से लिया जाने वाला कर
3. खम्स :- युद्ध में लूट का भाग → 1/5 राज्य, 4/5 सैनिकों को
4. खराज :- गैर मुस्लिमों से लिया जाने वाला भू-राजस्व → (1/5 से 1/3)

↓

उस :- मुस्लिमों से लिया जाने वाला भू-राजस्व (1/10)

→ फिरोज ने मुस्लिम स्त्रियों को संतों की मंजार पर जाने से रोका और पर्दा प्रथा को प्रोत्साहित किया तथा हज यात्रियों को राजकोष से सहायता उपलब्ध कराता था।

→ फिरोज पहला शासक था जिसने ब्राह्मणों पर भी 'जजिया' लगाया और जजिया को खराज से अलग कर एक स्वतंत्र 'कर' बनाया।

D. K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268..8159

→ फिरोज ने ऋणी किसानों को संतुष्ट करने के लिए ऋण का रजिस्टर नष्ट कर दिया।

→ फिरोज ने शुर्ब / हक-ए-शर्ब (सिंचाई कर) किसानों पर लगाया। वस्तुतः दिल्ली हरियाणा क्षेत्र में उसने अनेक नहरों का निर्माण करवाया।

→ फिरोज ने 'शशगनी' नामक चांदी का सिक्का चलाया तो दूसरी तरफ मिश्रित धातु का सिक्का अद्धा एवं बिख चलाया।

→ फिरोज ने लोक निर्माण विभाग की स्थापना की और हिसार, फिरोजपुर, फिरोजाबाद, जौनपुर नगर (जौना खां के सम्मान में मोहम्मद बिन तुगलक) का नगर निर्माण कराया।

→ फिरोज ने विभिन्न विभागों की स्थापना की—

दीवान-ए-बंदगान → दासों का विभाग

दीवान-ए-इस्तिहाक → पेंशन विभाग

दीवान-ए-खैराज → असहायों की सहायता के लिए विभाग

दार-उल-सफा → चिकित्सालय

रोजगार कार्यालय भी बनाया।

इस तरह फिरोज तुगलक दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने राज्य को लोक कल्याणकारी स्वरूप प्रदान किया, किन्तु उसके कार्यों से विशेषकर शरियत के अनुरूप राज्य चलाना और इक्तादारों एवं सैनिकों के पद को वंशानुगत बनाने से सल्तनत कमजोर हुई और उसके पतन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

नासीरुद्दीन महमूद

→ यह तुगलक वंश का अंतिम शासक था। इसके समय में 1398 में तैमूर का आक्रमण हुआ और उस अव्यवस्था का लाभ उठाकर विभिन्न क्षेत्र स्वतंत्र हुए। जैसे – जौनपुर के स्वतंत्र राज्य का संस्थापक मलिक उस शर्क था। जिसने शर्की वंश की नींव डाली। तो गुजरात में जफर खां ने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

सैय्यद वंश (1414 – 51 ई.)

सैय्यद वंश का संस्थापक खिज्र खां था। सैय्यद वंश को "मकबरों का काल" कहा जाता है।

जौनपुर → मलिक उस शर्क
गुजरात → जफर खां

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

लोदी वंश (1451–1526 ई०)

बहलोल लोदी (1451–1489):–

→ भारत में प्रथम अफगान वंश का संस्थापक बहलोल लोदी था। इसने अफगानों को भारत बुलाया और कहा कि तुम अपनी गरीबी से मुक्त हो जाओगे और मैं भारत में अपनी सत्ता मजबूत करूँगा।

→ बहलोल लोदी ने कबिलाई / जनजातीय भावना से युक्त होकर शासन किया।

सिकन्दर लोदी (1489–1517)

सिकन्दर लोदी ने 1504 ई० में आगरा शहर की स्थापना की और आगरा को अपनी राजधानी बनाया। इसने भूमि की माप कर 'गज' का निर्धारण किया। सिकन्दर लोदी ने गुलरुखी नाम से कविताएँ की। इसके समय लिखी गई पुस्तक 'लिज्जत-ए-सिकन्दरशाही' संगीत से संबंधित पुस्तक थी। तो फरहंगे सिकंदरी (तिब्ब-ए-सिकंदरी)

आयुर्वेद से संबंधित पुस्तक थी।

इब्राहिम लोदी (1517-26)

इब्राहिम लोदी ने पूर्णतः निरंकुश शासन की स्थापना की। इसके समय पंजाब का गवर्नर दौलत खां लोदी था जो असंतुष्ट था। भारत में बाबर को आमंत्रित करने का श्रेय इसे दिया जाता है। अतः 1526 में पानीपत के प्रथम लड़ाई में बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित कर भारत में मुगल राजवंश की नींव डाली।

इक्ता व्यवस्था

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

इक्ता/अक्ता

↳ अरबी शब्द → प्रशासनिक अनुदान

↳ इसे शुरू करने का श्रेय मोहम्मद गोरी को दिया जाता है जिसका संशोधित रूप इल्तुतमिश के समय सामने आया।

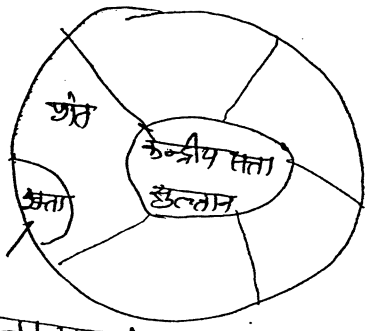

इक्तादार / मुक्ति / वल्ल

↓

नियुक्ति सुल्तान

इक्तादार → प्रशासनिक + राजस्व अधिकार

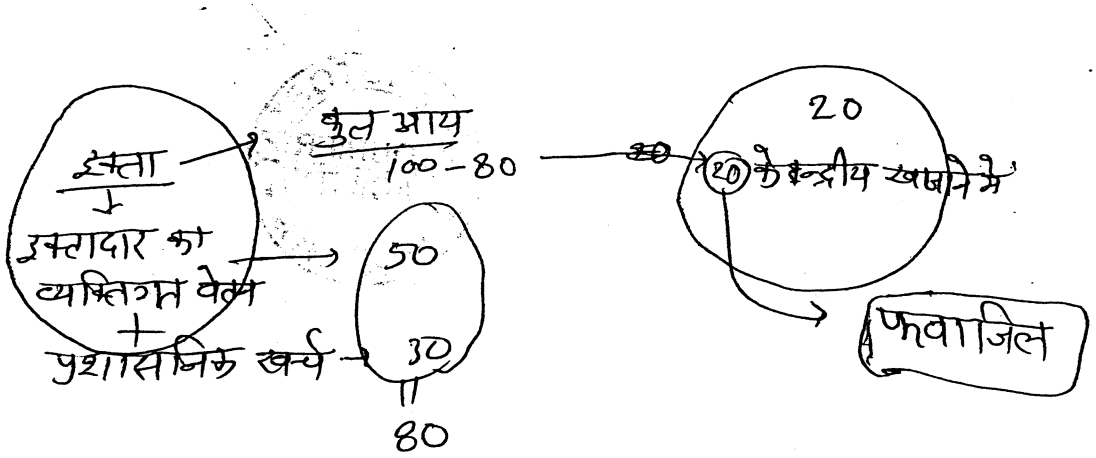

बलबन → 'ख्वाजा' नामक अधिकारी नियुक्त किया।
↳ इक्ता की आय- व्यय की देखरेख

गयासुद्दीन तुगलक :- इसने व्यक्तिगत वेतन और सैनिक खर्च को अलग-अलग कर दिया।

इक्ता व्यवस्था

यह एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ प्रशासनिक अनुदान से है। निजामुल मुल्क तूसी के ग्रंथ सियासतनामा से इक्ता व्यवस्था पर प्रकाश पड़ता है।

भारत में इक्ता व्यवस्था का आरंभ मोहम्मद गोरी ने किया और इल्तुतमिश ने इसे सुदृढ़ रूप प्रदान किया।

विशेषताएँ :-

→ इक्ता व्यवस्था आर्थिक आधिशेष को केन्द्रीय खजाने तक पहुँचाने वाली प्रशासनिक संस्था थी। इस तरह यह आर्थिक-प्रशासनिक स्वरूप से युक्त थी।

इक्ता प्राप्त करने वाले को इक्तादार / मुक्ति / वली कहा जाता है। इसका पद वंशानुगत नहीं था।

→ इक्ता दार को संबंधित क्षेत्र में राजस्व एवं प्रशासनिक अधिकार प्रदान किया गया। अपने व्यक्तिगत खर्च और प्रशासनिक खर्च को इक्ता की कुल आय में से घटाकर जो शेष बचता था उसे केन्द्रीय खजाने में जमा किया जाता था। जिसे 'फवाजिल' कहा गया।

→ बलबन ने इक्तादारों पर नियंत्रण रखने हेतु 'ख्वाजा' नामक पदाधिकारी की नियुक्ति की जो इक्ता की आय-व्यय की देखरेख करता था।

→ ✓ अलाउद्दीन खिलजी ने इक्तादारों के स्थानांतरण पर अत्यधिक बल दिया।

→ ✓ गयासुद्दीन तुगलक ने इक्तादार के व्यक्तिगत आय और प्रशासनिक खर्च को अलग-अलग कर दिया।

→ मोहम्मद तुगलक ने इक्तादारों पर कठोर नियंत्रण लगाया और उनके खर्चे को केन्द्रीय खजाने से देने की बात की। फलत: इक्तादार असंतुष्ट हुए।

→ फिरोजशाह तुगलक ने इक्तादार का पद वंशानुगत बना दिया। फलत: दिल्ली सल्तनत के पतन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268093159

दिल्ली सल्तनत में तकनीकी विकास

→ दिल्ली सुल्तानों ने साकिया (रहट) प्रणाली का विकास सिंचाई कार्य के लिए किया।

→ दिल्ली सल्तनत में कमान निर्माण तकनीक का विकास हुआ तो साथ ही वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में नदाफ/धुनिया (रूई से बीज को अलग करने) का विकास हुआ।

→ सैन्य तकनीक के क्षेत्र में तुर्कों ने नाल (घोड़े के जूते में), जीन (बैठने का वस्त्र), रकाब (पैर रखने का) का विकास किया। फलतः अश्व सेना की गतिशीलता बढ़ी।

→ बर्तनों को आग से जलने से सुरक्षित रखने के लिए तुर्कों ने बर्तनों पर कलई (पालिश) करने की तकनीक प्रारंभ की।

विजयनगर साम्राज्य (1336)

संगम
↓
हरिहर-बुक्का के पिता

↳ तुंग भद्रा नदी पर

संगम वंश:- पिता के नाम पर वंश की स्थापना की।

⇒ संगम वंश → सुलुव वंश → तुलुव वंश → अरविंदु वंश

देवराय II :- कुरान को अपने सिराने पर/सिंहासन के पास रखता था।

हरिहर- बुक्का :- यह विजयनगर साम्राज्य के संस्थापक थे और पहले काकतीय वंश के सामंत थे और वारंगल पर मोहम्मद तुगलक के अभियान के समय इन्हें भी बंदी बनाकर ले जाया गया था। और इस्लाम धर्म ग्रहण किया था। किन्तु मोहम्मद तुगलक के समय ही इन्होंने स्वतंत्र राज्य की स्थापना कर अपने गुरू माधव विद्यारण्य की सहायता से पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण किया और अपने पिता के नाम पर राजवंश का नाम संगम राजवंश रखा। इनकी राजधानी 'हम्पी' थी।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

बुक्का-I :-

→ इसने तेलगु विद्वान नचन सोम को संरक्षण दिया और स्वयं 'वेदमार्गप्रतिष्ठापक' की उपाधि ली।

→ बुक्का I के पुत्र कुमार कम्पन ने मदुरा की विजय की। इस विजय का उल्लेख इसकी पत्नी गंगा देवी ने 'मदुरम विजय' में किया।

हरिहर II :- इसने अपना प्रधानमंत्री 'सायण' को बनाया, जिसने वेदों पर 'टीका' लिखी तथा श्रीलंका का अभियान कर उससे 'कर' वसूली की।

देवराय I :-

→ देवराय I ने मुसलमानों को अपनी सेना में शामिल किया। इसने तुंग भद्रा नदी पर हरिद्रा बांध का निर्माण कर सिंचाई सुविधा प्रदान की।

→ देवराय I के दरबार में श्रीनाथ रहता था जिसने 'हरविलासम' की रचना की। देवराय I के समय इटली का यात्री निकोली कोंटी आया जिसने सतीप्रथा, दीपावली, और नवरात्रा के प्रचलन का वर्णन किया।

देवराय II :-

देवराय II अपने सिंहासन के पास कुरान रखता था ताकि मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं का

सम्मान किया जा सके। इसके दरबार में ईरानी यात्री अब्दुल रज्जाक आया जिसने कहा कि "विजयनगर राज्य में 300 बंदरगाह थे और राजा का खजाना सोने के पिण्डों से भरा था और राज्य में गुलाब उतना ही आवश्यक था, जितना कि भोजन।"

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

सुलुव वंश

↳ संस्थापक → सुलुव नरसिंह था।

तुलुव वंश

↳ संस्थापक → वीर ~~नसार~~ नरसिंह

कृष्ण देवराय :- कृष्ण देवराय तुलुव वंश से संबंधित शासक था। इसकी उपाधि आंध्र भोज, अभिनवभोज थी। इसने तेलगु भाषा में 'अमुक्त माल्यदा' नामक ग्रंथ लिखा तो संस्कृत में 'जाम्बवती कल्याणम्' नामक ग्रंथ लिखा।

→ कृष्णदेवराय ने 'विवाह कर' समाप्त कर दिया। इसके दरबार में तेलगु के आठ विद्वान रहते थे जिन्हें अष्टदिग्गज कहा गया।

→ कृष्णदेवराय शतरंज का खिलाड़ी था। बाबर ने अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी में इसे भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कहा।

→ कृष्णदेवराय ने ~~वि~~ विट्ठलस्वामी (→ कृष्णदेवराय ने) एवं हजाराराम मंदिर का निर्माण कराया। इसके समय यूरोपीय यात्री डोमिंगो पायस एवं बारबोसा आये। डोमिंगो पायस ने नायंकार व्यवस्था का उल्लेख किया।

अच्युतदेवराय :- इसका दो स्थानों पर राज्याभिषेक हुआ। इसके समय पुर्तगाली घोड़े का व्यापारी नूनिज आया। नूनिज ने लिखा कि यहाँ महिलाएं लेखिका एवं भविष्य वक्ता होती हैं और कुश्ती में भाग लेती हैं।

सदाशिवराय :- सदाशिवराय के समय तालीकोटा / (1565) बन्नीहट्टी / राक्षसी-तगंडी का युद्ध हुआ। जिसमें विजयनगर राज्य के विरुद्ध अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुंडा और बीदर राज्यों का संगठन शामिल था जिसमें विजय नगर पराजित हुआ।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

अरविंदु वंश
↳ संस्थापक → तिरुमल
↳ अंतिम शासक वेंकट II

नायंकार व्यवस्था → नायक → सैनिक सामंत।

विजयनगर में नायक सैनिक सामंत होते थे। इन सैनिक अधिकारियों को भू-राजस्व में वेतन दिया जाता था। यह व्यवस्था विजयनगर राज्य के पतन में सहायक सिद्ध हुई। वस्तुतः नायकों को करमुक्त भूमि (अमरम) प्रदान की जाती थी। अतः नायकों का भूमि के साथ संबंध स्थापित हुआ।

इश्क हकीकी → इश्क मिजाजी
(लौकिक) → (पारलौकिक)

→ विजयनगर साम्राज्य में 12 ग्रामीण अधिकारी राज्य द्वारा नियुक्त होते थे। इसे आयंगार व्यवस्था कहते थे।

→ विजयनगर राज्य में नृत्य गान की परम्परा यक्षगान के नाम से जानी जाती थी।

सूफी आंदोलन

→ सूफी संत इस्लाम व कुरान का भी सम्मान करते हैं।

सफ → पवित्र
सफ → मोटे ऊनी वस्त्र

आत्म/जीव → परमात्मा/ईश्वर
↓
'विरह'

पीर → गुरू
मुरीद/मुर्शीद → शिष्य
खानकाह → निवास स्थान
फना → सांसारिकता का त्याग
↓
बका → अपने अस्तित्व को भूल जाते हैं।

साधन → प्रेमी
साध्य → प्रेमिका

→ सूफी शब्द 'सफ' से बना हुआ है जिसका अर्थ पवित्र होता है। सूफी इस्लाम से जुड़ा हुआ एक रहस्यवादी दर्शन है। इस तरह सूफी सिलसिलों का आधार इस्लाम एवं कुरान है। यद्यपि इस्लाम में संगीत निषिद्ध है किन्तु सूफी संगीत को अपनाते हैं। वस्तुत: वे ईश्वरीय अनुभूति का इसे एक साधन मानते हैं।

→ सूफीवाद में पीर (गुरु) तथा मुर्शीद (शिष्य) परंपरा दिखाई देती है। सूफियों का निवास स्थान 'खानकाह' कहलाता है। सूफी दर्शन में लौकिक प्रेम के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम पर बल दिया जाता है। (इश्क मजाजी से इश्क हकीकी)

→ सूफी आंदोलन में बासरा (अरब में) एक प्रमुख केन्द्र रहा और यहाँ एक प्रमुख महिला संत राबिया का नाम उल्लेखनीय है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER
FACILITY
(M: 9268098159)

→ 10वीं सदी में मंसूर अल हल्लाज हज्जाज ने स्वयं को 'अनहलक' (मै ही ईश्वर हूँ) कहा। अत: इसे मृत्युदण्ड दे दिया गया।

→ 12वीं सदी में अलगीजाली ने सूफी मत को इस्लामिक जगत में प्रतिष्ठित किया। उसने कहा कि ईश्वर का ज्ञान आत्म प्रकाश से मिलता है। इस तरह उसने इस्लाम के रूढ़ीवादी एवं ~~उदारवादी~~ उदारवादियों के बीच संतुलन स्थापित किया।

→ ✓ इब्न-ए-अरबी, पहला सूफी साधक था जिसने 'वहदत-उल-वजूद' का सिद्धांत दिया। अर्थात् ईश्वर सर्व व्यापक है और सबमें उसकी झलक है। इसतरह वजूदी सिद्धांत उदारवादी स्वरूप लिये हुए था।

⇒ भारत में सूफी मत का विकास :-
भारत आने वाला प्रथम सूफी संत दातागंज बख्श (अलहुज्वीरी) था। इसका ग्रंथ 'कश्फ-उल-महजूब' सूफियों का प्रमाणिक ग्रंथ है। अबुल फजल ने सूफियों के 14 सिलसिलों (शाखाओं) का उल्लेख किया है। ये सिलसिले प्रवृत्तियों के आधार पर बाशरा एवं बेसरा वर्ग में रखे जाते है। बाशरा इस्लाम

के मत को पूर्णत: मानने वाले जबकि ~~बेशरा~~ शरियत को पूर्णत: नहीं मानने वाले बेशरा कहलाते हैं।

⇒ विभिन्न सिलसिले

चिश्ती सिलसिला :- भारत का सर्वाधिक लोकप्रिय सिलसिला चिश्ती था। इसके संस्थापक ख्वाजामोइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज) थे। ये मोहम्मद गौरी के साथ 1190 में भारत आया और अजमेर में खानकाह बनाया। चिश्ती मूलत: मध्य एशिया के खुरासान प्रदेश के चिश्तिया नामक स्थान से संबंधित थे। इसी नाम पर चिश्ती सिलसिला कहलाया। इसके प्रमुख सिद्धांत थे-

(i) अत्यंत संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करना।

(ii) धन सम्पति से घृणा करना।

(iii) निर्धनता में विश्वास करना।

(iv) मानव मात्र की सेवा करना।

(v) धार्मिक सहिष्णुता का पालन करना।

(vi) ईश्वर में विश्वास करना।

(vii) खानकाहों की स्थापना करना।

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी :-

~~ओनरव ख्वाजकाहे~~

→ ये प्रमुख चिश्ती संत थे। कुतुबुद्दीन ऐबक ने इनके सम्मान में कुतुब मीनार बनवाया।

हमीमुद्दीन नागौरी :-

ये काकी के समकालीन थे और राजस्थान में नागौर को अपना प्रमुख केन्द्र बनाया और फ़ारसी में लिखे गये पदों का हिन्दवी में अनुवाद किया।

बाबा फरीद :-

ये काकी के शिष्य थे। इनका मूल नाम फखरुद्दीन गंज ए शकर था। इन्होंने हांसी (हरियाणा) एवं अजोधन (पंजाब) में अपना केन्द्र बनाया। बाबा फरीद के उपदेश सिखों के पवित्र ग्रंथ गुरू ग्रंथ साहिब में संकलित हैं। इन्होंने अपने शिष्य सीदी मौला से कहा कि सुल्तान एवं अमीरों से मित्रता मत करना। ऐसा करने वाले का अंत निश्चित है किन्तु सीदी मौला सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी का संरक्षण प्राप्त किया और अंततः सुल्तान ने इसकी हत्या करदी (हाथी के तले रौंदकर)।

निजामुद्दीन औलिया (1236–1325)

ये चिश्ती संत थे और बाबा फरीद के शिष्य थे। इनका जन्म बदायूं में हुआ। निजामुद्दीन औलिया योग में इतने दक्ष थे कि लोग इन्हें 'सिद्ध' पुकारते थे। औलिया ने दिल्ली के 7 सुल्तानों का काल देखा। औलिया का गयासुद्दीन तुगलक के साथ विवाद हुआ इसी क्रम में औलिया ने कहा कि 'इनस देहली दूरस्त (दिल्ली अभी दूर है) है।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

अमीर खुसरो (1253–1325)

अमीर खुसरो चिश्ती संत थे और औलिया के शिष्य थे। औलिया ने इन्हें तरकुल्लाह की उपाधि दी। खुसरो ने कहा कि मैं भारतीय तोता हूँ (तूतिए हिंद)। खुसरो ने फारसी भाषा का भारतीयकरण किया तथा खड़ी बोली हिन्दी के विकास में इनका योगदान रहा।

नसीरुद्दीन चिराग ए-दिल्ली

ये अमीर खुसरो के शिष्य थे। इनका जन्म अयोध्या में हुआ था लेकिन खानकाह दिल्ली में बनाया।

सुहरावर्दी सिलसिला

→ सुहरावर्दी सूफी धन संपदा और सांसारिकता में विश्वास करते थे तथा प्रशासनिक पद भी ग्रहण करते थे। इसके संस्थापक अरब के अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे। भारत में सुहरावर्दी सिलसिले के संस्थापक बहाउद्दीन जकारिया थे। इन्होंने इल्तुतमिश की प्रशंसा की। अतः इल्तुतमिश ने इन्हें शेख-उल-इस्लाम की उपाधि दी।

→ सुहरावर्दी सिलसिले से संबंधित दो शाखाएं थी-

(i) फिरदौसी :- ~~संस्थापक →~~ व (ii) सत्तारी

(FB) फिरदौसी के संस्थापक बुदरुद्दीन तथा इसका केन्द्र पटना था तो सत्तारी सिलसिले के संस्थापक अब्दुल्ला सत्तार और इससे जुड़े हुए मोहम्मद गौस थे।

मोहम्मद गौंस → तानसेन का गुरू

→ मौम मोहम्मद गौंस 'कुतुब' उप नाम से प्रसिद्ध थे। इन्हें तानसेन का गुरू माना जाता है। मोहम्मद गौंस ने अमृत कुंड नामक पुस्तक का फारसी में अनुवाद किया

कादिरी सिलसिला

→ ~~इसके~~ कादिरी सिलसिले के संस्थापक निमामत उल्ला थे

→ कादिरी सिलसिले से संबंधित सूफी संत मियां मीर को स्वर्ण मंदिर (हर मंदिर साहब) की नींव रखने के लिए बुलाया गया था।

नक्शबंदी सिलसिला

→ भारत में नक्शबंदी सिलसिले के संस्थापक ख्वाजा बाकी बिल्लाह थे।

→ नक्शबंदी सिलसिले से जुड़े शेख अहमद सरहिंदी एक रूढ़ीवादी संत थे और इन्होंने शहदत उल वजूद का सिद्धांत दिया। जो रूढ़ीवादी था। अकबर के कार्यों की इसने आलोचना की। इस कारण जहाँगीर ने उसे गिरफ्तार किया। शेख अहमद सरहिंदी को

'मुजद्दिद आरिफसानी' (इस्लाम का सुधारक) कहा गया।

सुहरा - अब्दुल्ला
कादिरी - उल्ला (नियामत)
नक्शबंदी - बिल्लाह
रोशानिया - अंसारी
महदवी मोहम्मद
कलंदरी कलंदर
ऋषि नुरूद्दीन

रोशानिया सिलसिला

संस्थापक → मियां वाजिद अंसारी

महदवी सिलसिला

इसके संस्थापक जोनपुर के मोहम्मद थे। इनका मानना था कि उन मुसलमानों पर भी जजिया कर लगाना चाहिए जो उनके विचार से सहमत नहीं हैं।

कलंदरी सिलसिला

↳ कलंदर

यह घुमक्कड़ संत होते थे। इनका संबंध नाथपंथी योगियों से था और यह उनकी पद्धतियों को अपनाते थे। इससे संबंधित संत नजमुद्दीन कलंदर ने इंग्लैण्ड, चीन और मक्का की यात्रा की तथा 40 वर्षों तक उपवास किया।

ऋषि सिलसिला / संप्रदाय

इसके संस्थापक शेख नुरूद्दीन वली थे। यह मूलतः स्वदेशी सिलसिला था और शैव धर्म से प्रभावित था।

भक्ति आंदोलन

अद्वैतवाद :- शंकराचार्य → ब्रह्म व जीव एक ही है।

विशिष्टाद्वैत :- रामानुजाचार्य

↳ ~~ब्रह्म व~~ जीव ब्रह्म का ही अंश है ~~लेकिन मूलतः अंश नहीं है।~~

7वीं से 13वीं सदी में दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का विकास हुआ। यह आंदोलन नयनार (शैव) एवं आलवार (वैष्णव) संतों के माध्यम से चला।

उत्तर भारत में 13वीं से 16वीं सदी के बीच भक्ति आंदोलन का विकास हुआ और इसके विकास का कारण तुर्की आक्रमण से निराश जनता की स्थिति, जो उसे ईश्वर की शरण की तरफ प्रेरित कर रही थी तो साथ ही हो रहे सामाजिक-धार्मिक परिवर्तन के कारण भी निम्न वर्ग भक्ति की ओर उन्मुख हो रहा था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

विशेषताएँ :-

① भक्ति संतों ने जात-पात, ऊँच-नीच की भावना पर चोट किया।

② ईश्वर की सर्वोच्चता एवं एकता पर बल दिया।

③ हिन्दु मिश्र मुस्लिम एकता पर बल दियागया।

④ संतों ने लोकभाषाओं में अपने उपदेश दिये। इस तरह क्षेत्रीय भाषा एवं साहित्य का विकास हुआ।

⑤ आंदोलन में शामिल संत समाज के विभिन्न वर्गों से थे जिनमें महिलाएँ एवं निम्न वर्ग भी शामिल थे।

शंकराचार्य

शंकराचार्य का जन्म केरल में 8वीं सदी में हुआ। जिनकी मातृ भाषा मलयालम थी। 8वर्ष की आयु में शंकर ने माता की आज्ञा लेकर संन्यास ग्रहण किया। और गोविन्द योगी को अपना गुरू बनाया तथा काशी में सर्वप्रथम ज्ञान का प्रचार किया।

प्रयाग में कुमारिलभट्ट के साथ दार्शनिक वाद-विवाद किया।

→ शंकर ने चारों दिशाओं में मठ की स्थापना की। उत्तर में बद्रीनाथ (ज्योतिष पीठ), दक्षिण में मैसूर (शृंगेरी पीठ), ~~पूर्व~~ पूर्व में पुरी (गोवर्धन पीठ) और पश्चिम में द्वारिका (शारदा पीठ) की स्थापना की।

→ शंकर ने बौद्ध धर्म की पद्धति के अनुसार प्रचार-प्रसार के लिए चारों दिशाओं में मठ की स्थापना की। शंकर को 'प्रच्छन्न बौद्ध' भी कहा जाता है

→ शंकर ने अद्वैतवाद का सिद्धांत दिया तथा स्मृति संप्रदाय की स्थापना की और निर्गुण ब्रह्म की उपासना पर बल दिया।

→ शंकर ने "मैं ही ब्रह्म हूँ" की अवधारणा प्रतिपादित की और कहा कि ब्रह्म और जीव दोनों एक ही हैं। अज्ञानता के कारण जीव स्वयं को उससे अलग मानता है। इस तरह शंकर ने ज्ञान पर बल दिया

→ शंकर का दर्शन जटिल एवं बौद्धिक होने के कारण साधारण जन की पहुँच से दूर था। अतः रामानुजाचार्य ने इसे संशोधित कर भक्ति के अनुकूल बनाया।

रामानुजाचार्य

रामानुजाचार्य ने <u>विशिष्टाद्वैत</u> दर्शन का प्रतिपादन किया और <u>श्री संप्रदाय</u> की स्थापना की। उन्होंने ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण को <u>मोक्ष</u> का आधार माना और कहा कि <u>ब्रह्म और जीव मूलतः एक नहीं</u> हैं इस तरह भक्ति को दार्शनिक आधार प्रदान करते हुए उसे जन सामान्य से जोड़ा।

निम्बार्काचार्य

इनका जन्म तमिलनाडु में हुआ, किन्तु अधिकांश समय वृंदावन में व्यतीत किया। ये रामानुज के समकालीन थे। उन्होंने <u>द्वैताद्वैतवाद</u> दर्शन का प्रतिपादन करते हुए '<u>सनक संप्रदाय</u>' की स्थापना की। इनको <u>सुदर्शन चक्र का अवतार</u> भी माना जाता है।

माध्वाचार्य (1199-1278)

इन्होंने द्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया और ब्रह्म सेप्रदाय की स्थापना की। इन्हें आनन्द तीर्थ एवं पूर्ण ~~प्रज्ञ~~ प्रज्ञ कहा जाता है। साथ ही वायु का अवतार माना जाता है।

बल्लभाचार्य (1479-1531)

इन्होंने शुद्धाद्वैतवाद दर्शन एवं रूद्र संप्रदाय की स्थापना की और 'पुष्टिमार्ग' मत का प्रतिपादन किया। इनको विष्णु स्वामी के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म और मृत्यु काशी में हुआ था।

रामानन्द (1299-1411)

इनका ~~ब~~ जन्म प्रयाग में हुआ और प्रथम संत थे जिन्होंने हिन्दी भाषा के माध्यम से उपदेश दिया। इनके शिष्यों में विभिन्न जाति के लोग शामिल थे। जैसे कबीर → जुलाहा, रैदास → चर्मकार, सेन - नाई, धन्ना → जाट तथा ~~स्त्रियाँ~~ भी इनकी शिष्या थी। जैसे पद्मावती। धन्ना एवं सेन

के उपदेश सिखों के आदिग्रंथ गुरुग्रंथ साहिब में मिलते हैं

कबीर (1398 – 1518)

→ कबीर का जन्म काशी में हुआ और वे सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। कबीर के प्रधान शिष्य धर्मदास थे जबकि एक अन्य शिष्य भागूदास ने उनकी वाणी का संकलन 'बीजक' नाम से किया।

चैतन्य महाप्रभु (1486 – 1533)

→ बंगाल में इनका जन्म हुआ और इन्होंने कीर्तन प्रणाली का विकास कर इसे भक्ति से जोड़ा। चैतन्य का शिष्य हरिदास था जो एक मुसलमान था। चैतन्य महाप्रभु वैष्णव संप्रदाय के संत थे।

शंकरदेव (1500 – 69)

शंकर देव असम के वैष्णव संत थे। इन्होंने एक शरण संप्रदाय की स्थापना की। शंकर देव ने

'अंकियानाट' की रचना की। जिसका संबंध सत्रिया नृत्य से है।

गुरु नानक (1469–1539)

इनका जन्म तलवंडी में हुआ। इन्होंने वर्ण व्यवस्था जाति-पात, मूर्ति पूजा का विरोध किया। नानक को इब्राहिम लोदी ने कुछ समय के लिए कैद किया और जब बाबर से संघर्ष करते हुए इब्राहिम लोदी मारा गया तब वे कैद से आजाद हुए और सिख धर्म की स्थापना की।

दादू दयाल (1544–1603)

यह अहमदाबाद के संत थे। इन्होंने 'निपख' आंदोलन चलाया और परब्रह्म संप्रदाय की स्थापना की। अकबर ने दादूदयाल से पूछा कि अल्लाह की जाति क्या है तो दादू ने कहा कि इश्क अल्लाह की जाति और वही उसका रंग है।

नरसिंह मेहता (15वीं सदी)

गुजरात के वैष्णव संत थे। इन्होंने जो गीत लिखा वह गांधी का प्रिय भजन बना।

महाराष्ट्र के संत [ज्ञान एक तू राम]

1. ज्ञानदेव :— गीता पर 'भाष्य' (पुस्तक) लिखा।
2. नामदेव
3. एकनाथ
4. तुकाराम → वरकरी सम्प्रदाय की स्थापना की।
5. रामदास → धरकड़ी संप्रदाय की स्थापना की।
   → शिवाजी के गुरू
   → आनन्द भुवन, दासबोध > पुस्तक लिखी।

मुगल साम्राज्य

बाबर → 1526 – 30 → आत्मकथा (तुजुक-ए-बाबरी)

हुमायूँ → 1530 – 40 → शेरशाह (अफगान) ~~→ 1556~~
↳1555 (1540 – 55)

अकबर → 1556 – 1607

जहाँगीर → 1607 – 1627 ⎤ → आत्मकथा
कला संस्कृति
शाहजहां → 1627 – 1658 ⎦

औरंगजेब → 1658 – 1707

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

जानकारी के स्रोत :-

तुजुक-ए-बाबरी :- बाबर ने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा ~~लिखि~~ लिखी। फारसी में इसका अनुवाद हुमायूँ के शासनकाल में जेनखां एवं पायन्दा हसन ने किया तो अकबर के काल में अब्दुल रहीम खान खाना ने किया। बाबर ने लिखा कि यहाँ न व्यक्ति सुन्दर है न घोड़े। बाबर ने भारतीय स्थापत्य को निम्न कोटि का बताया उसने केवल ग्वालियर के स्थापत्य की प्रशंसा की।

→ ✓ बाबर ने दो हिन्दु राज्य विजयनगर (शासक - कृष्णदेवराय) मेवाड़ (शासक - राणा सांगा) का उल्लेख किया।

⇒ हुमायूंनामा :-

(बाबर की पुत्री)
इसकी रचना गुलबदन बेगम ने की।

अकबर नामा :- अबुल फजल

तबकात - ए - अकबरी :- निजामुद्दीन अहमद

मुन्तखाब उल तवारीख :- बदायूनी
'मजहरनामा' का वर्णन मिलता है।

(✓ बदायूंनी ने रामायण महाभारत, राजतरंगणी, सिंहासन बत्तीसी ग्रंथ का फारसी में अनुवाद किया)

तुजुक - ए - जहाँगीरी :- जहाँगीर की आत्मकथा है। (स्वयं ने लिखी)

✓ मासिर - ए - जहाँगीरी :- ख्वाजा कामगार खां

✓ इकबालनामा - ए - जहाँगीरी → मुतमिद खां
अबुल फजल की हत्या का वर्णन है।

पादशाहानामा (शाहजहाँ कालीन इतिहास)

- अमीर कजनीवी → शाहजहाँ के आरंभिक 10 वर्षों का वर्णन
- अब्दुल हमीद लाहौरी → " " अगले 10 वर्षों का वर्णन
- मोहम्मद वारिस → अंतिम वर्षों / समय का वर्णन

~~मासिर-ए-आलमगिरी~~ आलमगीरनामा :→ मिर्जा मुहम्मद कजीम शिराजी

यह औरंगजेब का सरकारी इतिहासकार था।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

मासिर-ए-आलमगीरी :- मुस्तैद खां

↳ इस ग्रंथ को मुगलराज्य का 'गजेटियर' (राजपत्र) माना जाता है।

मुन्तखाब-उल-लुबाब :→ खाफी खां

यह शिवाजी की आलोचना करता है किन्तु उनकी धार्मिक नीति की प्रशंसा करता है।

नुस्खा-ए-दिलकुशा :→ भीमसेन

↳ मुगल मराठा संबंधों पर प्रकाश पड़ता है

फतुहात-ए-आलमगीरी :→ ईश्वरदास नागर

↳ मुगल-राजपूत संबंधों पर प्रकाश पड़ता है

ग्रांट डफ :- मराठों का इतिहास लिखा।

कर्नल टॉड :- राजपूतों का इतिहास लिखा।

विदेशी विवरण :-

राल्फ फिच :-

यह अकबर के समय आने वाला प्रथम यूरोपीय यात्री है। इसने लिखा कि आगरा एवं फतेहपुर सीकरी लंदन से बड़े है।

विलियम हॉकिन्स :- जहाँगीर के समय आया और लिखा कि चांदी तो यहाँ सिर्फ आती ही रहती है जाती नहीं।

ट्रेवेनियर :- यह फ्रांसीसी हीरे का व्यापारी था जो शाहजहाँ के काल में भारत आया। इसने 6 बार भारत की यात्रा की और कोहिनूर हीरे का वर्णन किया।

मनूची :- यह शाहजहां के समय आया इटली का यात्री था और सामूगढ़ के युद्ध में मौजूद था तथा दारा शिकोह के तोपखाने को संभाल रखा था।

TMV क्रम है।

वर्नियर :- शाहजहां के समय आने वाला यह फ्रांसीसी डॉक्टर था। वर्नियर ने लिखा कि सम्पूर्ण भूमि का स्वामी बादशाह है और शोषण के कारण किसान जमीन छोड़कर भाग जाते हैं। वर्नियर ने लिखा कि मुगल शहजादियों की शादी हिंदुस्तान में नहीं हो पाती थी क्योंकि उनके योग्य वर नहीं मिलते थे।

पीटर मुण्डी :- शाहजहां के समय आये हुए पीटर मुण्डी ने गुजरात के भीषण अकाल की चर्चा की है।

बाबर (1526-1530)

~~→ बाबर पानीपत के युद्ध में विजय का श्रेय~~

→ बाबर का प्रथम उद्देश्य पंजाब पर नियंत्रण करना था, संपूर्ण भारत पर नहीं। वस्तुतः काबुल और कंधार से उसका खर्चा नहीं चल रहा था तो साथ ही तैमूर का वंशज होने के कारण पंजाब क्षेत्र पर अधिकार करना वह अपना कर्तव्य समझता था।

→ पानीपत के प्रथम युद्ध में (1526) बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित किया। इस युद्ध में बाबर ने बारूद का प्रयोग किया और 'तुलगमा' युद्ध प्रणाली को तोपखाने के साथ जोड़ दिया। किन्तु इस युद्ध में अपनी जीत का श्रेय बाबर ने 'तीरंदाजों' को दिया है।

→ 1527 में खानवा के युद्ध में राणा सांगा को पराजित किया। इस युद्ध में जीत का श्रेय बाबर ने अपने तोप खाने को दिया।

हुमायूं (1530-40- 1556)

→ बाबर ने हुमायूं को सुझाव दिया था कि अपने भाईयों से अच्छा व्यवहार करना। बाबर ने राज्य विभाजन की सलाह नहीं दी, किन्तु हुमायूं ने अपने भाईयों अस्करी, हिन्दाल और कामरान के बीच राज्य का बंटवारा किया। फलतः राज्य कमजोर हुआ।

→ 1539 में हुमायूं एवं शेरशाह सूरी के बीच चौसा का युद्ध हुआ। जिसमें हुमायूं पराजित हुआ।

→ 1540 में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में शेरशाह ने हुमायूं को पराजित किया और हुमायूं भागकर ईरान पहुँचा। अंततः 1555 में पुनः गद्दी पर बैठा। किन्तु कुछ ही महीनों के बाद पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरकर मर गया। हुमायूं को दिल्ली में दफनाया गया (जबकि बाबर को काबुल में दफनाया गया।)

D.K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

शेरशाह सूरी (1540-45)

शेर + लोमड़ी = शेरशाह

शेर ↓ योद्धा

लोमड़ी ↓ कूटनीतिक क्षमता

→ राजस्व सुधार :-

1. राजकीय आय में वृद्धि।
2. रैय्यतों की सुरक्षा।
   - ↳ भूमि की माप करवायी।
   - ↳ किसानों को पट्टा दिया गया।
   - ↳ निर्धारण में नरमी और कर वसूली में सख्ती
   - ↳ जब्ती पद्धति लागू की। (~~शेरशाह~~ टोडरमल द्वारा)
   - ↳ अनाजों की दर सूची → 'रय'

↳ शेरशाह के समय कोई वृद्धा स्त्री सोने से भरी टोकरी को लेकर ~~राष्ट्र~~ में भी सुरक्षित जा सकती थी। ऐसा कहा जाता है।

↳ चांदी का 'रूपया' शुरू किया।

→ शेरशाह ने एक सामान्य जीवन से आगे बढ़ते हुए शासक का पद प्राप्त किया। आरंभ में वह बिहार के सूबेदार बहार खाँ लोहानी के यहाँ कार्य करता था। तत्पश्चात् कुछ समय के लिए वह बाबर की सेवा में रहा।

- शेरशाह के व्यक्तित्व में शेर और लोमड़ी का गुण शामिल था अर्थात् वीरता और कूटनीतिक क्षमता से वह युक्त था।

→ शेरशाह की ~~रायसीन विजय~~ उसके चरित्र पर एक धब्बा मानी जाती है। क्योंकि वहाँ उसने राजपूतों को सुरक्षित निकल जाने का आश्वासन देकर उन पर अचानक हमला कर नरसंहार किया।

→ इसी तरह मारवाड़ की विजय एक नकली पत्र के माध्यम से की गई। इस अभियान के संदर्भ में उसने कहा कि "मैंने मुट्ठी भर बाजरे के लिए संपूर्ण हिन्दुस्तान को खो दिया था।"

→ शेरशाह द्वारा स्थापित राज्य अफगानी होने के बावजूद निरंकुशता के सिद्धांत से संचालित होता रहा।

⇒ भू-राजस्व व्यवस्था

उद्देश्य :- 1. रैय्यतों/किसानों की सुरक्षा
2. उत्पादन में वृद्धि → अलाउद्दीन के यहाँ नहीं था।
3. राजकीय आय में वृद्धि

गतिविधियां

→ शेरशाह की पद्धति रैय्यतवाड़ी पद्धति के नाम से जानी जाती है। शेरशाह ने किसानों से प्रत्यक्ष संबंध बनाया और पट्टा एवं कबूलियत का प्रयोग किया। वस्तुतः इसके तहत किसानों को उनके भूमि अधिकार की स्वीकृति स्वीकृति * पट्टा के रूप में दी जाती थी तो कबूलियत * के तहत किसान संबोधित क्षेत्र का भू-राजस्व भुगतान की स्वीकृति प्रदान करता था।

→ भूमि माँप के लिए इसने 'बीघा' को ठीक बनाकर माप के लिए 'जरीब' (रस्सी) का प्रयोग किया और माप के लिए 'गज-ए-सिकन्दरी' इकाई का प्रयोग किया। भूमि माप की यह पूरी पद्धति 'जब्ती' पद्धति कहलाती है। इसका आरंभ टोडरमल ने किया। अतः इसे टोडरमल पद्धति भी कहते हैं।

→ शेरशाह ने भू-राजस्व की नकद वसूली पर बल दिया और अनाजों की एक दर तालिका बनायी। जिसे 'रय' के नाम से जाना जाता है।

→ शेरशाह ने 'जरीबाना कर' (भूमि पैमाइश करने वालों के वेतन के लिए वसूला जाना वाला कर) किसानों से वसूला, जो उत्पादन का 2.5% था। इसी तरह उसने 'मुहसिलाना' कर (भू-राजस्व वसूल करने वाले के वेतन के लिए) लिया जाता था, जो उत्पादन का 5% था

→ जब्ती पद्धति शेरशाह के संपूर्ण राज्य में लागू नहीं था अर्थात भू-राजस्व के निर्धारण की अन्य पद्धतियाँ बंटाई, कनकूत (अनुमान के आधार पर) को अपनाया। शेरशाह ने "निर्धारण में नरमी और वसूली में सख्ती" का सिद्धांत लागू किया।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

⇒ अन्य सुधार कार्य :-

→ व्यापारिक विकास के लिए शेरशाह ने जगह-जगह ली जाने वाली चुंगी बंद करदी।

→ मौद्रिक अर्थव्यवस्था में सुधार करते हुए शेरशाह ने चाँदी का 'रुपया' और चाँदी। ताँबे का 'दाम' नामक सिक्का जारी किया।

→ पुलिस व्यवस्था में सुधार करते हुए शेरशाह ने क्षेत्रीय उत्तरदायित्व का सिद्धांत लागू किया। फलतः राज्य में चोरी एवं अपराध पर अंकुश लगा।

→ शेरशाह ने सड़कों के निर्माण, सराय (रुकने का स्थान) के निर्माण पर अत्याधिक बल दिया। यह सराय चौकी का कार्य करती थी और साम्राज्य के लिए शरीर की धमनियों के समान थी।

→ शेरशाह ने बंगाल में एक नई प्रशासनिक संस्था निर्मित की और बंगाल को विभिन्न 'सरकार' (जिला) में बांटा और वहाँ अमीन-ए-बंगाल का पद बनाया, जिस पर काजी फजीलात को नियुक्त किया।

मुगलों की धार्मिक नीति

जन्म-1542

अकबर (1556-1605) :→

गुरु → अब्दुल लतीफ

अकबर
- साध्य → साम्राज्य/सत्ता
- साधन → उदार धार्मिक नीति
  - राजपूत नीति

↳ जजिया कर समाप्त कर दिया (1564 में)

↳ 1578 में इबादतखाना सभी के लिए खोला। इसके शुरू भी इसने ही किया था।

1579
↳ मजहरनामा
↳ इसके माध्यम से अकबर विवाद में किसी भी पक्ष को चुन सकता है अर्थात् स्वयं निर्णय लेने की बात कही।

1582 → दीन-ए-इलाही → हिन्दू व्यक्ति बीरबल इसका सदस्य था।

↳ इसमें कहा गया कि इसके अनुयायी को विभिन्न श्रेणियों में बांटा जायेगा। जाता था
↓
धन, धर्म, सम्मान, जीवन

↳ अकबर 'एकपत्नीव्रत' की बात करता है।

अकबर के कार्य :-

→ 1562 में युद्ध बंदियों को दास बनाये जाने की प्रथा पर रोक लगाई।

→ 1563 में तीर्थयात्रा कर की समाप्ति की।

→ 1564 में जजिया कर की समाप्ति की।

→ 1567 में इबादतखाना का निर्माण किया। जिसमें धार्मिक विचारों एवं वाद-विवाद सुना जाता था। आरंभ में इसमें केवल इस्लाम धर्म के लोग प्रवेश कर सकते थे किन्तु 1578 में इसे सभी धर्म के लोगों के लिए खोल.

दिया गया। इसके माध्यम से अकबर को पता चला कि सभी धर्म में सत्य एक ही है और ईश्वर की सर्वोच्चता की मान्यता है।

→ अकबर का विभिन्न धर्म के लोगों के साथ संबंध बना। जैसे →

पारसी समुदाय → मेहरजीराणा एवं दस्तूर जीराणा।

हिन्दू संत → पुरुषोत्तम एवं देवी

जैन संत → हरि विजय सूरी (जगत गुरु की उपाधि)

इसाई धर्म → मोंसेरेट एवं एक्वीवा

→ 1579 में अकबर ने मजहर नामा की घोषणा की। जिसे शेख मुबारक ने तैयार किया था। यह एक प्रमाणिक दस्तावेज था जिसमें कहा गया कि अकबर धरती पर अल्लाह की परछाई है। धार्मिक मामलों में मतभेद होने की स्थिति में बादशाह साम्राज्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए किसी एक विचार को स्वीकार कर सकता है अथवा नया विचार जारी कर सकता है। इसी संदर्भ में स्मिथ ने कहा कि अकबर पोप बनना चाहता था।

→ ✓ अकबर ने ~~सुलह की नीति~~ सुलह-ए-कुल की नीति अपनायी अर्थात् सभी के साथ शांति की नीति।

→ अबुलफजल ने अकबर की सेप्रभुता का वर्णन करते हुए कहा कि सेप्रभुता ईश्वर से निकलने वाला एक प्रकाश है। (फर-ए-इजदी / दैवीय प्रकाश)। जो शासक को प्रत्यक्ष रूप से ईश्वर से प्राप्त होता है। अतः उसे किसी मध्यस्थ की जरूरत ~~नहीं है~~ नहीं है। इस प्रकार से वह संसार को प्रकाशित करता है। इस अर्थ में अकबर अकबर साहिब-ए-जमाना है।

→ ✓ 1582 में अकबर ने दीन-ए-इलाही की घोषणा की। जिसमें जिसकी प्रमुख बातें थी-

(i) कम आयु की कन्याओं से अथवा वृद्धा स्त्रियों से विवाह न करें (बाल विवाह एवं बेमेल विवाह का निषेध)।

(ii) दश सद्गुणों जैसे- क्षमा, उदारता, मृदुभाषा, दान, आदि ग्रहण करें।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268054

(iii) एक पत्नीव्रत का पालन करें।

(iv) मृत्युभोज बंद करें और इसे अपने जीवन में दें।

(v) धर्म, धन, सम्मान और जीवन में सभी तत्वों अथवा किसी एक तत्व को समाज को अर्पित करें।

इन अवधानों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि दीन-ए-इलाही एक धर्म नहीं आचार संहिता थी। यही बातें तो अशोक के धम्म में भी दिखाई देती है। वस्तुतः दीन-ए-इलाही के मानने वालों के लिए कोई पवित्र पुस्तक, पूजागृह या पुरोहित वर्ग नहीं था। इस दृष्टि से इसे धर्म नहीं कहा जा सकता है। स्मिथ ने इसे अकबर की मूर्खता का प्रतीक बताया। इसके 22 सदस्य में से एक मात्र हिन्दु बीरबल था।

जहाँगीर की धार्मिक नीति / कार्य :-

→ जहाँगीर ने एक हिन्दु त्रीकांत को न्यायधीश के पद पर नियुक्त किया।

→ मथुरा व गोकुल में मंदिर के निर्माण की अनुमति दी।

→ ईसाईयों को गिरजाघर बनाने की अनुमति दी।

→ ✓ रक्षा बंधन त्योहार मनाया तथा शराब एवं जूएं पर रोक लगाई।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

कट्टर कार्य :-

→ पुष्कर के वराह मंदिर को तोड़ा तथा ज्वालामुखी मंदिर को नष्ट करवाया। (जहाँगीर ने)

→ सिख गुरू अर्जुन देव को फांसी दी और उनके पुत्र गुरू हरगोविंद को जेल में बंद किया।

→ अकबर की आलोचना करने के कारण शेख अहमद सरहिंदी को दण्डित किया।

→ इन कार्यों से जहाँगीर धर्मांध प्रतीत होता है किन्तु उसके ये सभी कार्य राजनीतिक हितों से संचालित थे।

शाहजहाँ की धार्मिक नीति :-

→ शाहजहाँ ने सिजदा, पाबोस की परम्परा बंद (चालू अकबर ने किया था) करदी और तीर्थ यात्रा कर पुनः लगाने का प्रयास किया। किन्तु काशी के संत कवीन्द्राचार्य के अनुरोध पर इसे आरोप नहीं किया।

शाहजहाँ

✓ हज यात्रियों के लिए विशेष सुविधाएँ दी। इसी क्रम में वह 60 हजार रु प्रतिवर्ष मक्का भेजता था।

✓ शाहजहाँ ने हिन्दुओं को मंदिरों में समय सूचक घण्टा बजाने की अनुमति दी तथा पण्डित जगन्नाथ को 'महा कवि' की उपाधि दी।

⇒ औरंगजेब की धार्मिक नीति :- ✓ → झरोखा दर्शन प्रथा को बंद करवाया।

उत्तराधिकार का संघर्ष

- औरंगजेब (जिंदापीर) → विजयी → सत्तासीन हुआ → अत: राजनीति बाध्यता / उलेमाओं को खुश करना / इस्लामी पोषक दिखा।
- दारा शिकोह → उदार था → पराजित किया → विधर्मी होने का आरोप लगाकर मृत्युदण्ड दिया।

↳ जजिया कर पुन: लगाया (1679 में)

↳ राजाराम जाट ने अकबर की कब्र को खोदकर 'कट्टा' विरोध किया।

↳ ~~हिन्दू~~ औरंगजेब की नौकरशाही में सर्वाधिक 31.5% हिन्दू थे जबकि अकबर की नौकरशाही में हिन्दू 22.5% थे।

औरंगजेब को ज़िंदापीर कहा जाता है। औरंगजेब ने सिक्कों पर कलमा लिखवाना बंद किया तथा झरोखा दर्शन, तुलादान प्रथा एवं नवरोज त्योहार पर पाबंदी लगाई तथा संगीत, नृत्य, तथा दरबारी इतिहास लेखन पर पाबंदी लगाई।

→ 1679 में पुनः जजिया आरोपित किया तथा मथुरा के केशवराम मंदिर को तोड़कर मथुरा का नाम इस्लामाबाद कर दिया।

धार्मिक कार्यों के लिए उत्तरदायी परिस्थितियां :-

1. औरंगजेब ने शाहजहां को बंदी बनाकर शासन किया उसने उत्तराधिकार संघर्ष में दाराशिकोह को पराजित कर उसे विधर्मी ठहरा कर मृत्युदण्ड दिया। अतः इस्लाम धर्म के प्रति विशेष आग्रह रखना उसकी राजनीतिक बाध्यता थी।

2. अनेक क्षेत्रीय शक्तियां जैसे मराठे, जाट अपने राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति हेतु धार्मिक नारों का प्रयोग

कर रहे थे। वस्तुत: जब शिवाजी ने राज्याभिषेक कर 'हैंदवधर्मोद्धारक' की उपाधि ली तो औरंगजेब ने भी इस्लामिक तत्वों के समर्थन आदि के लिए जजिया आरोपित किया।

3. वस्तुत: औरंगजेब पहले एक शासक था और तत्पश्चात अपने धार्मिक सहयोगियों को संतुष्ट करना चाहता था। एक शासक होने के कारण उसे अन्य वर्गों का भी सहयोग चाहिए था। इसलिए अपनी सेना में हिन्दुओं को शामिल किया। वस्तुत: मुगलकाल में सर्वाधिक हिन्दू मनसबदार औरंगजेब के काल में मौजूद थे।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि औरंगजेब की धार्मिक नीति हिंदू विरोधी दिखायी पड़ती है, किन्तु वह हिन्दू विरोधी नहीं था। वस्तुत: वह अपनी व्यक्तिगत धार्मिक आस्था और राजनीतिक नीतियों में समन्वय करने में विफल रहा। इसलिए अकबर की सुलह-ए-कुल की नीति से विचलन दिखाई पड़ता है।

मुगलों की राजपूत नीति

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

अकबर की राजपूत नीति :→

→ अकबर ने साम्राज्य की आवश्यकता के लिए राजपूतों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाया। उसकी राजपूत नीति के उत्तरदायी कारक निम्न लिखित थे—

(i) राजपूत शक्ति का केन्द्र राजस्थान में मौजूद था जिसका सामरिक महत्व था। वस्तुतः गुजरात एवं सिंध पर प्रभावी नियंत्रण के लिए राजस्थान पर नियंत्रण जरूरी था। गुजरात से मुगलों के आर्थिक व्यापारिक हित जुड़े हुए थे।

(ii) राजपूतों का चारित्रिक गुण जैसे वीरता, बलिदान, वफादारी मुगल साम्राज्य के सुदृढ़ीकरण में सहायक सिद्ध हो सकती थी। इनके माध्यम से वह साम्राज्य विस्तार कर सकता था तो साथ ही अपने धार्मिक कट्टरपंथी तत्वों पर भी नियंत्रण रख सकता था।

(iii) राजपूत स्वाभिमानी थे और सम्मान के आकांक्षी थे। अतः शाही सेवा में सम्मानित स्थान देकर उन्हें

संतुष्ट किया जा सकता था और उनकी वीरता का प्रयोग मुगल राज्य के हित में किया जा सकता था।

राजपूत नीति की विशेषताएँ :-

→ अकबर ने राजपूत घरानों से वैवाहिक संबंध बनाया।

→ मुगल सेवा में राजपूतों को महत्वपूर्ण पद दिया गया।

→ राजपूतों की धार्मिक स्वतंत्रता को बनाये रखा गया और उनका सहयोग समर्थन प्राप्त करने के लिए उदार धार्मिक नीति अपनायी।

→ विद्रोही राजपूत राज्यों का दमन किया। जैसे रणथम्भौर एवं मेवाड़ के प्रति सैन्य अभियान किया।

1576 में हल्दीघाटी के युद्ध में राणा प्रताप के विरुद्ध मानसिंह ने मुगल सेना का नेतृत्व किया और मुगल विजयी हुए। एक राजपूत के विरुद्ध दूसरे राजपूत को खड़ा करके अकबर ने राजपूतों की वफादारी का परीक्षण किया और अब वह राजपूतों के प्रति पूर्ण आत्मविश्वास हो गया। अब

उन्हें साम्राज्य के किसी भी क्षेत्र में अभियान के लिए भेजा जा सकता है। इसी क्रम में उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में भगवानदास को सैन्य अभियान का नेतृत्व सौंपा गया तो मानसिंह को 7000 का मनसबदार बनाया गया तथा बंगाल, बिहार का गवर्नर नियुक्त किया। इस तरह अकबर की राजपूत नीति सफल रही।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

औरंगजेब के समय राजपूत नीति :-

अकबर की राजपूत नीति से विचलन औरंगजेब के काल में दिखाई देता है और इसका कारण तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ थी। वस्तुतः शिवाजी का मुगल कैद खाने से भागना राजपूतों की वफादारी पर संशय पैदा कर रहा था तो दूसरी तरफ जसवंत सिंह की मृत्यु के पश्चात मारवाड़ के उत्तराधिकार के प्रश्न पर राजपूत-मुगल संघर्ष शुरू हो गया। दुर्गादास राठौर के नेतृत्व में राजपूतों ने विद्रोह कर दिया। इसी समय

अजमेर का सूबेदार औरंगजेब का पुत्र अकबर राजनीतिक महत्वाकांक्षा के कारण स्व विद्रोहियों से मिल गया। फलतः मुगल राजपूत संबंधों में औरंगजेब के काल में संघर्ष बढ़ा। इस दृष्टि से औरंगजेब की राजपूत नीति असफल रही।

⇒ राजपूत नीति का सांस्कृतिक महत्व :-

हिन्दू- मुस्लिम समन्वित संस्कृति का विकास हुआ। कला के विविध क्षेत्रों में इस मिश्रित संस्कृति के तत्व दिखाई पड़ते हैं। राजपूतों के प्रभाव से मुगल कला में प्रकृति के दृश्य शामिल किये गये तो दूसरी तरफ मुगलों के प्रभाव से राजपूत कला में दरबारी कार्यवाही का चित्रण होने लगा। इसी तरह फारसी में ग्रंथों का अनुवाद हुआ। फलतः फारसी भाषा और साहित्य के विकास को प्रोत्साहन मिला। राजपूत महलों में भी मेहराब और गुम्बद के माध्यम से निर्माण कार्य होने लगा।

मुगलों की दक्कन नीति :-

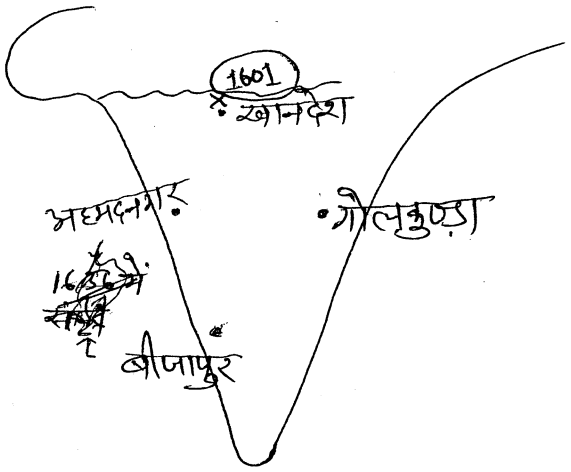

~~विलय की सूची~~
~~खानदेश~~

विलय की सूची

1. खानदेश → 1601 → अकबर
2. अहमदनगर → 1633 → शाहजहाँ
3. बीजापुर → 1686 } → औरंगजेब
4. गोलकुण्डा → 1687

↳ बीजापुर तथा गोलकुंडा के साथ 1636 में शाहजहाँ ने संधि की। जिसे 1656 में समाप्त कर दिया।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159.

1572 में गुजरात विजय के पश्चात् अकबर ने दक्कन के राज्यों पर नियंत्रण की नीति बनाई। जिसके ~~निम्न~~ निम्नलिखित कारण थे।

(i) गुजरात से भगाये हुए विद्रोही दक्कन के राज्यों में शरण लेते थे।

(iii) अकबर गुजरात के बंदरगाहों और वहाँ जाने वाले व्यापारी मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करना चाहता था।

(iv) अकबर सूरत प्रदेश पर प्रभावी नियंत्रण चाहता था जिसका निर्माण मालवा, गुजरात और खानदेश के क्षेत्रों को मिलाकर होता था।

(iv) दक्कनी राज्यों का आपसी संघर्ष भी अकबर को इस क्षेत्र की विजय के लिए प्रेरित कर रहा था।

प्रक्रिया :-

1591 में अकबर ने दक्कन के चारों राज्यों में दूत भेजे। जहाँ केवल खानदेश ने मुगल सर्वोच्चता स्वीकार की, जबकि अहमदनगर ने तो दूत का अपमान किया। 1595 में अहमदनगर के उत्तराधिकार के मामले में मुगलों ने हस्तक्षेप किया और फिर कपास उत्पादक क्षेत्र बरार प्राप्त किया। अंतत: 1601 ई० में अकबर ने खानदेश को मुगल राज्य में मिला लिया।

जहाँगीर के काल में दक्कन नीति :-

इसके समय दक्कन में अकबर कालीन विस्तार कायम रहा। वस्तुत: जहाँगीर के समय अहमदनगर के मलिक अम्बर ने मुगलों का विरोध किया। अत: खुर्रम के नेतृत्व में मुगल सेना ने अभियान किया और विरोध समाप्त किया।

शाहजहाँ कालीन दक्कन नीति :-

→ राजकुमार के रूप में शाहजहाँ को दक्कन के अभियान का मौका मिला था। इस क्षेत्र की उसे पूरी जानकारी थी। अत: 1633 ई० में अहमदनगर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।

→ अहमदनगर पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने के लिए शाहजहाँ ने 1636 में बीजापुर, गोलकुंडा से संधि की। इस संधि के तहत बीजापुर को अहमदनगर का 1/3 क्षेत्र दिया गया तथा बीजापुर और गोलकुंडा के बीच होने वाले किसी विवाद में मुगलों को निर्णायक स्थिति प्राप्त हुई। इस संधि पर

शाहजहाँ ने अपनी हथेली की छाप लगाकर इसे प्रमाणिक रूप दिया। किन्तु 1656 में अपने ही जीवन काल में शाहजहाँ ने इस संधि को तोड़ दिया।

संधि तोड़ने का कारण :-

→ शाहजहाँ के समय प्रथम एथियोपिया के अभियान के समय मुगलों ने बड़ी धनराशि खर्च की। अतः इसे पूरा करने के लिए बीजापुर से उसने V_3 क्षेत्र वापस लेने की बात कही।

→ मराठा नेता शाहजी भोंसले का बीजापुर में तथा मीरजुमला का गोलकुंडा में प्रभाव बढ़ रहा था। इन्हें नियंत्रित करने के लिए संधि तोड़नी पड़ी।

⇒ औरंगजेब काल की ~~दक्कन~~ नीति :-

→ औरंगजेब दक्षिण में दो बार मुगल सूबेदार रहा और इस क्रम में उसने दक्कन में भू राजस्व सुधार

किया और इस संघर्ष में उसे मुर्शिद कुली खां का सहयोग मिला था।

→ औरंगजेब को दक्कन की समस्या विरासत में मिली। फलतः वह बीजापुर और गोलकुंडा राज्य का विश्वास हासिल नहीं कर पाया। इसी क्रम में उसने 1686 में बीजापुर को मिलाया, जिसका अंतिम स्वतंत्र शासक सिकंदर आदिल शाह था तो 1687 में गोलकुंडा को मिलाया, जिसका अंतिम शासक अब्दुल्ला कुतुबशाह था।

मुगल प्रशासन

मनसब → पद

मनसबदारी व्यवस्था

↳ मनसबदारी व्यवस्था का जनक → अकबर

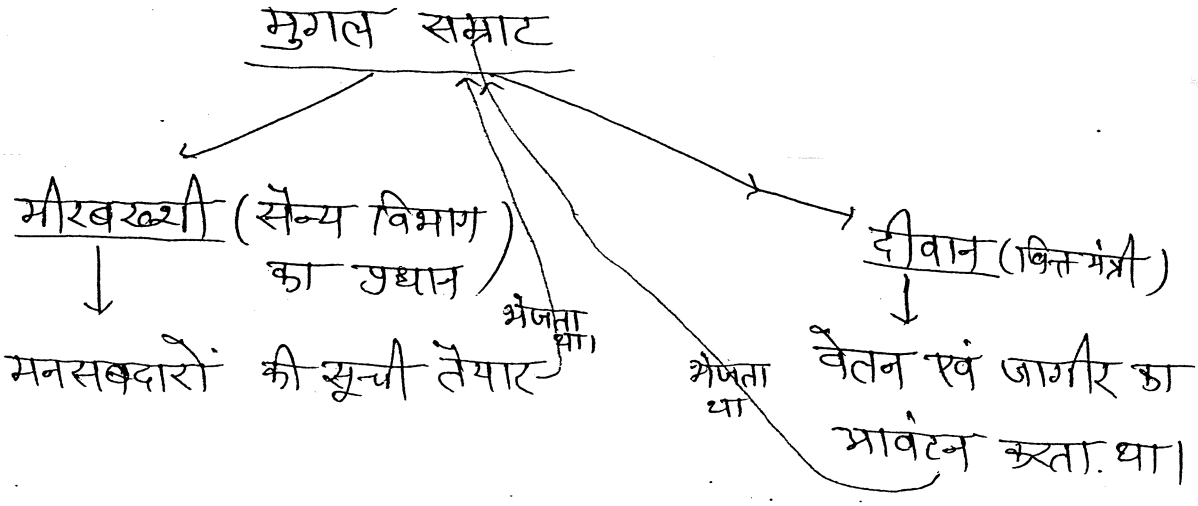

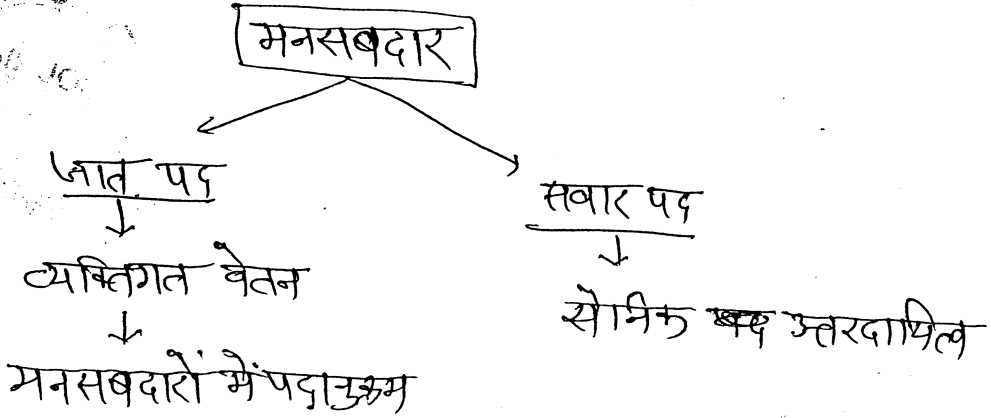

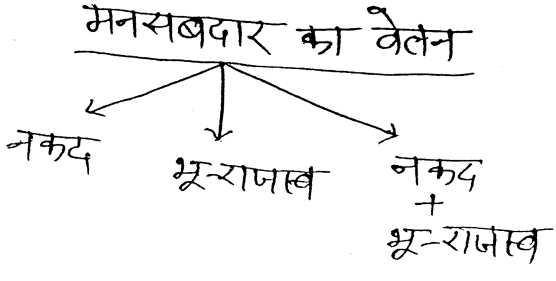

⇒ सवार पद जात पद से कभी भी ज्यादा नहीं हो सकता था

श्रेणियां :-

I → जात एवं सवार पद बराबर हो। (5000/5000)

II → जात पद से सवार पद आधे से ज्यादा हो। (5000/3000)

III → जात पद से सवार पद आधे से कम हो। (5000/2000)

मनसबदार का वेतन

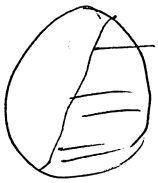

- जागीर के रूप में → 'मनसबदार जागीरदार' कहलाता है।
- नकद → मनसबदार कहलाता है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9268098159

विशेषता :-

मनसब व्यवस्था मुगलों की आर्थिक-प्रशासनिक व्यवस्था थी। इसे अकबर ने आरंभ किया था। इसकी प्रेरणा अकबर को मंगोलों की पद्धति से प्राप्त हुई थी। मनसब व्यवस्था का उद्देश्य मुगल कुलीन वर्ग को

प्रशासन में शामिल कर राज्य का अंग बनाना, नौकरशाही व्यवस्था में दक्षता लाना और मुगल साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण करना था।

→ मनसबदारी व्यवस्था वंशानुगत नहीं थी। मनसबदारों का पद जात एवं सवार के आधार विभाजित होता था। जात पद से वेतन एवं पदानुक्रम का पता चलता था जबकि सवार ~~पद से~~ सैनिक दायित्व को सूचित करता था।

→ मनसबदारों का वेतन नगद, जागीर अथवा दोनों रूप में दिया जा सकता था। इस तरह जागीर में वेतन पाने वाले मनसबदार जागीरदार भी कहलाते थे। इस तरह प्रत्येक जागीरदार मनसबदार होता था।

→ जहाँगीर के समय मनसबदारी व्यवस्था में 'दो अस्पा सि अस्पा' पद्धति लागू हुई। जिसके तहत सवारों की संख्या में वृद्धि करके उसे जात की संख्या से बढ़ाया जा सकता था।

→ शाहजहाँ के समय मनसबदारों को 'मधनावेतन पद्धति' से युक्त किया गया।

→ मनसबदारों को सैनिक एवं असैनिक पदों पर नियुक्त किया गया।

→ जहाँगीर के काल में मनसबदारी व्यवस्था में अफगानों को शामिल किया गया।

→ जागीरदारों को अपने ही राज्य के अंदर दी गई जागीर 'वतन जागीर' कहलाती थी जो राजपूतों को दी जाती थी।

→ इसी तरह जहाँगीर ने मुस्लिम जागीरदारों को उनके अपने क्षेत्र में जागीर प्रदान किया जिसे 'अलतमगा' जागीर कहा गया।

→ मनसबदारों की नियुक्ति में 'खानजादों' को प्राथमिकता दी जाती थी। अर्थात् पहले से ही मुगल सेवा के मनसबदारों के पुत्रों को प्राथमिकता दी जाती थी।

→ मनसबदारी व्यवस्था में सर्वाधिक हिन्दु मनसबदार औरंगजेब के समय थे।

→ मनसबदारों की सर्वाधिक संख्या औरंगजेब के काल में थी।

→ मनसबदारों की कुल संख्या में सर्वाधिक वृद्धि शाहजहाँ के काल में हुई।

अकबर	जहाँगीर	शाहजहाँ	औरंगजेब
250	300	600	700
	+50	+300	+100

मुगल भू-राजस्व व्यवस्था

हम भू-राजस्व क्यों लेते हैं इसकी बात सिर्फ अकबर ने बताई।

भूमि का वर्गीकरण

1. पोलज :- प्रत्येक वर्ष खेती की जाने वाली भूमि।
2. परत → एक वर्ष तक खेती न की जाती हो।
3. चाचर → 2-3 वर्ष " " "
4. बंजर → 5 वर्ष से अधिक " " "

भू-राजस्व कर क्यों है :- सोयुरगल

→ मुगल काल में आय का प्रधान स्रोत भू-राजस्व था जो उत्पादन में हिस्सा होता था। इसके लिए फारसी शब्द 'मालवाजिब' का प्रयोग किया गया है। अबुल फजल ने स्पष्ट किया ~~किया~~ कि यह संरक्षण एवं न्याय के बदले लिया जाने वाला संप्रभुता शुल्क है।

D. K. PHOTOSTAT
COURIER FACILITY
(M) 9868098159.

→ अकबर के काल में टोडरमल ने शेरशाह कालीन जब्ती पद्धति को सुधरे रूप में लागू किया।

→ अकबर ने 1580 में आइन-ए-दहसाला पद्धति लागू की गई। जिसके तहत संबंधित क्षेत्र के 10 वर्षों के उत्पादन का औसत निकालकर भू-राजस्व का निर्धारण किया गया।

→ इस क्रम में अकबर ने ~~पांच~~ चार भागों में भूमि का वर्गीकरण किया। पोलज, परती, चाचर और बंजर। भूमि की माप हेतु लोहे की

'जंजीर' (तनाब) का प्रयोग किया और माप के लिए 'इलाही गज' का प्रयोग किया।

⇒ भू-राजस्व निर्धारण की अन्य पद्धति :-

1. गल्लाबख्शी (बटाई)
   - खेत बंटाई → खेत में खड़ी फसल का बंटवारा।
   - लंक बंटाई → फसल काटने के पश्चात् बंटवारा।
   - रास बंटाई → अनाज से भूसे को अलग कर अनाज का बंटवारा।

2. कनकूत पद्धति :- अनुमान के आधार पर।

मुगल राज्य में सर्वाधिक क्षेत्रों में 'जब्ती' पद्धति लागू थी।
(सबसे पहले शेरशाह सूरी ने इसे प्रारंभ किया)

मुगल कालीन मुद्रा अर्थव्यवस्था

→ चांदी का रूपया मुगल कालीन अर्थव्यवस्था का आधार था।

→ अकबर ने अपने ~~से~~ सिक्कों पर राम-सीता का अंकन करवाया। अकबर का सबसे बड़ा सोने का सिक्का 'शंसब' (मुहर) कहलाता था। अकबर ने चांदी का वर्गाकार सिक्का 'जलाली' और वृत्ताकार सिक्का 'इलाही' चलाया।

→ ✓ जहाँगीर ने अपने सिक्कों पर टकसाल का नाम लिखवाया और अपनी छवि अंकित करवायी। ~~जब~~ जहाँगीर ने चांदी का 'निसार' नामक सिक्का चलाया तो साथ शाहजहाँ ने 'आना' नामक सिक्का चलाया।

→ ✓ मुगल काल में टकसाल की सर्वाधिक संख्या औरंगजेब के काल में थी।

→ मुगल काल में बोहरा व्यापारी अत्यंत महत्वपूर्ण थे। इसमें हिन्दू, मुस्लिम एवं जैन धर्म के लोग शामिल थे। * शाहजहाँ के काल में मौजूद अब्दुल गफ्फुर बोहरा का व्यापार ईस्ट इंडिया कंपनी के बराबर था।

→ मुगल काल में बीमा प्रणाली, बैंकिंग व्यवस्था मौजूद थी और सर्राफ बैंकर का कार्य करता था और व्यापार के लिए 'हुंडी' भी जारी करता था।

→ मुगलकाल में निर्माण के लिए शिल्पकारों को अग्रिम धनराशि दी जाती थी। जिसे 'दादनी प्रथा' कहते थे।

मुगलकाल में विज्ञान एवं तकनीक

→ मुगल बादशाहों ने ज्योतिष, चिकित्सा, अस्त्र-शस्त्र, जहाजनिर्माण के क्षेत्र में वैज्ञानिक तकनीकी विकास को प्रकाशित प्रदर्शित किया। ज्योतिष शास्त्र का

प्रयोग और मौसम की दशा को जानने के लिए किया जाता था।

→ अकबर ने विज्ञान के क्षेत्र में गहरी रुचि ली। इसी क्रम में उसने बीजापुर से मीर फतेहउल्ला सिराजी नामक एक वैज्ञानिक चिंतनशील व्यक्ति को बुलाया, जिसने कलेन्डर का निर्माण किया।

→ अकबर ने स्वयं एक ऐसी यांत्रिकी का विकास किया, जिसके माध्यम से एक साथ 16 बंदूकों की नाल साफ की जा सकती थी। इसी तरह एक ही साथ कई बंदूकों से गोली चलाने की प्रणाली विकसित की।

→ अकबर ने अपने समय में यूरोपियों द्वारा लाई गई 'चेन पम्प तकनीक' को अपनाया। जिससे जहाज से पानी निकाला जाता था तो साथ ही वस्त्र निर्माण की इटली की 'रेशम सूत्रण पद्धति' को अपनाया।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY 9268098159

→ मुगलकाल में सिंचाई कार्य के लिए गहरे कुएं से जल निकालने के लिए 'लीवर प्रणाली' का विकास हुआ, तो साथ ही नई फसलों की खेती जैसे मक्का, तम्बाकु, टमाटर आरंभ हुई।

→ जहाज निर्माण में लोहे की कील से विभिन्न भागों को जोड़ने की पद्धति प्रारंभ हुई। किन्तु मुगल यूरोपीय जहाज की तरह विशालकाय जहाज नहीं बना पाये। वस्तुत: यहाँ लोहा गलाने वाली बड़ी भट्टियों का विकास नहीं हुआ था।

→ मुगलकाल में उन्नत प्रौद्योगिकी का विकास न होने का एक कारण तो यह था कि शाही कारखाने इस तरह संचालित थे जहाँ श्रम की बहुलता थी। अत: उपकरण सुधार में शासकों की रुचि नहीं रही, दूसरी तरफ जाति व्यवस्था सस्ता श्रम उपलब्ध कराने में सक्षम रही। अत:

श्रम एवं सेवा बचाने वाली तकनीक और यंत्रों की जरूरत ही नहीं समझी गई। इतना ही नहीं मुगलकाल में शिक्षा मुख्यतः धर्म से जुड़ी हुई थी। अतः वैज्ञानिक पहलू भी धार्मिक मान्यताओं और अंधविश्वास से मिश्रित हो जाते थे। यही वजह है कि विज्ञान तकनीकी के क्षेत्र में मुगल विकास नहीं कर सके।

D.K. PHOTOSTAT COURIER FACILITY (M) 9268098159

शिवाजी (1627-80)

→ शिवाजी के केन्द्रीय प्रशासन में अष्टप्रधान मौजूद थे। जिसमें पेशवा- प्रधानमंत्री और सुमंत यादवीर विदेश मंत्री था। अष्टप्रधान की नियुक्ति शिवाजी करते थे। इसे किसी भी आधार पर मंत्रिमंडल नहीं माना जा सकता। क्योंकि इसमें सामूहिक उत्तरदायित्व की अवधारणा नहीं थी।

→ शिवाजी ने भूमि माप कर भू-राजस्व का निर्धारण किया। वे अहमदनगर के मलिक अम्बर की पद्धति से प्रेरित थे। माप के लिए 'काठी' का प्रयोग किया। आरंभ में 33% की दर से भू-राजस्व वसूला जिसे बढ़ाकर 40% कर दिया गया।

शिवाजी ने

→ छत्रपति का न्यायालय सर्वोच्च था जिसे 'हाजिर मजलिस' कहा जाता था।

→ छत्रपति द्वारा नियुक्त राज्य की वेतनभोगी सेना को 'बरगी' सेना कहते थे जबकि विभिन्न मराठा सरदारों द्वारा निर्मित सेना को 'सिलहदार' कहा जाता था। शाही घुड़सवार सेना को 'पागा' कहते थे और सेना का प्रधान 'सरेनोबत' कहलाता था। जो सेना का मुख्यालय कोलाबा में था जिसका प्रमुख दौलत खां था।

बंगाल का पाल वंश

→ स्थापना 750 ई. (लगभग) में बंगाल में हुई
→ गोपाल पहला शासक था जिसे जनता द्वारा चुना गया।
→ धर्मपाल बौद्ध धर्मानुयायी था। जिसने उत्तरापथ स्वामिन् की उपाधि धारण की।

गुर्जर- प्रतिहार वंश

→ संस्थापक → हरिश्चन्द्र

अमोघवर्ष → जैन मतानुयायी

राष्ट्रकूट राजवंश

संस्थापक - दंतिदुर्ग
कृष्ण प्रथम → एलोरा का कैलाश नाथ मंदिर

आदिपुराण, हरिवंश → जिनसेन
गणितसार संग्रहण → महावीराचार्य
कविराज मार्ग → अमोघवर्ष